शम्स

और तुम देखोगे लोगों को दीने अल्लाह में
फौज दर फौज दाख़िल होते हुए (सूरह अल्नस्र)

क़मर

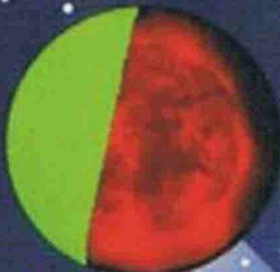

चांद और सूरज में इंसानी शबीह का राज़!
जोकि नासा (NASA) और कई मोअ्तबर
इदारों से रिलीज़ शुदा है।

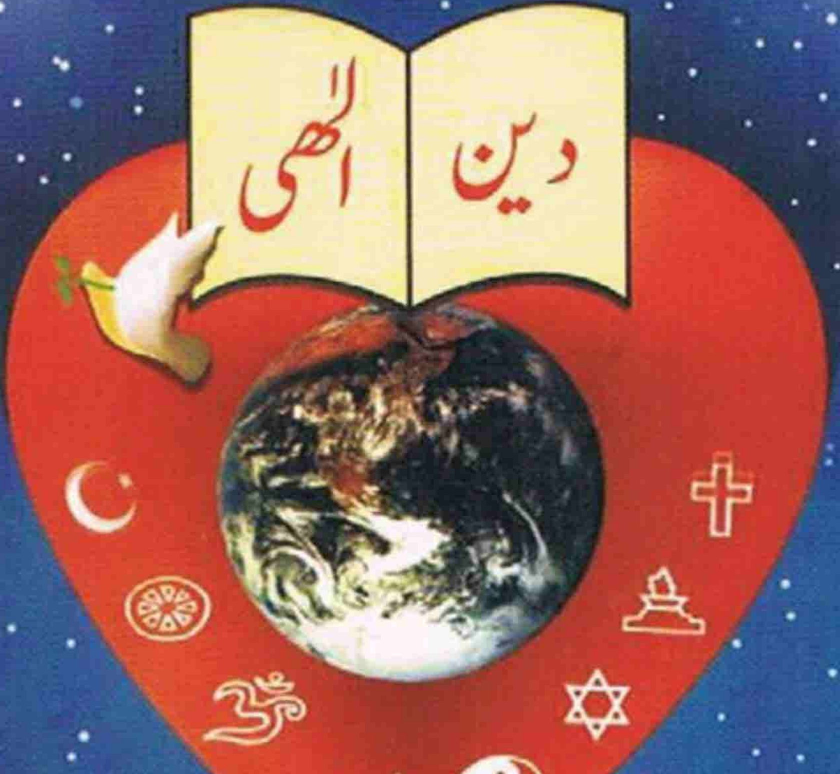

दीने इलाही

"यह किताब हर मज़हब, हर फिर्के और हर आदमी के लिये काबिले ग़ौर और काबिले तहकीक है और मुंकिराने रूहानियत के लिये एक चैलेंज है।"

मुसन्निफ़

रियाज़ अहमद गौहर शाही

हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही

मुसन्निफ़ दीने इलाही

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ٥

व र ऐतन्ना स यदखुलू न फ़ीदीनिल्लाहि अफ़वाजा - (सूरह अलनस्र)

तर्जुमा : और तुम देखोगे लोगों को दीने इलाही में फौज दर फौज दाख़िल होते हुए - (सूरह अलनस्र)

दीने इलाही

ख़ुदा के पोशीदह राज़

तस्नीफ़ हाज़ा के जुमला हक़ूक़ महफ़ूज़ हैं

यह किताब अल्लाह के मुतलाशियों और अल्लाह से मुहब्बत करने वालों के लिये एक तोहफ़ा है।

इत्तलाअ़ बराए ज़ाकिरीन :

यह किताब हक परस्तों, मुन्सिफ़ मिज़ाज लोगों और अल्लाह के तालिबों तक पहुंचानी है।

अज़ली मुनाफ़िक इसको तल्फ़ करने की कोशिश करेंगे

—: मुरत्तब करदह :—

मुहम्मद यूनुस अल्गौहर (लंदन) ----- अमजद अली गौहर (अबूधाबी)

नाशिरान

मेहदी फ़ाउंडेशन इंटरनेशनल, अमरीकन सूफ़ी इंस्टीट्यूट के आर्गेनाइज़र
जनाब हाजी मु. अशफ़ाक़ और जनाब मज़हर फिरोज़ ने मेहदी फ़ाउंडेशन बर्तानिया के
फैसल हयात के तआ़उन से छपवाई है।

मेहदी फ़ाउंडेशन इंटरनेशनल

Contacts: amjadgohar75@yahoo.com, younus380@yahoo.com

मुअद्दिबाना गुज़ारिश

सरकार गौहर शाही मरहबा।
मुअ़ज़्ज़िज़ क़ारईन कराम, ज़ाकिरीन व गौहरियंस।
इस किताब मुक़द्दस दीन इलाही को हिंदी रसमुल्ख़त में लिखने की ज़रूरत पूरी की गई ताकि उर्दू न पढ़ सकने वाले भी इससे मुस्तफ़ीज़ हों। कोशिश की गई है कि क़तअ़न कोई ग़लती या टाइपिंग मिस्टेक न होने पाये ताकि असल मतन की तिलावत से फ़ैज़याब हों। इसके बावजूद अगर आपको ज़रा भी शक गुज़रे तो बराहे करम हमें फ़ौरन मुत्तिलअ़ फ़रमायें, हम आपके बेहद मशकूरो मम्नून होंगे और हमारे पास मौजूद असल से इसकी दुरूस्तगी फ़ौरन कर दी जायेगी।

बसद शुक्रिया
गौहरशाही मरहबा।

आल इंडिया हेल्पलाइन
मुंबई :
9004715519, 9619070470, 9323692855, 8860569704
ईमेलः kafindia@yahoo.com

यह वह गौहर शाही हैं जिन्होंने तीन साल तक सिहवन शरीफ़ की पहाड़ियों और लाल बाग़ में अल्लाह के इश्क़ की ख़ातिर चिल्लाकशी करी। अल्लाह को पाने की ख़ातिर दुनिया छोड़ी, फिर अल्लाह के हुक्म ही से दोबारह दुनिया में आये। लाखों दिलों में अल्लाह का ज़िक्र बसाया और लोगों को अल्लाह की मुहब्बत की तरफ राग़िब किया।

हर मज़हब वालों ने गौहर शाही को मस्जिदों, मंदिरों, गुरूद्वारों और गिर्जाघरों में रूहानी ख़िताब के लिए मदऊ किया और ज़िक्रे क़ल्ब हासिल किया। बेशुमार मर्दोज़न इनकी तालीम से गुनाहों से ताएब हुए और अल्लाह की तरफ झुक गये। बेशुमार लाइलाज मरीज़ इनके रूहानी इलाज से शिफायाब हुए फिर अल्लाह ने इनका चेहरा चाँद पर दिखाया, फिर हज्र अस्वद में भी इनकी तस्वीर ज़ाहिर हुई, पूरी दुनिया में इनकी शोहरत हो गई। लेकिन कोर चश्म मौल्वियों को और वलियों से हसद व बुग्ज़ रखने वाले मुसलमानों को यह शख़्स पसन्द न आया, इनकी किताबों की तहरीरों में ख़यानत करके इनपर कुफ़्र और वाजिबुल क़त्ल के फ़तवे लगाये। मानचेस्टर में इनकी रिहाइशगाह पर पेट्रोल बम फेंका, कोटरी में दौराने ख़िताब इन पर हैण्ड ग्रेनेड बम से हमला किया गया। लाखों रूपये इनके सर की क़ीमत रखी गई। पाँच क़िस्म के संगीन झूटे मुक़दमात, अन्दरूने मुल्क इनको फँसाने के लिये क़ायम किये गये। नवाज़ शरीफ़ की वजह से हुकूमते सिंध भी शामिल हो गई थी, दो केस क़त्ल, नाजायेज़ अस्लेहा, नाजायेज़ क़ब्ज़ा का दफ़ा भी लगाया गया। अमरीका में भी एक औ़रत से ज़्यादती और हब्से बेजा का मुक़दमा बनाया गया। ज़र्द सहाफ़त ने इन्हें ज़माने में ख़ूब बदनाम किया, लेकिन आख़िर में अदालतों ने शुनवाई और तहक़ीक़ात के बाद तमाम मुक़दमात झूटे क़रार देकर ख़ारिज कर दिये और अल्लाह ने अपने इस दोस्त को हर मुसीबत से बचाये रखा।

इन मुक़दमात के बारे में हाई कोर्ट की रिपोर्ट मुलाहिज़ा हो कि
''गौहर शाही को फ़िरक़ा वारियत की वजह से बार बार फँसाया जाता है।''

ORDER SHEET

IN THE HIGH COURT OF SINDH HYDERABAD CIRCUIT

Cr.B.A.No.159 of 1999. { APPELLANT / PETITIONER / PLAINTIFF DECREE / APPLICANT

VERSUS

{ RESPONDENT / DEFENDENT / OPPONENT / JUDGEMENT DEBTOR

Serial No.	Date	Order with signature of Judge

1. FOR ORDERS ON MA NO.238/99.(If granted).
2. FOR ORDERS ON MA NO.239/99.
3. FOR ORDERS ON MA NO.240/99.
4. FOR HEARING.

18.03.1999.

Mr.Qurban Ali Choohan Advocate for the applicant
Mr.Behadur Ali Baloch A.A.G.

1. Granted.

2. Granted subject to all just exceptions.

3. Granted as the bail application No.88/99 has also been moved by the present applicant.

4. Learned counsel submits that the present bail application has been moved seeking bail before arrest of the applicant/accused with regard to his alleged involvement in crime No.18/99 for which an F.I.R. was lodged on 16.03.1999 by Police Station City at Hyderabad. It is alleged that the applicant on the day of incident viz. 19.02.1999 in the day

22/18/88

SGP., Kar.—L (iii) 22—1500—7-97 -OFFSET

time produced a T.T. Pistol bearing No.SBP-13410 of 30 bore and licence bearing No.5105339 dated 04.02.1999 issued by District Magistrate Sanghar in the name of accused Mohammad Nadeem who has been nominated in crime No.10/99 pending with Police Station City Hyderabad. Thereafter upon verification by the police authorities it transpired that the said licence was a forged one and was not issued in the name of accused Mohammad/Nadeem. The F.I.R. was accordingly registered against the applicant U/s.420, 468, 471 PPC read with Section 13-D Arms Ordinance.

Learned counsel submits that the lodging of the FIR is a further attempt by the political and religious foes of the applicant to have him implicated in xxx false and concocted case, as earlier attempts have failed and in two other cases the applicant was granted bail before arrest by this Court. Learned counsel submits that for all the offences above mentioned the maximum sentence is seven years along with fine and consequently do not come within the prohibitory clause of Section 497 Cr.P.C. The learned counsel vehemently argued that unless this bail application is granted and the applicant is given protection by this Court he would be immediately arrested by the police as he has been prevented from approaching the trial Court for seeking bail..

I have gone through the F.I.R. as well as the

memo of this application. In the first instance, it appears that nowhere in the FIR it is mentioned as to why the applicant/accused visited the Police Station City on 19.02.1999 along with the weapon in question and its licence. Secondly, no reasons have been given in the FIR as to why the same was lodged after almost one month of the day of incident. In the earlier bail application No.88/99 I have granted interim protective bail to the applicant on the basis that the FIR in the said case appeared to have been lodged due to enmity and jealousy between the applicant and religious sects as well as political parties. The lodging of the FIR in the present case also appears to have been motivated by the same factors.

In the circumstances, the applicant is granted pre-arrest bail in a sum of Rs.1,00,000/- in the form of security or cash and P.R. bond in the like amount to the satisfaction of Additional Registrar of this Court. Notice to A.A.G. for 24.03.1999.

5. Today I have received a pamphlet allegedly from ~~my~~ the applicant seeking justice from the Prime Minister of Pakistan regarding his persecution at the hands of various ~~xxxx~~ religious sects and Ulemas. Alth-ough the pamphlet has not been signed by the applicant, copies have been forwarded to all High Courts of Pakistan as well as Supreme

(5)

Court of Pakistan and others. At the end of the pamphlet s threat has been extended to the Government that unless the applicant/accused' request is acceded to the Government will soon crumble by hidden spiritual forces. In my view if at all this pamphlet has been either issued by the applicant or his supporters and sent to this Court, it amounts to unlawfu interference in the administration of justice and may be taken up as a contempt matter. In these circumstances, let a notice be issued to the applicant inviting his comments o the pamphlet, a copy whereof to be sent along with the noti

SD/- SARMAD J USMANI
JUDGE

CERTIFIED TO BE TRUE COPY
22/3/99
SUPERINTENDENT

Cr.Bail Application No. 159/1999. No 2009 Dt. 22/3/99

Copy Forwarded to the Sessions Judge Hyderabad for information and Compliance, He is informed that surety has been furnished on behalf of the abovenamed applicant before the Additional Registrar of this Court in the Sum of Rs, 100,000/- Vide Bond No. 5823 and P.R.Bond No. 5824 dated:- 22.3.1999.

COPY TO THE APPLICANT ABOVENAMED.

(GHULAM MUSTAFA CHANNA)
DEPUTY REGISTRAR
HIGH COURT OF SINDH CIRCUIT COURT
HYDERABAD

खुसूसी नोट

इन मुक़दमात की नाकामी के बाद इब्लीसियों ने 295 का एक और मन्तक़ी मुक़दमा बनाया कि गौहर शाही ने नबूवत का ऐलान कर दिया है। इसमें उन्हें हुकूमत के अअ़ला क़िस्म के तबक़ह की हिमायत हासिल हो गयी थी, हत्ताकि साबिक़ह सदर रफ़ीक़ तारड़ फ़िरक़ा की वजह से पार्टी बन गये थे। जिसकी वजह से इन्सदादे दहशत गर्दी के जज पर दबाव की वजह से सज़ा सुनाई गई। इन्शा अल्लाह हाईकोर्ट में या सुप्रिम कोर्ट में इस झूटे केस का भी फ़ैसला हो जायेगा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पेश लफ़्ज़

चाँद, सूरज, हज्र अस्वद, शिव मंदिर और कई दूसरे मुक़ामात पर भी तस्वीरे गौहर शाही नुमायाँ होने के बाद अक्सर मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम का ख़्याल और यक़ीन है कि यही शख़्स मेहदी, कालकी अवतार और मसीहा है जिसका मुख़्तलिफ़ मज़हबी किताबों में ज़िक्र आया है।

आइये! आप भी इनको परखने की कोशिश करें और हमसे तहक़ीक़ के लिये राबता करें और इनकी कुतुब के ज़रिये भी इनको पहचानने की कोशिश करें।

मु० यूनुस अल्गोहर (लंदन इंग्लैंड)
younus38@hotmail.com
younus380@yahoo.co.uk

दीबाचह

...अज़ रियाज़ अहमद गौहर शाही...

1)- जो मज़ाहिब आसमानी किताबों के ज़रिअ़ह क़ायेम हुए वोह दुरूस्त हैं बशर्ते कि इनमें रद्दोबदल न की गई हो।

2)- मज़ाहिब कश्ती और उलमा मल्लाह की तरह होते हैं, अगर किसी एक में भी नुक़्स हो तो मंज़िल पर पहुंचना मुश्किल है। अल्बत्तह अवलिया टूटी-फूटी कश्ती को भी किनारे लगा देते हैं, यही वजह है कि टूटे-फूटे लोग अवलिया के गिर्द जमा हो जाते हैं।

3)- मज़हब से बालातर अल्लाह की मुहब्बत है, जो तमाम मज़ाहिब का अ़र्क़ है। जबकि अल्लाह का नूर मशअ़ले राह है!

4)- तीन हिस्से इल्मे ज़ाहिर के और एक हिस्सा इल्मे बातिन का है जो ख़िज़र अलै० (विष्णु महाराज) के ज़रिअ़ह आ़म हुआ।
अल्लाह की मुहब्बत ही अल्लाह के कुर्ब का ज़रिअ़ह है, जिस दिल में ख़ुदा नहीं कुत्ते उससे बेहतर हैं, क्यों कि वह अपने मालिक से मुहब्बत करते हैं और मुहब्बत ही की वजह से मालिक का कुर्ब हासिल कर लेते हैं वरना कहाँ एक नजिस कुत्ता और कहाँ हज़रते इंसान!

5)- अगर तुझे जन्नत और हूरोक़सूर की आरज़ू है तो ख़ूब इबादत कर ताकि ऊँची से ऊँची जन्नत मिल सके!

6)- अगर तुझे अल्लाह की तलाश है तो रूहानियत भी सीख ताकि तू सिरात मुस्तक़ीम पर गामज़न होकर अल्लाह के विसाल तक पहुंच सके!

इंसान अज़ल से अबद तक

जब अल्लाह ने रूहों को बनाना चाहा तो कहा : कुन, तो बेशुमार रूहें बन गईं। अल्लाह के सामने और क़रीब अरवाह नबियों की, फिर दूसरी सफ़ में वलियों की, फिर तीसरी सफ़ में मोमिनीन की, फिर इनके पीछे आ़म इंसानों की, फिर हद्दे निगाह से दूर सफ़ में औ़रतों की रूहें बन गईं, फिर इनके पीछे रूहे हैवानी, फिर रूह नबाती और फिर ऐसी रूहे जमादी जिनमें हिलने जुलने की ताक़त भी न थी, नमूदार हो गईं। अल्लाह के दायीं तरफ़ फ़रिश्तों की और फिर इसके बाद हूरों की अरवाह थीं, जो रब के चेहरे को न देख सकीं, यही वजह है कि फ़रिश्ते रब का दीदार नहीं कर सके। फिर पीछे नूरी मुवक्किलात की रूहें जो दुनिया में आकर नबियों, वलियों की इमदादी हुईं। फिर बायीं जानिब जिन्नात की रूहें, फिर पीछे सिफ़ली मुवक्किलात, फिर ख़बीसों की रूहें जो दुनिया में आकर इब्लीस की इमदादी हुईं। दायें, बायें और हद्दे निगाह से दूर वाली अरवाह रब का जलवा न देख सकीं। यही वजह है कि जिन्न, फ़रिश्ते और औ़रतें रब से हमकलाम हो सकते हैं लेकिन दीदार नहीं कर सकते। कुर्रए अर्ज़ में एक आग का गोला था, हुक्म हुआ : ठंडा हो जा! फिर इसके टुकड़े फ़िज़ा में बिखर गये। चांद, मरीख़, मुश्तरी, यह दुनिया और सितारे सब इसी के टुकड़े हैं जबकि सूरज वही बाक़ी मान्दह गोला है। यह ज़मीन राख ही राख बनी। जमादी रूहों को नीचे भेजा गया जिनके ज़रिए राख जम कर पत्थर हो गई। फिर नबाती रूहों को भेजा गया जिसकी वजह से पत्थरों में दरख़्त भी उग आये। फिर हैवानी रूहों के ज़रिए हैवान नमूदार हुए। अल्लाह ने सब रूहों से यह भी पूछा था : क्या मैं तुम्हारा रब हूँ? सबने इक़रार किया और सिजदा किया था यअ़नी पत्थरों और दरख़्तों की रूहों ने भी सिजदा किया था। [वन्नज्मो वश्शज्रो यसजुदान .... (सूरह रहमान- अल्कुरान)]। फिर अल्लाह ने रूहों के इम्तिहान के लिये मसनूई दुनिया, मसनूई लज़्ज़ात बनाये और कहा : 'अगर कोई इनका तालिब है तो हासिल कर ले'। बेशुमार रूहें अल्लाह से मुंह मोड़ कर दुनिया की तरफ़ लपकीं और दोज़ख़ उनके मुक़द्दर में लिख दी गई। फिर अल्लाह ने बहिश्त का नज़ारा दिखाया जो पहली हालत से बेहतर और इताअ़त व बन्दगी वाला था। बहुत सी रूहें उधर लपकीं उनके मुक़द्दर में बहिश्त लिख दी गयी। बहुत सी रूहें कोई फ़ैसला न कर पाईं। इन्हें फिर रहमान और शैतान के दरमियान कर दिया। वही रूहें दुनिया में आ कर बीच में फंस गईं, फिर जिसके हाथ लग गईं (उस ही की हो गईं)। बहुत सी रूहें अल्लाह के जलवे को देखती रहीं, न दुनिया की और न ही जन्नत की तलब, अल्लाह को उनसे मुहब्बत और उन्हें अल्लाह से मुहब्बत हो गयी। उन्हीं रूहों ने दुनिया में आकर अल्लाह की ख़ातिर दुनिया को छोड़ा और जंगलों में बसेरा किया। रूहों की ज़रूरत और दिल लगी के लिये अट्ठारह हज़ार क़िस्म की मख़लूक़, छः हज़ार पानी में, छः हज़ार ख़ुश्की में और छः हज़ार हवाई और आसमानी पैदा की गई। फिर अल्लाह ने सात क़िस्म की जन्नत और सात क़िस्म की दोज़ख़ बनाई।

जन्नतों के नामः- 1- ख़ुल्द, 2- दारूस्सलाम, 3- दारूल्क़रार,
4- अ़दन, 5- अल्मावा, 6- नईम, 7- फ़िरदौस

दोज़ख़ों के नामः- 1- सक़र, 2- सईर, 3- नता,
4- हुतमा, 5- जहीम, 6- जहन्नुम, 7- हाविया

मुन्दर्जह बाला सारे नाम सुर्यानी ज़बान के हैं। वह ज़बान जिसमें अल्लाह, फ़रिश्तों से मुख़ातिब होता है। सब मज़ाहिब का अ़क़ीदा है कि जिसे अल्लाह चाहे दोज़ख़ में और जिसे चाहे बहिश्त में भेज दे। अगर वहीं से जिस रूह को दोज़ख़ में भेजा जाता तो वह एअ़तराज़ करती कि मैंने कौन सा जुर्म किया था? अल्लाह कहता : तूने मेरी तरफ़ से मुंह मोड़ कर दुनिया तलब करी थी, रूह कहती : वह तो सिर्फ नादानी में इक़रार था, अ़मल तो नहीं किया था! फिर इस हुज्जत को पूरा करने के लिये रूहों को नीचे इस दुनिया में भेजा। आदम अलै. जिन्हें शंकर जी भी कहते हैं जन्नत की मिट्टी से उनका जिस्म बनाया गया। फिर रूह इंसानी के अ़लावह कुछ और मख़लूक़ें भी उसमें डाल दी गयीं। जब आदम अलै. का जिस्म बनाया जा रहा था तो शैतान ने हसद से थूका था, जो नाफ़ की जगह गिरा और इस थूक के जरासीम भी इस जिस्म में शामिल हो गये। शैतान जिन्नात क़ौम से है।

एक हदीस में है कि जब इंसान पैदा होता है तो उसके साथ एक शैतान जिन्न भी पैदा होता है, जिस्म तो सिर्फ़ मिट्टी का मकान था जिसके अंदर सोलह (16) मख़लूक़ों को बंद कर दिया, जबकि ख़न्नास और चार परिन्दे और भी हैं। आदम अलै. की बायीं पसली से औ़रत की शक्ल में मवाद निकला। उसमें रूह डाल दी गई जो माई हव्वा बन गई। बाद में बहिश्त से निकाल कर आदम अलै. को श्रीलंका और माई हव्वा को जिद्दह में उतारा गया। जिनके ज़रिए एशियाइयों की पैदाइश का सिलसिला शुरू हो गया, और आसमान से बाक़ी रूहें भी बतदरीज आना शुरू हो गईं। रूहों की तालीमो तरबियत और मदारिज के लिये मज़ाहिब की सूरत में मदरसे क़ायेम हुए और रोज़े अज़ल की तक़दीर के मुताबिक़ कोई किसी मज़हब में और कोई बेमज़हब ही रहीं। अल्लाह की मुहिब्ब रूहें भी इस दुनिया में आईं कोई मुस्लिम के घर कोई हिंदुओं, कोई सिक्खों और कोई ईसाईयों के घरों में पैदा हो गईं और अपने मज़हब के ज़रिए अल्लाह को पाने की कोशिश करने लगीं। यही वजह है कि हर मज़हब के ख़वास ने रहबानियत अख़्तियार की, कुछ लोग कहते हैं कि इस्लाम में रहबानियत नहीं है यह अ़क़ीदा ग़लत है। हज़ूरपाक भी ग़ारेहिरा में जाया करते थे। शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ी., ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, दाता अली हिजवेरी, बरी इमाम, बाबा फ़रीद, शहबाज़ क़लंदर रज़ी. वग़ैरह ने भी रहबानियत के बाद ही इतने बुलन्द मुक़ाम हासिल किये और इन ही के ज़रिए दीन की इशाअ़त हुई।

दुनिया में इंसान की बुनियाद

पेट में नुतफ़ा ए इंसानी के बाद खून को इकट्ठा करने के लिए रूह जमादी आती है, फिर रूह नबाती के ज़रिए बच्चा पेट में बढ़ता है। चार माह के बाद रूह हैवानी जिस्म में दाख़िल की जाती है जिसके ज़रिए बच्चा पेट में हरकत करता है, इनको अरज़ी अरवाह कहते हैं। फिर पैदाइश के बाद रूह इंसानी दूसरी मख़लूक़ात के साथ आती है इनको समावी अरवाह कहते हैं। अगर बच्चा पैदाइश से थोड़ी देर पहले ही पेट में मर जाये तो उसका जनाज़ा नहीं होता कि वह हैवान था। पैदाइश के थोड़ी देर बाद मर जाये तो उसका जनाज़ा लाज़िम है कि वह रूह इंसानी की आमद की वजह से इंसान बन गया था, और नफ़्स ने भी मुक़ामे नाफ़ पर अपने साथियों के साथ डेरा लगा लिया था। अगर इसमें जमादी रूह ताक़तवर है तो वह पहाड़ों में रहना पसंद करता है। रूह नबाती की वजह से इंसान फूलों और दरख़्तों से लगाव रखता है। रूह हैवानी के ग़लबह से जानवरों से प्यार और जानवरों जैसे काम करता है। जबकि नफ़्स की शक्ल कुत्ते की तरह होती है इसके ग़लबे से कुत्तों जैसे काम और कुत्तों से प्यार करता है। और बेदारिये क़ल्ब से इंसान फ़रिश्तों की तरह बन जाता है। इंसान के मरने के बाद समावी अरवाह आसमानों को लौट जाती हैं जो एक ही जिस्म के लिए मख़सूस हैं, अरज़ी रूहें बमअ़ नफ़ूस के इसी दुनिया में रह जाती हैं। अरज़ी रूहें एक से दूसरे, फिर तीसरे जिस्म में मुंतक़िल होती रहती हैं क्योंकि इनका रोज़ेमहशर से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं लेकिन पाकीज़ः नफ़्स क़ब्रों में रहकर लोगों को फ़ैज़ पहुंचाते और खुद भी बन्दगी करते रहते हैं जैसा कि जब शबे मेअ़राज में हज़ूर पाक सल. मूसा की क़ब्र से गुज़रे तो देखा मूसा अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे हैं जब आसमानों पर पहुंचे तो देखा मूसा वहाँ भी मौजूद हैं। बदकार लोगों के ताक़तवर नफ़्स अपने बचाव के लिए शयातीन के टोले से मिल जाते हैं और लोगों के जिस्म में दाख़िल होकर लोगों को नुक़्सान पहुँचाते हैं इनको बदरूहें कहते हैं। इंजील में है कि ईसा बदरूहें निकाला करते थे। अरज़ी अरवाह और नफ़ूस इसी दुनिया में, रूह इंसानी आ़लमे इल्लियूयीन या सिज्जियूयीन में और लताइफ़ अगर ताक़तवर हैं तो वह भी इल्लियूयीन में, वरना क़ब्र में ही ज़ायअ़ हो जाते हैं। नफ़्स की वजह से इंसान नापाक हुआ।

बक़ौल बुल्हे शाह : इस नफ़्स पलीत ने पलीत कीता.... असाँ मुंढों पलीत न सी

नफ़्स को पाक करने के लिये किताबें उतरीं, नबी, वली आये कहीं इसको दोज़ख़ से डराया गया, कहीं बहिश्त की लालच दी गयी। रियाज़त, इबादत और रोज़ों के ज़रिए इसे सुधारने की कोशिश की गई और जन्नत के हक़दार भी हो गये। और बहुत से लोगों ने बातिनी इल्म के ज़रिए इसे पाक भी कर लिया और अल्लाह के दोस्त बन गये।

तज़कराए नफ़्स

यह शैतानी जर्सूमा है। नाफ़ में इसका ठिकाना है। सब नबियों वलियों ने इसकी शरारत से पनाह माँगी, इसकी ग़िज़ा फ़ासफ़ोरस और बदबू है, जो हड्डियों, कोयले और गोबर में भी होती है हर मज़हब ने जनाबत के बाद नहाने पर ज़ोर दिया है। क्योंकि जनाबत की बदबू मसामों से भी ख़ारिज होती है। बदबूदार क़िस्म के मशरूब और बदबूदार क़िस्म के जानवरों के गोश्त को भी ममनूअ़ क़रार दिया है। रोज़े अज़ल में अल्लाह के सामने वाली तमाम रूहें, जमादी तक, एक दूसरे से मानूस और मुत्तहिद हो गईं। रूह जमादी की वजह से इंसान ने पत्थरों के मकान बनाये और रूह नबाती की वजह से दरख़्तों की लकड़ियों से छत बनाये। दरख़्तों के साये से भी मुस्तफ़ीज़ हुए। दरख़्तों ने इनको साफ़ सुथरी ऑक्सीजन पहुंचाई। पीछे

वाली हैवानी रूहें जो दुनिया में आकर जानवर बन गये, सब इंसानों के लिए हलाल कर दिये गये। जबकि इन ही से मुतअ़ल्लिक़ा परिन्दे भी हलाल कर दिये गये। बायीं तरफ़ जिन्नात और सिफ़ली मुवक्किलात बने फिर उनसे पीछे की तरफ़ ख़बीस अरवाह जो आख़िर में दुश्मने ख़ुदा हुईं। और वह हैवानी, नबाती और जमादी रूहें जो ख़बीसों के पीछे नमूदार हुई थीं उन्होंने इंसानों से दुश्मनी करी, उनकी रूहे जमादी के दुनिया में आने से राख कोयला बनी, जिसकी गैस इंसानों के लिये नुक़सानदेह थी। उनकी रूह नबाती से ख़तरनाक और काँटेदार क़िस्म के, और आदमख़ोर क़िस्म के दरख़्त वजूद में आये और उनकी रूह हैवानी से आदमख़ोर और दरिन्दा क़िस्म के जानवर पैदा हुए और उनसे मुतअ़ल्लिक़ा परिन्दे भी उन ही की इंसान दुश्मनी की ख़सलत की वजह से हराम क़रार दिये गये। जिनकी पहचान यह है कि वह पंजे से पकड़ कर ग़िज़ा खाते हैं। दायीं जानिब वाली अरवाह को इंसान का ख़ादिम, पैग़ाम रसाँ और मददगार बना दिया और इंसान को सबसे ज़्यादह फ़ज़ीलत अ़ता करके अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दिया। अब इंसान की मरज़ी, मेहनत और किस्मत है कि ख़िलाफ़त मनज़ूर करे या ठुकरा दे। नफ़्स ख़्वाब में जिस्म से बाहर निकल जाता है और उस बन्दे की शक्ल में जिन्नात की शैतानी महफ़िलों में घूमता है। नफ़्स के साथ ख़न्नास भी होता है जिसकी शक्ल हाथी की तरह होती है और यह नफ़्स और क़ल्ब के दरमियान बैठ जाता है, इंसान को गुमराह करने के लिये नफ़्स की मदद करता है। इसके अ़लावह चार परिन्दे भी इंसान को गुमराह करने के लिये चारों लताइफ़ के साथ चिमट जाते हैं, जैसा कि क़ल्ब के साथ मुर्ग़, जिसकी वजह से दिल पर शहवत का ग़लबा रहता है, क़ल्ब के ज़िक्र से वह मुर्ग़, मुर्ग़े बिस्मिल बन जाता है और हरामो हलाल की तमीज़ का शऊ़र पैदा कर देता है। फिर इस क़ल्ब को क़ल्ब सलीम कहते हैं। सिर्री के साथ कव्वा, कव्वे की वजह से हिर्स, और ख़फ़ी के साथ मोर, मोर की वजह से हसद, और अख़फ़ा के साथ कबूतर, कबूतर की वजह से बुख़्ल आ जाता है और उनकी ख़सलतें लताइफ़ को हिर्सोहसद पर मजबूर कर देती हैं जबतक लताइफ़ मुनव्वर न हो जायें। इब्राहीम अलै. के जिस्म से इन ही चार परिन्दों को निकाल कर, पाकीज़ह कर के दोबारा जिस्म में डाला गया था। मरने के बाद पाकीज़ह लोगों के यह परिन्दे दरख़्तों पर बसेरा बना लेते हैं। बहुत से लोग जंगलों में कुछ दिन रह कर परिन्दों जैसी आवाज़ें निकालते हैं, और यह परिन्दे इनसे मानूस हो जाते हैं और उनके छोटे मोटे इलाजों में मुआ़विन बन जाते हैं।

एक अहम नुक्ता

"नफ़्स का तअ़ल्लुक़ शैतान से है"
"सीने के पाँचों लताइफ़ का तअ़ल्लुक़ पाँचों रसूलों से है।"
"अन्ना का तअ़ल्लुक़ अल्लाह से है"
"इसी तरह इस जिस्म का तअ़ल्लुक़ कामिल मुर्शिद से है"
"और जो भी मख़लूक़ जिस निस्बत से ख़ाली है वह उसके फैज़ से महरूम और आ़री है"

लतीफ़ए क़ल्ब

गोश्त के लोथड़े को उर्दू में दिल और अ़रबी में फ़व्वाद बोलते हैं और इस मख़लूक़ को जो दिल के साथ है, क़ल्ब बोलते हैं। इसकी नबूवत और इल्म आदम अलै. को मिला था। हदीस में है कि दिल और क़ल्ब में फ़र्क है। इस दुनिया को नासूत बोलते हैं। इसके अ़लावह और जहान भी हैं, यअ़नी मलकूत, अंकबूत, जबरूत, लाहूत, वहदत और अहदियत। यह मुक़ाम नासूत में गोला फटने से पहले थे और इनकी मख़लूक़ें भी पहले से मौजूद थीं। फ़रिश्ते अरवाह के साथ बने। लेकिन मलाइका और लताइफ़ पहले ही से इन मुक़ामात पर मौजूद थे। बाद में आ़लमे नासूत में भी कई सैयारों पर दुनिया आबाद हुई। कोई मिट गये और कोई मुंतज़िर हैं। यह मख़लूक़ यअ़नी लताइफ़ और मलाइका रूहों के अम्रे कुन से 70 हज़ार साल पहले बनाये गये थे और इनमें से क़ल्ब को मुक़ामे मुहब्बत में रखा गया और इसी के ज़रिए इंसान का राबता अल्लाह से जुड़ जाता है। अल्लाह और बन्दे के दर्मियान यह टेलीफून आप्रेटर की हैसियत रखता है। इंसान पर दलीलो इल्हामात इसी के ज़रिए वारिद होते हैं। जबकि लताइफ़ की इबादात भी इसी के ज़रिए अ़र्शेबाला पर पहुंचती हैं लेकिन यह मख़लूक़ ख़ुद मलकूत से आगे नहीं जा सकती, इसका मुक़ाम ख़ुल्द है। इसकी इबादत भी अंदर और तस्बीह भी इंसान के ढांचे में है। इसकी इबादत के बग़ैर वाले जन्नती भी अफ़सोस करेंगे क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया कि "क्या इन लोगों ने समझ रखा है कि हम इनको नेकूकारों के बराबर कर देंगे?" क्योंकि क़ल्ब वाले जन्नत में भी अल्लाह अल्लाह करते रहेंगे। जिस्मानी इबादत मरने के बाद ख़त्म हो जाती है जिनके क़ल्ब और लताइफ़ अल्लाह के नूर से ताक़तवर नहीं वह क़ब्रों में ही ख़स्तह हालत में रहेंगे या ज़ायअ़ हो जायेंगे जबकि मुनव्वर और ताक़तवर लताइफ़ मुक़ामे इल्लियूयीन में चले जायेंगे। यौमे महशर के बाद जब दूसरे जिस्म दिये जायेंगे तो फिर यह लताइफ़ भी रूहे इंसानी के साथ दीदार वाले लाफ़ानी वलियों के जिस्म में दाख़िल होंगे। जिन्होंने इनको दुनिया में अल्लाह अल्लाह सिखाया था वहाँ भी अल्लाह अल्लाह करते रहेंगे और वहाँ जाकर भी इनके मर्तबे बढ़ते रहेंगे। और जो इधर दिल के अंधे थे वह उधर भी अंधे ही रहेंगे। क्योंकि मैदाने अ़मल यह दुनिया थी और वह एक ही जगह साकिन हो जायेंगे। ईसाईयों, यहूदियों के अ़लावह हिंदू मज़हब भी इन मख़लूक़ों का क़ायेल है। हिंदू इन्हें शक्तियाँ और मुसलमान इन्हें लताइफ़ कहते हैं। क़ल्ब दिल के बायीं तरफ़ दो इंच के फ़ासिले पर होता है इस मख़लूक़ का रंग ज़र्द है। इसकी बेदारी से इंसान ज़र्द रोशनी अपनी आँखों में महसूस करता है। बल्कि कई आ़मिल हज़रात इन लताइफ़ के रंगों से लोगों का इलाज भी करते हैं। अक्सर लोग अपने दिल की बात बर्हक़ मानते हैं। अगर वाक़ई दिल सच्चे हैं तो सब दिल वाले एक क्यों नहीं ? आ़म आदमी का क़ल्ब सनोबरी होता है जिसमें कोई सुध बुध नहीं होती, नफ़्स और ख़न्नास के ग़ल्बे या अपने सीधेपन की वजह से ग़लत फ़ैसला भी दे सकता है। क़ल्ब सनोबरी पर एअ़तिमाद नादानी है। जब इस दिल में अल्लाह का ज़िक्र शुरू हो जाता है फिर इसमें नेकी बदी की तमीज़ और समझ आ जाती है इसे क़ल्बे सलीम कहते हैं, फिर ज़िक्र की कसरत से इसका रूख़ रब की तरफ़ मुड़ जाता है इसे क़ल्बे मुनीब कहते हैं, यह दिल बुराई से रोक सकता है मगर यह सही फ़ैसला नहीं कर सकता, फिर जब अल्लाह तआ़ला की तजल्लियात इस दिल पर गिरना शुरू हो जाती हैं तो उसे क़ल्बे शहीद कहते हैं। हदीसः शिकस्तह दिल और शिकस्तह क़ब्र पर अल्लाह की रहमत पड़ती है उस वक़्त जो दिल कहे चुप करके मान ले क्योंकि तजल्ली से नफ़्स भी मुत्मइन्नह हो जाता है और अल्लाह हब्लुल वरीद हो जाता है फिर अल्लाह कहता है कि मैं उसकी ज़बान बन जाता हूँ जिससे वह बोलता है, उसके हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है।

इंसानी रूह

(इसकी नबूवत और इल्म इब्राहीम अलैह. को मिला था)

यह दायें पुस्तान के क़रीब होती है। ज़िक्र की ज़र्बों और तसव्वुर से इसको भी जगाया जाता है। फिर इधर भी एक धड़कन नुमायाँ हो जाती है। इसके साथ (ज़िक्र) या अल्लाह मिलाया जाता है। फिर इंसान के अन्दर दो बन्दे ज़िक्र करना शुरू कर देते हैं और इसका मर्तबह क़ल्ब वाले से बढ़ जाता है। रूह का रंग सुर्ख़ी मायेल होता है और इसकी बेदारी से जबरूत तक (जो मुक़ामे जिब्राईल है) रसाई हो जाती है। ग़ज़बो गुस्सा इसके हमसायह होते हैं जो जलकर जलाल बन जाते हैं।

लतीफ़ए सिर्री

(इसकी नबूवत और इल्म मूसा अलैह. को मिला था)

यह मख़लूक़ सीने के दर्मियान से बायें पुस्तान के दर्मियान होती है। इसको भी या हइयो या क़इयूम की ज़र्बों और तसव्वुर से बेदार किया जाता है। इसका रंग सफ़ेद है। ख़्वाब या मुराक़बे में लाहूत तक पहुंच रखती है, अब तीन मख़लूक़ें ज़िक्र कर रही हैं और इसका दर्जा उन दो से बढ़ गया।

लतीफ़ए ख़फ़ी

(इसकी नबूवत और इल्म ईसा को मिला था)

यह सीने के दर्मियान से दायें पुस्तान के दर्मियान होती है इसे भी ज़र्बों के ज़रिए़ या वाहिद सिखाया जाता है। इसका रंग सब्ज़ है और इसकी रसाई मुक़ामे वहदत से है, और अब चार बन्दों की इबादत से दर्जा और बढ़ गया।

लतीफ़ए अख़फ़ा

(इसकी नबूवत और इल्म हज़ूरपाक को मिला था)

यह मख़लूक़ सीने के दर्मियान है। या अहद् का ज़िक्र इसके लिये वसीला है इसका रंग जामुनी है इसका तअ़ल्लुक़ भी मुक़ामे वहदत के उस पर्दे से है जिसके पीछे तख़्ते खुदावन्द है।

पाँच लतीफ़ों का बातिनी इल्म भी पाँचों नबियों को बिल्तर्तीब हासिल हुआ और हर लतीफ़े का आधा इल्म नबियों से वलियों तक पहुंचा। इस तरह इसके दस हिस्से बन गये फिर वलियों से ख़ास (लोग) इस इल्म से मुस्तफ़ीज़ हुए। जबकि ज़ाहिरी इल्म, ज़ाहिरी जिस्म, ज़ाहिरी ज़बान, नासूत और नफ़्स से तअ़ल्लुक़ रखता है। यह आ़म लोगों के लिये है और इसका इल्म ज़ाहिरी किताब में है जिसके तीस (३०) हिस्से हैं। इल्मे बातिन भी नबियों पर वहि्य के ज़रिए़ नाज़िल हुआ, इस वजह से इसे भी बातिनी कुरान बोलते हैं। कुरान की बहुत सी सूरतें बाद में मन्सूख़ की जातीं, उसकी वजह यही थी कि कभी कभी सीने का इल्म भी हज़ूर सल. की ज़ुबान से आ़म में अदा हो जाता जो कि ख़ास के लिये था, बाद में यह इल्म सीना बसीना वलियों में चलता रहा और अब कुतुब के ज़रिए़ आ़म कर दिया गया।

लतीफ़ए अन्ना

यह मख़लूक़ सिर में होती है। बेरंग है। ''याहू'' का ज़िक्र इसकी मेअ़राज है और यही मख़लूक़ ताक़तवर हो कर ख़ुदा के रूबरू बेपर्दा हमकलाम हो जाती है। यह आ़शिक़ों का मुक़ाम है इसके अ़लावह कुछ ख़्वास को अल्लाह की तरफ़ से और दीगर मख़लूक़ें भी अ़ता हो जाती हैं, जैसे ''तिफ़्लेनूरी'' या ''जुस्सा तौफ़ीक़े इलाही'' फिर इनका मर्तबा समझ से बालातर है।

लतीफ़ए अन्ना के ज़रिए दीदारे इलाही ख़्वाब में होता है।
जुस्सा तौफ़ीक़े इलाही के ज़रिए रब का दीदार मुराक़्बे में होता है।
और तिफ्लेनूरी वालों का दीदार होशो हवास में होता है।

यही फिर दुनिया में क़ुद्‌रतुल्लाह कहलाते हैं, चाहे किसी को इबादतो रियाज़त, और चाहे किसी को नज़रों से ही मुक़ामे महमूद तक पहुंचा दें, इनकी नज़रों में : चह मुस्लिम चह काफ़िर. ......चह ज़िन्दा चह मुर्दा, सब बराबर होते हैं जैसा कि ग़ौस पाक रज़ि. की एक नज़र से चोर कुतुब बन गया। या अबू बकर हव्वारी या मंगा डाकू भी इन लोगों की नज़रों से पीर बन गये।

पाँचों मुर्सिल को बिल्तर्तीब अ़लहिदा अ़लहिदा लताइफ़ का इल्म दिया गया जिसकी वजह से रूहानियत में तरक़्क़ी होती गयी। जिस जिस लतीफ़े का ज़िक्र करेगा उनसे मुतअ़ल्लिक़ मुर्सिल से तअ़ल्लुक़ और फ़ैज़ का हक़दार हो जायेगा। और जिस लतीफ़े पर तजल्ली पड़ेगी उसकी विलायत उस नबी के नक़्शे क़दम पर होगी। सात आसमानों में पहुंच और सात बहिश्तों में मदारिज की हुसूली भी इन ही लताइफ़ से होती है।

इंसानी जिस्म में इन लताइफ़ की ड्यूटियाँ

लतीफ़ए अख़फ़ा :

इसके ज़रिए इंसान बोलता है वरना ज़बान ठीक होने के बावजूद वह गूंगा है। इंसानों और हैवानों में फ़र्क़ इन लताइफ़ का है। पैदाइश के वक़्त अगर अख़फ़ा किसी वजह से जिस्म में दाख़िल न हो सके तो इसे जिस्म में मंगवाना किसी मुतअ़ल्लिक़ा नबी की ड्यूटी थी, फिर गूंगे बोलना शुरू हो जाते थे।

लतीफ़ए सिर्री :

इसके ज़रिए इंसान देखता है। इसके जिस्म में न आने से इंसान पैदाइशी अंधा है। इसको वापस लाना भी किसी मुतअ़ल्लिक़ा नबी की ड्यूटी थी जिससे अन्धे भी देखना शुरू हो जाते थे।

लतीफ़ए क़ल्ब :

इसके जिस्म में न होने की वजह से इंसान बिल्कुल जानवरों की तरह रब से नाआश्ना और दूर, बेशौक़, बेकैफ़ हो जाता है, इसको वापस दिलवाना भी नबियों का काम था। और उन नबियों के मोज्ज़ात करामत की सूरत में वलियों को भी अ़ता हुए, जिसके ज़रिए फ़ासिको फ़ाजिर भी रब तक पहुंच गये। किसी भी वली या नबी के ज़रिए जब किसी मुतअ़ल्लिक़ा लतीफ़े को वापस किया जाता है तो गूंगे बहरे और अन्धे भी शिफ़ायाब हो जाते हैं।

लतीफ़ए अन्ना :

इसके जिस्म में न आने से इंसान पागल कहलाता है बेशक दिमाग़ की सब नसें काम कर रहीं हों।

लतीफ़ए ख़फ़ी :

इसके न आने से इंसान बहरा है, ख़्वाह कान के सुराख़ खोल दिये जायें। जिस्मानी नक़ाइस से भी यह हालतें पैदा हो सकती हैं जो क़ाबिले इलाज हैं, लेकिन मख़लूक़ों के नापैद होने का कोई इलाज नहीं जबतक किसी नबी या वली की हिमायत हासिल न हो।

लतीफ़ए नफ़्स :

इसके ज़रिए इंसान का दिल दुनिया में, और लतीफ़ए क़ल्ब के ज़रिए इंसान का रूख़ अल्लाह की तरफ़ मुड़ जाता है।

लफ़्ज़ ''अल्लाह''

सुर्यानी ज़बान जो आसमानों पर बोली जाती है फ़रिश्ते और रब इसी ज़बान से मुख़ातिब होते हैं। जन्नत में आदम सफ़ीउल्लाह भी यही ज़बान बोलते थे। फिर जब आदम सफ़ीउल्लाह और माई हव्वा दुनिया में आये अरबिस्तान में आबाद हुए। उनकी औलाद भी यही ज़बान बोलती थी, फिर आल के दुनिया में फैलाव की वजह से यह ज़बान अ़रबी फ़ारसी, लातीनी से निकलती हुई अंग्रेज़ी तक जा पहुंची, और अल्लाह को मुख़्तलिफ़ ज़बानों में अ़लहिदा अ़लहिदा पुकारा जाने लगा। आदम अलैह. के अ़रब में रहने की वजह से सुर्यानी के बहुत से इल्फ़ाज़ अब भी अ़रबी ज़बान में मौजूद हैं जैसा कि आदम को आदम सफ़ीउल्लाह के नाम से पुकारा था। किसी को नूह नबीउल्लाह, किसी को इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, फिर मूसा कलीमुल्लाह, ईसा रूहुल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह पुकारा गया। यह सब कलमे सुर्यानी ज़बान में लौह महफ़ूज़ पर इन नबियों के आने से पहले ही दर्ज थे, तब ही हज़ूर पाक सल. ने फ़रमाया था कि मैं इस दुनिया में आने से पहले भी नबी था।

बअ़ज़ लोगों का ख़याल है कि लफ़्ज़ अल्लाह मुसलमानों का रखा हुआ नाम है, मगर ऐसा नहीं है।

ह० मुहम्मद रसूलुल्लाह के वालिद का नाम अब्दुल्लाह था जबकि उस वक़्त इस्लाम नहीं था। और इस्लाम से पहले भी हर नबी के कलमे के साथ अल्लाह पुकारा गया। जब रूहें बनाईं गयीं तो उनकी ज़बान पर पहला लफ़्ज़ ''अल्लाह'' ही था और फिर जब रूह आदम के जिस्म में दाख़िल हुई तो या अल्लाह पढ़कर ही दाख़िल हुई थी। बहुत से मज़ाहिब इस रम्ज़ को हक़ समझ कर अल्लाह के नाम का ज़िक्र करते हैं और बहुत से शकूको शुब्हात की वजह से इससे महरूम हैं। जो भी नाम रब की तरफ़ इशारा करता है क़ाबिले तअ़ज़ीम है, यअ़नी अल्लाह की तरफ़ रूख़ कर देता है। मगर नामों के असर से मुतफ़र्रिक़ हो गये। हरूफ़े अबजद और हरूफ़े तहिज्जी की रू से हर लफ़्ज़ का हिन्दसह अ़लहिदा होता है। यह भी एक आसमानी इल्म है और इन हिन्दसों का तअ़ल्लुक़ कुल मख़लूक़ से है बअ़ज़ दफ़ह यह हिन्दसे सितारों के हिसाब से आपस में मुवाफ़िक़त नहीं रखते जिसकी वजह से इंसान परेशान रहता है। बहुत से लोग इस इल्म के माहिरीन से सितारों के हिसाब से ज़ाइचा बनवाकर नाम रखते हैं। जैसा कि अबजद (अ ब ज द) (1,2,3,4) के दस (10) अ़दद बनते हैं। इसी तरह हर नाम के अ़लहिदा अअ़दाद होते हैं। जब अल्लाह के मुख़तलिफ़ नाम रख दिये गये तो अबजद के हिसाब से एक दूसरे से टकराव का सबब बन गये। अगर सब एक ही नाम से रब को पुकारते तो मज़ाहिब जुदा जुदा होने के बावजूद अंदर से एक ही होते। फिर नानक साहेब और बाबा फ़रीद की तरह यही कहतेः

सब रूहें अल्लाह के नूर से बनी हैं, लेकिन इनका माहौल और इनके मुहल्ले अ़लहिदा हैं।

जिन फ़रिश्तों की दुनिया में ड्यूटी लगाई जाती है उन्हें दुनिया वालों की ज़बानें भी सिखाई जाती हैं। उम्मतियों के लिये ज़रूरी है कि अपने नबी का कलमा जो नबी के ज़माने में उम्मत की पहचान, फ़ैज़ और पाकीज़गी के लिये रब की तरफ़ से अ़ता हुआ था, उसी तरह उसी ज़बान में कलमे का तक़रार किया करे। किसी को किसी भी मज़हब में आने के लिये यह कलमें शर्त हैं। जिस तरह निकाह के वक़्त ज़बानी इक़रार शर्त है जन्नतों में दाख़िले के लिये भी यह कलमे शर्त कर दिये गये। लेकिन मग़रिबी मुमालिक में बेशतर मुस्लिम और ईसाई अपने मज़हब के कलमों हत्ताकि अपने नबी के असली नाम से बेख़बर हैं। ज़बानी कलमे वाले अअ़माले सालेह के मुहताज, कलमा न पढ़ने वाले जन्नत से बाहर, और जिनके दिलों में भी कलमा उतर गया था वही बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे। आसमानी किताबें जो जिस भी ज़बान में असली हैं वह रब तक पहुंचाने का ज़रिअ़ह हैं लेकिन जब इनकी इबारतों और तर्जुमों में मिलावट कर दी गई, जिस तरह मिलावट शुदह आटा पेट के लिये नुक़सानदेह है इसी तरह मिलावट शुदह किताबें दीन में नुक़्सान बन गयी हैं और एक ही दीन, नबी वाले कितने फ़िरक़ो में बट गये। सिराते मुस्तक़ीम के लिये बेहतर है कि तुम नूर से भी हिदायत पा जाओ।

नूर बनाने का तरीक़ा

पुराने ज़माने में पत्थरों की रगड़ से आग हासिल की जाती थी जबकि लोहे की रगड़ से भी चिंगारी उठती है। पानी से पानी टकराया तो बिजली बन गई। इसी तरह इंसान के अन्दर ख़ून के टकराव यअ़नी दिल की टिक टिक से भी बिजली बनती है। हर इंसान के जिस्म में तक़रीबन डेढ़ वाल्ट बिजली मौजूद है। जिसके ज़रिए उसमें फुरती होती है। बुढ़ापे में टिक टिक की रफ़्तार सुस्त होने की वजह से बिजली में भी और चुस्ती में भी कमी आ जाती है। सबसे पहले दिल की धड़कनों को नुमायाँ करना पड़ता है। कोई डान्स के ज़रिए, कोई कबड्डी या वर्ज़िश के ज़रिए, और कोई अल्लाह अल्लाह की ज़र्बों के ज़रिए यह अ़मल करते हैं। जब दिल की धड़कनों में तेज़ी आ जाती है फिर हर धड़कन के साथ अल्लाह अल्लाह, या एक के साथ अल्लाह और दूसरी के साथ ''हू'' मिलायें। कभी कभी दिल पर हाथ रखें, धड़कनें महसूस हों तो अल्लाह मिलायें। कभी कभी नब्ज़ की रफ़्तार के साथ अल्लाह मिलायें। तसव्वुर करें कि अल्लाह दिल में जा रहा है। अल्लाहू का ज़िक्र बेहतर और ज़ूद असर है। अगर किसी को ''हू'' पर एअ़तराज़ या ख़ौफ़ हो तो वह बजाये महरूमी के धड़कनों के साथ अल्लाह अल्लाह ही मिलाते रहें। विर्द वज़ाइफ़ और ज़कूरियत वाले लोग जितना भी पाक साफ़ रहें उनके लिये बेहतर है, कि

बे अदब.... बे मुराद................बा अदब.... बा मुराद

पहला तरीक़ा :

काग़ज़ पर काली पेंसिल से الله लिखें, जितनी देर तबिअ़त साथ दे रोज़ानह मश्क़ करें। एक दिन लफ़्ज़ अल्लाह काग़ज़ से आंखों में तैरना शुरू हो जायेगा फिर आंखों से तसव्वुर के ज़रिए दिल पर उतारने की कोशिश करें।

दूसरा तरीक़ा :

ज़ीरो के सफ़ेद बल्ब पर पीले रंग से '' الله '' लिखें, उसे सोने से पहले या जागते वक़्त आंखों में समोने की कोशिश करें। जब आंखों में आ जाये तो फिर उस लफ़्ज़ को दिल पर उतारें।

तीसरा तरीक़ा :

यह तरीक़ा उन लोगों के लिये है जिनके रहबर कामिल हैं और तअ़ल्लुक़ो निस्बत की वजह से रूहानी इमदाद करते हैं। तन्हाई में बैठ कर शहादत की उंगली को क़लम ख़याल करें और तसव्वुर से दिल पर الله लिखने की कोशिश करें। रहबर को पुकारें कि वह भी तुम्हारी उंगली को पकड़कर तुम्हारे दिल पर الله लिख रहा है। यह मश्क़ रोज़ाना करें जबतक दिल पर अल्लाह الله लिखा नज़र न आये। पहले तरीक़ों में अल्लाह वैसे ही नक़्श होता है जैसा कि बाहर लिखा या देखा जाता है। फिर जब धड़कनों से अल्लाह मिलना शुरू हो जाता है तो फिर आहिस्ता आहिस्ता चमकना शुरू हो जाता है। चूंकि इस तरीक़े में कामिल रहबर का साथ होता है इस लिये शुरू से ही ख़ुशख़त और चमकता हुआ दिल पर الله लिखा नज़र आता है। दुनिया में कई नबी वली आये, ज़िक्र के दौरान बतौर आज़माइश बारी बारी, अगर मुनासिब समझें तो सबका तसव्वुर करें जिसके तसव्वुर से ज़िक्र में तेज़ी और तरक़्क़ी नज़र आये आप का नसीबा उसी के पास है फिर तसव्वुर के लिये उसी को चुन लें क्योंकि हर वली का क़दम किसी न किसी नबी के क़दम पर होता है, बेशक नबी ज़ाहिरी हयात में न हो! और हर मोमिन का नसीबा किसी न किसी वली के पास होता है। वली की ज़ाहिरी हयात शर्त है। लेकिन कभी कभी किसी को मुक़द्दर से किसी ममात वाले कामिल ज़ात से भी मलकूती फ़ैज़ हो जाता है लेकिन ऐसा बहुत ही महदूद है। अल्बत्तह ममात वाले दरबारों से दुनियावी फ़ैज़ पहुंचा सकते हैं। इसे अवैसी फ़ैज़ कहते हैं और यह लोग अक्सर कश्फ़ और ख़्वाब में उलझ जाते हैं क्योंकि मुर्शिद भी बातिन में और इब्लीस भी बातिन में, दोनों की पहचान मुश्किल हो जाती है। फ़ैज़ के साथ इल्म भी ज़रूरी होता है जिसके लिये ज़ाहिरी मुर्शिद ज़्यादह मुनासिब है। अगर फ़ैज़ है! इल्म नहीं! तो उसे मज्ज़ूब कहते हैं। फ़ैज़ भी है, इल्म भी है उसे महबूब कहते हैं। महबूब इल्म के ज़रिए लोगों को दुनियावी फ़ैज़ के अ़लावह रूहानी फ़ैज़ भी पहुंचाते हैं जबकि मजज़ूब डंडों और गालियों से दुनियावी फ़ैज़ पहुंचाते हैं।

''अगर कोई भी आपके तसव्वुर में आकर, आपकी मदद न करे तो फिर ''गौहर शाही'' ही को आज़माकर देखें।''

मज़हब की क़ैद नहीं! अल्बत्तह अज़ली बदबख़्त न हो। बहुत से लोगों को चांद से भी ज़िक्र अ़ता हो जाता है। उसका तरीक़ा यह है : जब पूरा चांद मश्रिक़ की तरफ़ हो, ग़ौर से देखें, जब सूरते गौहर शाही नज़र आ जाये तो तीन दफ़अ़ 'अल्लाह' 'अल्लाह' 'अल्लाह' कहें, इजाज़त हो गई। फिर बेख़ौफ़ो बेख़तर दर्ज शुदह तरीक़े से मश्क़ शुरू कर दें। यक़ीन जानिये! चांद वाली सूरत बहुत से लोगों से हर ज़बान में बातचीत भी कर चुकी है। आप भी देखकर बातचीत की कोशिश करें।

बाबत मुराक़बह

बहुत से लोग रूहों (लताइफ़, शक्तियाँ) की बेदारी और रूहानी ताक़त सीखे बग़ैर मुराक़बा करने की कोशिश करते हैं। इनका या तो मुराक़बा लगता ही नहीं या शैतानी वारदातें शुरू हो जाती हैं। मुराक़बह इन्तेहाई लोगों का काम है जिनके नफ़्स पाक और क़ल्ब साफ़ हो चुके हों। आ़म लोगों का मुराक़बा नादानी है ख़्वाह किसी भी ज़ाहिरी इबादत से क्यों न हो! रूहों की ताक़त को नूर से यकजा करके किसी मुक़ाम पर पहुंच जाने का नाम मुराक़बह है।

विलायत नबूवत का चालीसवाँ हिस्सा है : नबी का हर ख़्वाब, मुराक़बह या इल्हाम वहि्य सही होता है इसे तस्दीक़ की ज़रूरत नहीं। लेकिन वली के सौ (100) में से चालीस (40) ख़्वाब मुराक़बे या इल्हामात सही और बाक़ी ग़लत होते हैं और इनकी तस्दीक़ के लिये इल्मे बातिन की ज़रूरत है कि :

बे इल्म नतवाँ ख़ुदारा शनाख़्त

सबसे अदना मुराक़बह क़ल्ब की बेदारी के बाद लगता है जो कि ज़िक्रे क़ल्ब के बग़ैर नामुम्किन है। एक झटके से आदमी होशो हवास में आ जाता है। इस्तख़ारे का तअ़ल्लुक़ भी क़ल्ब से है। इससे आगे रूह के ज़रिए मुराक़बा लगता है। तीन झटकों से वापसी होती है। तीसरा मुराक़बा लतीफ़ए अन्ना और रूह से इकट्ठा लगता है। रूह भी जबरूत तक साथ जाती है जैसा कि जिब्राईल हज़ूर पाक सल. के साथ जबरूत तक गये थे। ऐसे लोगों को क़ब्र में भी दफ़ना आते हैं मगर उन्हें ख़बर नहीं होती ऐसा मुराक़बह असहाबे कहफ़ को लगा था जो तीन सौ (300) साल से ज़ाइद अ़र्सा ग़ार में सोते रहे। ऐसा मुराक़बह जब ग़ौस पाक को जंगल में लगता तो वहाँ के मकीन डाकू , आपको मुर्दा समझकर क़ब्र में दफ़नाने के लिये ले जाते थे। लेकिन दफ़नाने से पहले ही वह मुराक़बह टूट जाता।

अल्लाह की तरफ़ से ख़ास इल्हाम और वहि्य की पहचान :

जब इंसान सीने की मख़लूक़ों को बेदार और मुनव्वर करके तजल्लियात के क़ाबिल हो जाता है तो उस वक़्त अल्लाह उससे हमकलाम होता है। यूँ तो वह क़ादिरे मुत्लिक़ है किसी भी ज़रिए इंसान से मुख़ातिब हो सकता है लेकिन उसने अपनी पहचान के लिये एक ख़ास तरीक़ा बनाया हुआ है ताकि उसके दोस्त शैतान के धोके से बच सकें। सबसे पहले सुर्यानी ज़बान में इबारत सालिक के दिल पर आती है और उसका तर्जुमा भी उसी ज़बान में नज़र आता है जिसका वह हामिल है। वह तहरीर सफ़ेद और चमकदार होती है और आंखें ख़ुद बख़ुद बंद होकर उसे देखती हैं। फिर वह तहरीर क़ल्ब से होती हुई लतीफ़ए सिर्री की तरफ़ आती है। जिसकी वजह से ज़्यादह चमकना शुरू हो जाती है। फिर वह तहरीर लतीफ़ए अख़फ़ा की तरफ़ आती है, अख़फ़ा से और चमक हासिल करके ज़बान पर चली जाती है और ज़बान बेसाख़्तः वह तहरीर पढ़ना शुरू कर देती है। अगर यह इल्हाम शैतान की तरफ़ से हो तो मुनव्वर दिल उस तहरीर को मद्धिम कर देता है, अगर तहरीर ज़ोर आवर है तो लतीफ़ए सिर्री या अख़फ़ा उस तहरीर को ख़त्म कर देते हैं। बिल्फ़र्ज़ अगर लतीफ़ों की कमज़ोरी की वजह से वह तहरीर ज़बान पर पहुंच भी जाये तो ज़बान उसे बोलने से रोक लेती है। यह इल्हाम ख़ास वलियों के लिये होता है जबकि आ़म वलियों को अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों या अरवाह के ज़रिए पैग़ाम पहुंचाता है। और जब ख़ास इल्हाम की तहरीर के साथ जिब्राईल भी आ जायें तो उसे वहि्य कहते हैं जो सिर्फ़ नबियों के लिये मख़सूस है।

****

बहिश्त किन लोगों के लिये है

कुछ अज़ली जहन्नुमी भी अअ़मालो इबादात के ज़रिए बहिश्ती बनने की कोशिश करते हैं लेकिन आख़िर में शैतान की तरह मर्दूद हो जाते हैं, क्यों कि बुख़्ल, तकब्बुर, हसद इनकी विरासत है।

हदीस : जिसमें ज़र्रा भर भी बुख़्ल और हसद तकब्बुर है
वह जन्नत में नहीं जा सकता।

बहिश्ती लोग अगर इबादात में न भी हों तो पहचाने जाते हैं, यह लोग दिल के नरम और साफ़, और हिर्सो हसद से पाक और सख़ी होते हैं अगर इबादात में लग जायें तो बहुत ऊंचा मुक़ाम हासिल कर लेते हैं। और अल्लाह तआ़ला इन ही की बख़शिश के बहाने बनाता है और कुछ लोग दर्मियान वाले होते हैं इनका नेकी बदी का परवाना चलता है। और कुछ अल्लाह के ख़्वास होते हैं। इन ही रूहों ने अज़ल में अल्लाह से मुहब्बत करी थी। इन्हें जन्नत दोज़ख़ से मक़सद नहीं बल्कि अल्लाह के इश्क़ में तन मन धन लुटा देते हैं। अल्लाह के ज़िक्र और रहमत से अपनी रूहों को चमका लेते हैं, दीदारे इलाही भी हासिल कर लेते हैं, जन्नतुल फ़िर्दौस सिर्फ़ इन ही रूहों के लिये मख़सूस है। और इन ही के लिये हदीस है कि : कुछ लोग बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे।

''तशरीह''

जिनको दुनिया का नज़ारा दिखाया ''दुनिया इनके'' मुक़द्दर में लिख दी। इन्होंने नीचे दुनिया में आकर दुनिया हासिल करने के लिये जान की बाज़ी लगा दी। चोरी, डाका, रिशवत, सूद जैसे जरायेम को भी नज़र अन्दाज़ कर दिया हत्ताकि वहदानियत का भी इनकार कर दिया। इनमें से कुछ रूहें थीं जिन्होंने जन्नत हासिल करने के लिये मज़हब या इबादत भी अख़्तियार की लेकिन अज़ाज़ील की तरह बेसूद साबित हुईं क्योंकि कोई गुस्ताख़, या अल्लाह का नापसन्द मज़हब या फ़िर्क़ा इनके रास्ते में रूकावट बन गया। दूसरी अरवाह जिन्होंने बहिश्त तलब करी थी उन्होंने दुनियावी कामों के साथ साथ इबादतो रियाज़त को अव्वलीन तर्जीह दी, हूरोक़सूर की लालच में इबादत गाहों की तरफ़ दौड़ लगाई और जन्नत हासिल करने में कामयाब हो गये, लेकिन इनमें से कुछ लोग इबादत में सुस्त रहे चूंकि जन्नत इनकी क़िस्मत में थी इसलिये कोई बहाना इनके काम आ गया लेकिन वह जन्नत का वह मुक़ाम हासिल न कर सके जो नेकूकारों ने हासिल किया। इन ही के लिये अल्लाह ने फ़रमाया : ''क्या इन लोगों ने समझ रखा है, हम इनको नेकूकारों के बराबर कर देंगे!'' क्योंकि जन्नत के सात (7) दर्जे हैं। आ़म लोगों को हिदायत नबियों, किताबों, गुरूओं, वलियों के ज़रिए होती है। इन्हें उस मज़हब में दाख़िला और कलमा ज़रूरी है। और ख़्वास बग़ैर मज़हब और बग़ैर कुतुब के भी अल्लाह की नज़रे रहमत में आ जाते हैं। यअ़नी इनको हिदायत नूर से होती है।

अल्लाह जिन्हें चाहता है नूर से हिदायत देता है। (अल्कुरान)

कहते हैं कि बहिश्त में दाख़िले के लिये कलमा ज़रूरी है, बहिश्त में इन जिस्मों को नहीं रूहों को जाना है और दाख़िले के वक़्त पढ़ना है तो फिर ये रूहें मुक़ामे दीद में जाकर किसी भी वक़्त कलमा पढ़ लेंगी। मरने के बाद ही सही जैसे हज़ूर पाक की वालिदह और वालिद और चचा की रूहों को मरने के बाद ही कलमा पढ़ाया गया था। बल्कि ख़्वासुलख़ास रूहें ऊपर से ही कलमा पढ़कर यअ़नी इक़रार तस्दीक़ करके ही आती हैं। हज़ूर पाक ने फ़रमाया था कि ''मैं दुनिया में आने से पहले भी नबी था'' ये इल्फ़ाज़ रूह के ही रूहों के लिये हो सकते हैं जिस्म तो इस दुनिया में मिला। क़ौमें हों तब सरदार होते हैं! उम्मती हों तब नबी होते हैं, वरना इनका क्या काम? फिर इन ही लोगों को मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब में भेजा जाता है, कोई बाबा फ़रीद के रूप में

और कोई गुरू नानक के रूप में ज़ाहिर होते हैं। अल्लाह को पाने वाली रूहें मज़हब नहीं देखतीं बल्कि जिसकी अल्लाह से रसाई देखती हैं उसके साथ लग जाती हैं। ग़ौस अली शाह जो एक वली हो गुज़रे हैं तज़करा-ए-ग़ौसिया में लिखा है कि मैंने हिन्दू योगियों से भी फ़ैज़ हासिल किया है। यह रम्ज़ न समझ कर मुस्लिम उलमा ने ग़ौस अली शाह पर वाजिबुल क़त्ल के फ़तवे लगाए और मुसलमानों को कहा कि : जिसके भी घर में यह किताब हो उसे जला दिया जाये, लेकिन वह किताब बच बचाकर अभी भी हिन्दुस्तान, पाकिस्तान में मौजूद और मक़बूल है।

कुछ क़ौमों ने नबियों को तसलीम किया और कुछ ने नबियों को झुटलाया। झुटलाने वाली क़ौमों में भी रब ने इन ही के मज़हब के मुताबिक़ उन लोगों को भेजा और उन्होंने इनको गुनाहों से बचाने की तअ़लीम दी और इन ही की इबादत और रसमो रिवाज के ज़रिए इनका रूख रब की तरफ़ मोड़ने की कोशिश की। अमन और रब की मुहब्बत का सबक़ दिया। अगर यह लोग न होते तो आज हर मज़हब एक दूसरे के लिये ख़ूँख़्वार ही बन जाता, ऐसी रूहों को दुनिया में ख़िज़र (विष्णु महाराज) से भी रहनुमाई मिलती है जो हर मज़हब का भेद जानते हैं।

तक़्वा किन लोगों के लिये है?

इल्मुलयक़ीन :- यह लोग दुनियादार होते हैं। मुक़ामे शुनीद होता है। इल्म के ज़रिए यक़ीन रखते हैं। इनका ईमान सुनी-सुनाई बातों पर होता है। भटक भी जाते हैं। इन्हें तक़्वे से नहीं बल्कि मेहनत से मिलता है। ख़्वाह रिज़्के हलाल से कमायें या हराम से!

ऐनुलयक़ीन :- यह लोग तारिकुद्दुनिया कहलाते हुए भी दुनिया वालों के साथ ही रहते हैं लेकिन इनका रूख और दिल रब की तरफ़ होता है। इनको अक्सर रहमानी मनाज़िर भी दिखाये जाते रहते हैं। इनका मुक़ाम दीद होता है। इन्हें भी जाइज़ मेहनत से मिलता है। नाजाइज़ से इन्हें नुक़्सान होता है।

हक़्कुलयक़ीन :- इनका मुक़ाम रसीद होता है यअ़नी अल्लाह की तरफ़ से कोई मर्तबह मिल जाता है और अल्लाह की नज़रे रहमत में आ जाते हैं। इन्हें फ़ारिगुद्दुनिया कहते हैं। दुनिया में रहकर भी जाइज़ो नाजाइज़ धन्दे से दूर रहते हैं। यह अगर जंगलों में भी बैठ जायें तो अल्लाह इनको वहाँ भी रिज़्क़ पहुंचाता है। येह तक़्वे की मंज़िल है। इब्तिदाई लोग तक़्वे की बात ज़रूर करते हैं मगर इसमें कामयाब नहीं होते।

तक़दीर

तक़दीर दो तरह की होती है।

1- अज़ल......और......2- मुअ़ल्लक़।

बअ़ज़ लोग कहते हैं कि जब मुक़द्दर में रिज़्क़ लिख दिया तो इसके लिये घूमना फिरना क्या? मख़दूम जहानियाँ ने कहा कि रिज़्क़ को हासिल करने के लिये घूमना फिरना भी मुक़द्दर में लिख दिया।

मिसाल के तौर पर जैसा कि आप के लिये फूलों का गुलदस्ता छत पर रख दिया गया है। ''यह तक़दीरे अज़ल है''। इसे हासिल करने के लिये आपको सीढ़ियों के ज़रिए छत पर पहुंचना है। ''यह तक़दीरे मुअ़ल्लक़ है'' जो आपके अख़्तियार में है और इसी मुअ़ल्लक़ का हिसाब किताब होगा, न कि तक़दीरे अज़ल का! आप छत पर पहुंचेंगे और अपना नसीब हासिल कर लेंगे। अगर आपने सुस्ती की और छत तक न पहुंचे तो इससे महरूम हो जायेंगे। दूसरा शख़्स जिसके मुक़द्दर में छत पर गुलदस्ता नहीं है वह अगर सीढ़ियों के ज़रिए या सख़्त मेहनत से भी छत पर पहुंच जाये तो वह महरूम ही है।

तीसरी अरवाहः- जिन्होंने न दुनिया तलब करी और न ही जन्नत की तलबगार हुईं। सिर्फ़ रब के नज़ारे को देखती रहीं। उन्होंने दुनिया में आकर रब की तलाश के लिये अपना सबकुछ क़ुर्बान कर दिया। कई बादशाहतों को भी छोड़कर उसको पाने के लिये भूखे प्यासे जंगलों में रहते हत्ताकि किसी ने दरियाओं में भी कितने साल बैठकर गुज़ारे, कामयाबी के बाद यही वलीयुल्लाह कहलाये और अल्लाह की तरफ़ से मुख़्तलिफ़ ओहदों और मुख़्तलिफ ड्यूटियों पर फ़ाइज़ हुए और दोज़ख़ियों के लिये भी दवा और दुआ बन गये, कि

इक़बाल...... निगाहे मर्द मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें।

इस लिये अरज़ी अरवाह के हर जन्म में मुर्शिद ''गुरू'' का चश्मदीद होना लाज़मी है। पिछले जन्म या ख़ान्दान के ज़माने के मुर्शिद मौजूदह जिस्म से मुबर्रा हो जाते हैं। जैसा कि नबूवत भी ऊलुलअ़ज़्म मुर्सल के आने के बाद मुबर्रा हो जाती है। जैसा कि मूसा कलीमुल्लाह ऊलुलअ़ज़्म थे। मूसा कलीमुल्लाह के बाद ''जितने भी नबी आये'' ईसा रूहुल्लाह के आने के बाद उनका दीन भी कल्अ़दम क़रार दिया गया। और ईसा रूहुल्लाह से हज़ूर पाक तक जितने भी नबी ख़ित्तए अ़रब के अ़लावह आये वो हज़ूर पाक सल. के आने पर सब कल्अ़दम क़रार दिये गये। लेकिन ऊलुलअ़ज़्म मुर्सल के दीन का सिलसिला जारी रहा और आजतक जारी है। जिसमें आदम सफ़ीउल्लाह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, मूसा कलीमुल्लाह, ईसा रूहुल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह हैं और हर वली इनके नक़्शे क़दम पर है। क्योंकि इंसान के अंदर सीने के पाँचों लताइफ़ का तअ़ल्लुक़ पाँचों रसूलों से है इस वजह से इनकी नबूवत और फ़ैज़े रूहानी क़यामत तक रहेगा। यह जो कहते हैं कि बग़ैर कलमा पढ़े कोई जन्नत में नहीं जायेगा। इसका मक़सद किसी एक नबी का कलमा नहीं है। बल्कि किसी भी ऊलुलअ़ज़्म नबी के दीन और कलमा की तरफ़ इशारा है। तब ही हज़ूर पाक ने फ़रमाया भी था कि मैं उन ऊलुलअ़ज़्म मुर्सल की किताबों या दीन को झुटलाने के लिये नहीं आया बल्कि इस्लाह के लिये आया हूँ। यअ़नी किताबों में जो रद्दोबदल हो गया था।

आदम सफ़ीउल्लाह का सिलसिला अब भी जारी है जो लोग सिर्फ़ क़ल्बी ज़िक्र में हैं रब के नाम पर गिर्याज़ारी और आ़जिज़ी रखते हैं, तौबा करते और गुनाहों से बचने की कोशिश करते हैं यही इब्तिदाई दीन, इब्तिदाई नबूवत और इब्तिदाई इबादत थी। ग़ौस या हर वली का क़दम किसी नबी के क़दम पर होता है और इनका क़दम आदम सफ़ीउल्लाह के क़दम पर है। मुजद्दिद अल्फ़ सानी ने कहा था कि मेरा क़दम मूसवी है। जबकि क़लंदरों का एक सिलसिला ईस्वी है। शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी मुहम्मदी मशरब से तअ़ल्लुक़ रखते हैं।

सोच तो ज़रा तू किस आदम की औलाद में से है?

कुछ इल्हामी किताबों में लिखा है कि इस दुनिया में चौदह (14) हज़ार आदम आ चुके हैं। और किसी ने कहा है कि आदम सफ़ीउल्लाह चौदहवाँ और आख़िरी आदम हैं। इस दुनिया में वाक़ई बहुत से आदम हुए हैं। जब सफ़ीउल्लाह को मिट्टी से बनाया जा रहा था तो फ़रिशतों ने कहा था कि यह भी दुनिया में जाकर दंगा फ़साद करेगा। यअ़नी फ़रिशते पहले वाले आदमों के हालात से बाख़बर थे वरना उन्हें क्या ख़बर कि अल्लाह क्या बना रहा है और यह जाकर क्या करेगा? लौहे महफ़ूज़ में मुख़्तलिफ़ ज़बानें, मुख़्तलिफ़ कलमे, मुख़्तलिफ़ जन्त्र मन्त्र, मुख़्तलिफ़ अल्लाह के नाम, मुख़्तलिफ़ सूरतें हत्ताकि जादू का अमल भी दर्ज है जोकि हारूत मारूत दो फ़रिशतों ने लोगों को सिखाया था और बतौर सज़ा वह दोनों फ़रिश्ते मिस्र के एक शहर बाबुल के कुएँ में उलटे लटके हुए हैं।

हर आदम को कोई ज़बान सिखाई फिर इनकी क़ौम में नबियों को हिदायत के लिये भेजा। तब ही कहते हैं कि दुनिया में सवा लाख नबी आये, जबकि आदम सफ़ीउल्लाह को आये

हुए छः (6) हज़ार साल हुए हैं। अगर हर साल एक नबी आता तो छः हज़ार ही होते। कुछ अ़र्सा बाद इन अक्वाम को इनकी नाफ़र्मानी की वजह से तबाह किया। जैसा कि आसारे क़दीमह के शहरों का बाद में नमूदार होना और वहाँ की लिखी हुई ज़बानों को किसी का भी न समझना। और किसी क़ौम को पानी के ज़रिए ग़र्क़ किया। और इनमें से नूह तूफ़ान की तरह कुछ अफ़राद उन ख़ित्तों में बच भी गये। आख़िर में सफ़ीउल्लाह को उन सबसे बेहतर बनाकर अ़रब में भेजा गया और बड़े बड़े नबी भी इस आदम अलै. की औलाद से पैदा हुए। मुख़्तलिफ़ आदमों की मुख़्तलिफ़ ज़बानें उनकी बची हुई क़ौमों में रहीं, जब आख़िरी आदम आये तो उनको सुर्यानी ज़बान सिखाई गई। जब आप की औलाद ने दूर दराज़ की सैयाहत की तो पहले वाली क़ौमों से भी मुलाक़ात हुई, और किसी ने अच्छी जगह या सब्ज़ह देखकर उनके साथ ही बूदोबाश अख़्तियार कर ली। अ़रब में सुर्यानी ही बोली जाती थी। फिर यह अक्वाम के मेल जोल से अ़रबी, फ़ारसी, लातीनी, संस्कृति वग़ैरह से होती हुई अंग्रेज़ी से जा मिली। मुख़्तलिफ़ जज़ीरों में मुख़्तलिफ़ आदमों की औलाद मुक़ीम थी। इनमें से एक ख़ानाबदोश भी आदम था जिसकी औलाद आज भी मौजूद है और जिसके ज़रिए मुख़्तलिफ़ क़ौमें दर्याफ़्त हुईं। समुन्दर पार के जज़ीरों वाली क़ौमें एक दूसरे से बेख़बर थीं। इतने दूरदराज़ समुन्दरी सफ़र न तो घोड़ों से किया जा सकता था और न ही चप्पू वाली कश्तियाँ पहुंचा सकती थीं। कोलम्बस मशीनी समुन्दरी जहाज़ बनाने में कामयाब हुआ जिसके ज़रिए वह पहला शख़्स था जो अमरीका के ख़ित्ते को पहुंचा। किनारे पर लोगों को देखा जो सुर्ख़ थे उसने समझा और कहा शायद इण्डिया आ गया है और वह इण्डियन हैं। तब ही उस क़ौम को रेड इण्डियन Red Indian कहते हैं जो नार्थ डकोटा (North Dakota) की रियासत में अब भी मौजूद हैं।

रेड इण्डियन के एक क़बीले के सरदार से पूछा कि आपका आदम कौन है? उसने जवाब दिया कि हमारे मज़हब के मुताबिक़ हमारा आदम एशिया में है जिसकी बीवी का नाम हव्वा है लेकिन हमारी तारीख़ के मुताबिक़ हमारा आदम साउथ डकोटा South Dakota की एक पहाड़ी से आया था। उस पहाड़ी की निशानदेही अब भी मौजूद है। लोग कहते हैं कि अंग्रेज़ और अमरीकन ठंडे मौसम की वजह से गोरे हैं लेकिन ऐसा नहीं है। किसी काले आदम की नस्ल भी इन ख़ित्तों में क़दीमी मौजूद है वह आजतक गोरे न हो सके यही वजह है कि इंसानों के रंग, हुलिये, मिज़ाज, दिमाग़, ज़बानें, खुराक एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ हैं। आदम सफ़ीउल्लाह की अवलाद का सिलसिला वस्त एशिया तक ही रहा। यही वजह है कि वस्त एशिया वालों के हुलिये एक दूसरे से मिलते हैं। कहते हैं कि आदम सफ़ीउल्लाह (शंकर जी) श्रीलंका में उतरे, फिर वहाँ से अ़रब पहुंचे और इसके बाद आप अ़रब में ही रहे और सर्ज़मीने अ़रब में ही आपकी क़ब्र मौजूद है तो फिर श्रीलंका में आपके उतरने और क़दमों की निशानदेही किसने की? जो अभी तक महफ़ूज़ है। इसका मक़सद आपसे पहले ही वहाँ कोई क़बीला आबाद था। जो क़ौमें ख़त्म कर दी गई हैं उनपर नबूवत और विलायत भी ख़त्म हो गयी और बाक़ीमान्दह लोग इन हस्तियों से महरूम होकर कुछ अ़र्सा बाद भटक गये। ज्यों-ज्यों ये ख़ित्ते दर्याफ़्त होते गये एशिया से वली पहुंचते गये और अपने अपने मज़ाहिब की तअ़लीम देते रहे और आज सब ख़ित्तों में एशियाई दीन फैल गया। ईसा यूरोशलम, मूसा बैतुलमुक़द्दस, हज़ूर पाक मक्का, जबकि नूह और इब्राहीम का तअ़ल्लुक़ भी अ़रब से ही था।

कुछ नस्लें अ़ज़ाबों से तबाह हुईं, कुछ की शक्लें रीछ, बंदरों की तरह हुईं। कुछ रहे सहे लोग ख़ौफ़ ज़दह होकर रब की तरफ़ मायल हुए। और कुछ रब को क़हहार समझकर उससे मुतनफ़्फ़र हो गये और उसके किसी भी क़िस्म के हुक्म की नाफ़र्मानी की और कहने लगे कि ''रब वग़ैरह कुछ भी नहीं, इंसान एक कीड़ा है, दोज़ख़ बहिश्त बनी बनाई बातें हैं''। मूसा के ज़माने में भी जो क़ौम बंदर बन गई थी उन्होंने यूरोप का रूख़ किया था। उस वक़्त की हामिलह

माओं ने बाद में बंदरिया होने की सूरत में भी जन्म इंसानी दिया था। वह क़ौम अब भी मौजूद है, वह ख़ुद कहते हैं कि हम बंदर की औलाद में से हैं। जो क़ौम रीछ की शक्ल में तब्दील हुई थी उन्होंने अफ़्रीका के जंगलों की तरफ़ रूख़ कर लिया था। उस वक़्त की हामिलह माओं के पेट में तो इंसानी बच्चे थे जिनके ज़रिए बाद में नस्ल चली (मम्म) कहते हैं। जिस्म पर लंबे-लंबे बाल होते हैं। मादा ज़्यादह होती हैं। इंसानों को उठाकर ले भी जाती हैं। इन पर मज़हब का रंग नहीं चढ़ता लेकिन आदमीयत की वजह से शर्मगाहों को पत्तों के ज़रिए छुपाया हुआ होता है।

किसी और आदम को किसी ग़लती की वजह से एक हज़ार साल की सज़ा मिली थी उसे सांप की शक्ल में तब्दील कर दिया गया था। अब उसकी बची हुई क़ौम जो एक ख़ास क़िस्म के सांप के रूप में है। जन्म के हज़ार साल बाद इंसान भी बन जाती है। इसे **रोहा** कहते हैं। तारीख़ में है कि एक दिन सिकन्दरे अअ़ज़म शिकार के लिये किसी जंगल से गुज़रा, देखा कि एक खूबसूरत औ़रत रो रही है। पूछने पर उसने बताया कि मैं चीन की शहज़ादी हूँ अपने शौहर के हमराह शिकार को निकले थे लेकिन शौहर को शेर खागया, मैं अब तनहा रह गई हूँ। सिकन्दर ने कहा : ''मेरे साथ आओ! मैं तुम्हें वापस चीन भेजवा दूँगा'', औ़रत ने कहा : ''शौहर तो मर गया, मैं अब वापस जाकर क्या मुंह दिखाऊंगी''। सिकन्दर इसे घर ले आया और इससे शादी कर ली। कुछ महीनों बाद सिकन्दर के पेट में दर्द शुरू हो गया। हर क़िस्म का इलाज कराया मगर कोई अफ़ाक़ह न हुआ। दर्द बढ़ता गया। हकीम आ़जिज़ आ गये। एक सपेरा भी सिकन्दर के इलाज के लिये आया। उसने सिकन्दर को अलहिदा बुलवाकर कहा : ''मैं आपका इलाज कर सकता हूँ , लेकिन मेरी कुछ शर्तें हैं, अगर चन्द ही दिनों में मेरे इलाज से शिफ़ा न हुई तो बेशक मुझे क़त्ल करा देना, आजकी रात खिचड़ी पकवाओ, नमक ज़रा ज़्यादह हो, दोनों मियाँ बीवी पेट भरकर खाओ, कमरे को अंदर से ताला लगाओ कि दोनों में से कोई बाहर न जा सके, तुमको सोना नहीं, लेकिन बीवी को ऐसा लगे कि तुम सो रहे हो, पानी का क़तरा भी अंदर मौजूद न हो''। सिकन्दर ने ऐसा ही किया। रात के किसी वक़्त बीवी को प्यास लगी, देखा पानी का बर्तन ख़ाली है, फिर दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, देखा कि ताला है, फिर शौहर को देखा, महसूस हुआ कि बेख़बर सो रहा है, फिर सपनी बनके नाली के सुराख़ से बाहर निकल गई। पानी पीकर फिर सपनी की सूरत में दाख़िल होकर औ़रत बन गई। सिकन्दरे अअ़ज़म यह सारा माजरा देख रहा था। सुबह सपेरे को सबकुछ बताया, उसने कहा : ''तेरी बीवी नागिन है जो हज़ार साल बाद रूप बदलता है, उसका ज़हर पेट के दर्द का बाइस बना''। फिर उस औ़रत को सैर के बहाने समुन्दर में ले गये और जिस जगह फेंका वह निशान अब भी मौजूद है। इसे सद्दे सिकन्दरी कहते हैं। इनकी नस्ल भी इस दुनिया में मौजूद है। आ़म सांपों के कान नहीं होते लेकिन इस नस्ल वाले सांप के कान होते हैं। पता नहीं किस आदम का क़बीला चीन के पहाड़ों में बन्द है। उनके इस ख़ित्ते में दाख़िलह् को रोकने के लिये ज़ुलक़र्नैन ने पत्थरों की दीवार बना दी थी। इनके लंबे लंबे कान हैं, एक को बिछा लेते हैं और दूसरे को ओढ़ लेते हैं, इन्हें जूज माजूज कहते हैं। साइन्स ने काफ़ी ख़ित्ते तलाश कर लिये हैं लेकिन अभी भी काफ़ी ख़ित्ते दर्याफ़्त करने बाक़ी हैं। हिमालय के पीछे भी बर्फ़ानी इंसान मौजूद हैं। बहुत से इंसान जंगलों में भी मौजूद हैं उनकी ज़बान उनके अलावह कोई नहीं जानता। वह भी अपने आदम के तरीक़ह पर इबादत करते हैं और ज़ाब्तए हयात के लिये इनका भी सरदारी निज़ाम क़ायेम है। इन बर्रे अअ़ज़मों के अलावह और भी बड़ी ज़मीनें हैं। जैसा कि चांद, सूरज, मुश्तरी, मरीख़ वग़ैरह, वहाँ भी आदम आये लेकिन वहाँ क़यामतें आ चुकी हैं। कहीं आक्सीजन को रोक कर और कहीं ज़मीन को तहस नहस कर दिया गया।

****

मरीख़ में इंसानी ज़िन्दगी अभी भी मौजूद है जबकि सूरज में भी आतिशी मख़लूक़ आबाद है

कहते हैं एक ख़लाबाज़ जब चांद में उतरा। उसने ऊपर के सैयारों की तहक़ीक़ करना चाही तो उसे अज़ान की आवाज़ भी सुनाई दी जिससे वह मुतासिर होकर मुसलमान हो गया था। वह मरीख़ की दुनिया थी जहाँ हर मज़हब के लोग रहते हैं। हमारे साइंसदान अभी मरीख़ पर पहुंच नहीं पाये जबकि वह लोग कई बार इस दुनिया में आ चुके हैं। और बतौर तजुर्बा यहाँ के इंसानों को भी अपने साथ ले गये। उनकी साइंस और ईजादें हमसे बहुत आगे हैं। हमारे सैयारे या साइंसदान अगर वहाँ पहुंच भी गये तो उनकी गिरिफ़्त से आज़ाद नहीं हो सकते।

एक आदम को अल्लाह ने बहुत इल्म दिया था और इसकी औलाद इल्म के ज़रिए बैतुल्मामूर तक जा पहुंची थी। यअ़नी जो हुक्म अल्लाह फरिश्तों को देता, नीचे वह सुन लेते थे। एक दिन फरिश्तों ने कहा : 'ऐ अल्लाह यह क़ौम हमारे मुआमिले में मुदाख़िलत बन गई है। हम जब कोई काम करने दुनिया में जाते हैं तो यह पहले ही उसका तोड़ कर चुके होते हैं''। अल्लाह ने जिब्राईल से कहा : ''जाओ इनका इम्तिहान लो!''। एक बारह साल का बच्चा बकरियाँ चरा रहा था। जिब्राईल ने उससे पूछा : क्या तुम भी कोई इल्म रखते हो? उसने कहा : पूछो!। जिब्राईल ने कहा : बताओ इस वक़्त जिब्राईल किधर है? उसने आँखें बन्द कीं और कहा : आसमानों पर नहीं है। फिर किधर है? उसने कहा : ज़मीनों पर भी नहीं है। जिब्राईल ने कहा : फिर किधर है? उसने आँखें खोल दीं और कहा : मैंने चौदह तबक़ों में देखा, वह कहीं भी नहीं है, या मैं जिब्राईल हूँ या तू जिब्राईल है। फिर अल्लाह ने फरिश्तों को कहा : इस क़ौम को सैलाब़ के ज़रिए ग़र्क़ किया जाये। इन्होंने यह फ़र्मान सुन लिया। लोहे और शीशे के मकानात बनाना शुरू कर दिये, फिर ज़ल्ज़ले के ज़रिए उस क़ौम को ग़र्क़ किया गया। उस वक़्त उस ख़ित्ते को ''कालदा'' और अब ''यूनान'' बोलते हैं।

उन्होंने रूहानी इल्म के ज़रिए और अब हमारे साइंसदान, साइंसी इल्म के ज़रिए रब के कामों में मुदाख़िलत कर रहे हैं। इन्हें डराने के लिये छोटी मोटी तबाही और मुकम्मल तबाही के लिये एक सैयारे को ज़मीन की तरफ़ भेज दिया गया है। जिसका गिरना बीस पचीस 20-25 साल तक मुतवक़्क़ो है और वह दुनिया का आख़िरी दिन होगा। उसका एक टुकड़ा गुज़िश्तः दो बरसों में मुश्तरी पर गिर चुका है। साइंसदानों को भी इसका इल्म हो चुका है और यह उसके गिरने से पहले चांद पर या किसी और सैयारे पर रिहाइश पज़ीर होना चाहते हैं। जबकि चांद पर प्लाटों की बुकिंग भी हो चुकी है। यह जानते हुए भी कि चांद में इंसानी ज़िन्दगी के आसार यअ़नी हवा, पानी और सब्ज़ह नहीं है! फिर तगोदो का मक़सद क्या है? रहा सवाल तहक़ीक़ का! चांद, मुश्तरी पर पहुंच कर भी इंसानियत का क्या फ़ाइदह हुआ? क्या कोई ऐसी दवा या नुसख़ा दराज़िये उम्र या मौत की शिफ़ा का मिला? अगर मरीख़ की मख़लूक़ तक पहुंच भी गये तो वहाँ की आक्सीजन और यहाँ की आक्सीजन की वजह से एक-दूसरी जगह रहना मुहाल है बस बेकार दौलत ज़ायअ़ की जा रही है अगर वही दौलत रूस और अमरीका ग़रीबों पर ख़र्च कर दे तो सब खुशहाल हो जायें। आदमियत के फ़र्क़ की वजह से एक दूसरे को तबाह करने के लिये एटम बम भी बनाये जा रहे हैं जबकि बमों के बग़ैर भी दुनिया को तबाह ही होना है।

****

आसमान पर रूहें हद से ज़्यादह बन गई थीं :

मुक़र्रिब रूहें अगली सफ़ों में थीं। आ़म रूहों को इस दुनिया में बनाये हुए आदमों की क़ौमों में भेजा। जो कोई काली, कोई सफेद, कोई पीली और कोई लाल मिट्टी से बनाये गये थे। इन्हें जिब्राईल और हारूत मारूत के ज़रिए इ़ल्म सिखाया गया। जब ज़मीन पर मिट्टी से आदम बनाये जाते, ख़ब्बीस जिन्न भी मौक़ा पाकर उनके और उनकी औलाद के जिस्मों में दाख़िल हो जाते और उन्हें अपनी शैतानी गिरिफ़्त में लेने की कोशिश करते। फिर उनकी क़ौम के नबी, वली और उनकी सिखाई हुई तअ़लीमात छुटकारे का ज़रिअ़ह बनती बेशुमार आदम जोड़ों की शक्ल में बनाये गये जिनसे औलाद का सिल्सिला जारी हुआ। लेकिन कई बार सिर्फ़ अकेली औ़रत को बनाया गया और "अमरेकुन" से उसकी औलाद हुई। वह क़ौमें भी इस दुनिया में मौजूद हैं। इस क़बीले में सिर्फ़ औ़रतें ही सरदार होती हैं और वह मुअन्नस की औलाद होने की वजह से रब को भी मुअन्नस समझते हैं और खुद को फरिश्तों की औलाद तसव्वुर करते हैं, चूंकि उनके मुअन्नस आदम की शादी 'या मर्द के' बग़ैर ही बच्चे हुए थे। यही रस्म उनमें अब भी चली आ रही है। इन क़बीलों में पहले औ़रत के किसी से भी बच्चे हो जाते हैं और बाद में किसी से भी शादी हो जाता है और वह इसको मअ़यूब नहीं समझते। रूहों के इक़रार, क़िस्मत, और मरातिब की वजह से उन ही जैसे आदम बनाकर उन ही जैसी रूहों को नीचे भेजा गया। यही वजह है कि उनके लिये कोई ख़ास दीन तरतीब नहीं दिया गया। अगर इनमें नबी आये भी तो बहुत कम ने इनको तस्लीम किया, बल्कि नबियों की तअ़लीम का उलट किया, बजाये अल्लाह के चांद, सितारों, सूरज, दरख़्तों, आग हत्ताकि सांपों को भी पूजना शुरू कर दिया। आख़िर में आदम सफ़ीउल्लाह को जन्नत की मिट्टी से जन्नत में ही बनाया गया ताकि अ़ज़्मत और फ़ज़ीलत में सबसे बढ़ जाये और ख़बीसों से भी महफ़ूज़ रहे, क्योंकि जन्नत में ख़बीसों की रसाई न थी। अज़ाज़ील अपने इ़ल्म की वजह से पहचान गया था, जो इबादत की वजह से सब फरिश्तों का सरदार बन गया था और क़ौमे जिन्नात से था, आदम के जिस्म पर हसद से थूका था और थूक के ज़रिए ख़बीसों जैसा जरासीम उनके जिस्म में दाख़िल हुआ जिसे नफ़्स कहते हैं और वह भी आदम की औलाद के विर्से में आ गया। उसी के लिये हज़ूर ने फर्माया : "जब इंसान पैदा होता है तो एक शैतान जिन्न भी उसके साथ पैदा होता है"।

फरिश्तों और मलाइका में फ़र्क़ है। मलकूत में फरिश्ते होते हैं जिनकी तख़्लीक़ रूहों के साथ हुई। मलकूत से ऊपर जबरूत की मख़्लूक़ को मलाइका कहते हैं। जो रूहों के अमरेकुन से पहले के हैं रब की तरफ़ से आदम सफ़ीउल्लाह को सिज्दा का हुक्म हुआ। जबकि इससे पहले न ही कोई आदम बहिश्त में बनाया गया था और न ही किसी आदम को फरिश्तों ने सिज्दा किया था। अज़ाज़ील ने हुज्जत करी, सिज्दा से इनकारी हुआ तो उसपर लअ़नत पड़ी और उसने सफ़ीउल्लाह की औलाद से दुश्मनी शुरू कर दी। जबकि पहले आदमों की क़ौमें इसकी दुश्मनी से महफ़ूज़ थीं। उनके बहकाने के लिये ख़बीस जिन्न ही काफ़ी थे। चूंकि शैतान सब ख़बीसों से ज़्यादह पावरफुल था, उसने सफ़ीउल्लाह की औलाद को ऐसे क़ाबू किया और ऐसे जराइम सिखाये जिस की वजह से दूसरी क़ौमें इन एशियाइयों से मुतनफ़्फ़र होने लगीं और अ़ज़्मते आदम की ही वजह से जिन लोगों को रब की तरफ़ से हिदायत मिली इतने ख़ुदा रसीदह और अ़ज़्मत वाले हो गये कि दूसरी क़ौमें हैरत करने लगीं। सबसे बड़ी आस्मानी किताबें तौरेत,

ज़बूर, इंजील और कुरान इन्हीं पर नाज़िल हुईं जिनकी तअ़लीम, फ़ैज़ और बरकत से एशियाई दीन पूरी दुनिया की अक़वाम में फैल गया। आदम की अभी रूह भी डाली नहीं गई, फरिश्ते समझ गये थे कि इसको भी दुनिया के लिये बनाया जा रहा है। क्योंकि मिट्टी के इंसान ज़मीन पर ही होते हैं। फिर किसी बहाने ज़मीन पर भेज दिया गया। अज़ली काम अल्लाह की तरफ़ से होते हैं लेकिन इल्ज़ाम बन्दों पर लग जाता है। अगर आदम को बग़ैर इल्ज़ाम के दुनिया में भेजा जाता तो वह दुनिया में आकर शिकवा शिकायत ही करते रहते, तौबा ताइब और गिर्याज़ारी क्यों करते?

(1) रोज़े अज़ल वाली जहन्नमी रूह ग़ैर मज़हब के घर पैदा हो जायें। उसे काफ़िर और काज़िब कहते हैं। यही लोग मुन्किरे खुदा, दुश्मने अम्बिया और दुश्मने औलिया होते हैं। मुतकब्बिर, सख़्त दिल और मख़्लूक़े खुदा को आज़ार पहुंचा कर खुश होते हैं। दूसरा दर्जा मज़हब में आकर भी मज़हब से दूर होता है। यही रूह अगर किसी मज़हबी दीनदार घराने में पैदा हो जाये तो उसे मुनाफ़िक़ कहते हैं।

(2) यही लोग गुस्ताख़े अम्बिया, जलीसे अवलिया और मज़ाहिब में फ़ितना होते हैं। इनकी इबादत भी इब्लीस की तरह बेकार होती है। इन्हें मज़हब जन्नत में ले जाने की कोशिश करता है लेकिन मुक़द्दर दोज़ख़ की तरफ़ खींचता है। चूंकि नबियों, वलियों की इम्दाद से महरूम होते हैं इसलिये शैतान और नफ़्स के बहकावे में आ जाते हैं कि तू इतना इल्म जानता है और इतनी इबादत करता है तुझमें और नबियों में क्या फ़र्क़ है? फिर वह अपना बातिन देखे बग़ैर खुद को नबी जैसा समझना शुरू हो जाते हैं और वलियों को अपना मुहताज समझते हैं। फिर रूहानियत और करामतों के इक़रारी नहीं होते बल्कि उसी अ़मल के इक़रारी होते हैं जिनकी उनमें खुद की सलाहियत होती है, हत्ता कि मुअ़जज़ों को भी जादू कहकर झुटला देते हैं। इब्लीस की ताक़त को मान लेते हैं लेकिन अम्बिया व औलिया की ताक़त को मान लेना इनके लिये मुश्किल है।

(3) अज़ल वाली बहिश्ती रूह अगर ग़ैर मज़हब या गन्दे माहौल में आ जाये तो उसे मअ़ज़ूर कहते हैं। मअ़ज़ूर के लिये मुआफ़ी और बख़्शिश का इम्कान होता है यही रूहें सिराते मुस्तक़ीम की तलाश में, और दलदल से निकलने के लिये वलियों का सहारा ढूँढती हैं। नर्म दिल, आ़जिज़ और सख़ी होते हैं।

(4) अगर बहिश्ती रूह किसी आस्मानी मज़हब और दीनी घराने में पैदा हो जाये तो उसे सादिक़ और मोमिन कहते हैं। यही लोग इबादत व रियाज़त से अल्लाह का कुर्ब हासिल करके उसकी विरासत के हक़दार हो जाते हैं।

****

तसव्वुफ़ में अहमियत क़ल्ब को है

किसी ने ज़र्बों, किसी ने कबड्डी, किसी ने डान्स, किसी ने दीवारें बनाईं और ढाईं और किसी ने वर्ज़िश के ज़रिए दिल की धड़कन को उभारा फिर इसके साथ अल्लाह अल्लाह मिलाने में आसानी हो गई और बतद्रीज अल्लाह अल्लाह सब लताइफ़ तक ख़ुद ही पहुंच गया। और कुछ लोग गहराई में जाये बग़ैर इनकी नक़ल करने लगे। उन्होंने भी अल्लाह अल्लाह के साथ डान्स शुरू कर दिया। धड़कनों के साथ अल्लाह अल्लाह तो न समझ और न मिला सके अल्बत्तह उनकी रूहे हैवानी जिसका तअ़ल्लुक़ उछल कूद से है, अल्लाह के नाम से मानूस हो गई। इसी तरह मौसीक़ी के साथ अल्लाह अल्लाह मिलाने से रूहे नबाती भी मानूस और ताक़त्वर होती है। मौसीक़ी रूहे नबाती की ग़िज़ा है। अमरीका में कुछ फसलों पर मौसीक़ी के ज़रिए तजुर्बा किया गया। एक ही जैसी फ़सल एक ही जैसी ज़मीन पर उगाई गई। एक में दिन रात मौसीक़ी और दूसरी को ख़ामोश रखा गया। जबकि मौसीक़ी वाली फ़सल दूसरी से नशोनुमा में बहुत बेहतर हुई।

नफ़्स बहुत मोज़ी है। पाक होने के बाद भी बहानेख़ोर है। जबकि इसकी पसन्द साज़ो आवाज़ है। कुछ लोगों ने साज़ के ज़रिए नफ़्स को मुतवज्जह करके उसका रूख़ अल्लाह की तरफ़ मोड़ने की कोशिश करी। कुछ लोगों ने गिटार के साथ अल्लाह अल्लाह मिलाया और न सही कम अज़ कम कान की इबादत तक पहुंच गये। मुझे एक गिटार वाले ने क़िस्सा सुनाया था कि मैं शौक़िया फ़ारिग़ वक़्त गिटार की तार के साथ अल्लाह अल्लाह मिलाता रहता हूँ कभी कभी जब नींद से बेदार होता हूँ तो मेरे अन्दर से उसी तरह अल्लाह अल्लाह की आवाज़ आ रही होती है। ऐसे लोग दूसरे अश्ग़ाल यअ़नी गाने बजाने वालों और तमाशाइयों से बेहतर हो गये। लेकिन किसी विलायत के मर्तबह तक न पहुंच सके। यह लगन, तड़प और तलाश वाले लोग होते हैं और किसी कामिल के ज़रिए किसी मन्ज़िल तक पहुंच जाते हैं। इस्लाम में भी और दूसरे मज़ाहिब के सूफ़ियों ने भी किसी न किसी तरीक़ह से रब के नाम को अपने अन्दर जज़्ब करने की कोशिश की। जो फ़ेअ़ल रब की तरफ़ मोड़े और उसके इश्क़ में इज़ाफह करे वह नाजाइज़ नहीं हैं।

हदीस :- ''अल्लाह अ़मलों को नहीं बल्कि नियतों को देखता है''।

शरीअ़त वाले इसको मअ़यूब और ग़लत समझते हैं क्योंकि वह शरीअ़त से ही मुत्मइन और सैराब हो जाते हैं। लेकिन वह लोग जो शरीअ़त से आगे इश्क़ की तरफ़ बढ़ना चाहते हैं, या वह लोग जो शरीअ़त में नहीं हैं इन्हें कुछ और मुतबादल करने से क्यों रोका जाता है?

****

दीने इलाही

तमाम दीन इस दुनिया में नबियों के ज़रिए बनाये गये। जबकि इससे पहले खुद इश्क़, खुद आशिक़, खुद माशूक़ था। और वह रूहें जो उसके कुर्ब, जलवे और मुहब्बत में थीं वही इश्क़े इलाही, दीने इलाही और दीने हनीफ़ था। फिर उन ही रूहों ने दुनिया में आकर उसको पाने के लिये अपना तन मन कुर्बान कर दिया। यह पहले ख़ास तक था, अब रूहानियत के ज़रिए आ़म तक भी पहुंच गया।

हदीस :- *हज़रत अबू हुरैरह* : मुझे हज़ूर पाक से दो इल्म हासिल हुए एक तुम्हें बता दिया, दूसरा बताऊँ तो तुम मुझे क़त्ल कर दो!

जब पानी के हौज़ से खुश्क किताबें निकलीं तो मौलाना रोम ने कहा : ईं चीस्त?

शाह शम्स ने कहा : ''ईं आँ इल्म अस्त कि तू नमी दानी''।

जब मूसा ने कहा कि क्या कुछ और इल्म भी है?

तो अल्लाह ने कहा कि ख़िज़र के पास चला जा!

हर नमाज़ी की दुआ़ :

''ऐ अल्लाह मुझे उन लोगों का सीधा रास्ता दिखा जिनपर तेरा इन्आ़म हुआ!

अल्लामा इक़्बाल रह. : इसको क्या जाने बेचारे दो रकअ़त के इमाम!

वह रूहें जो अज़ल से ही बामरतबा हैं। अल्लाह जिनसे मुहब्बत करता है और जो अल्लाह से मुहब्बत करती हैं। दुनिया में आकर भी रब की नाम लेवा हुईं, मस्लन ईसा अलैह. ज़चगी में ही बोल उठे थे कि मैं नबी हूँ जबकि हज़रत मरियम को पैदाइश से पहले ही जिब्राईल बशारत दे चुका था। मूसा के मुतअ़ल्लिक़ फ़िर्औन को पेशनगोई थी कि फ़लाँ क़बीले से एक बच्चा पैदा होगा जो तुम्हारी तबाही का सबब बनेगा और अल्लाह का ख़ास बन्दा होगा। हज़ूर पाक ने भी कहा था : ''मैं दुनिया में आने से पहले भी नबी था''। बहुत सी मुहिब्ब और अज़ली अर्वाह मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और मुख़्तलिफ़ अज्साम में मौजूद हैं।

आख़िरी ज़मानह में अल्लाह तआ़ला किसी एक रूह को दुनिया में भेजेगा जो इन रूहों को तलाश करके इकट्ठा करेगा और इन्हें याद दिलायेगा कि कभी तुमने भी अल्लाह से मुहब्बत करी थी। ऐसी तमाम रूहें ख़्वाह किसी भी मज़हब या बेमज़हब अज्साम में थीं उसकी आवाज़ पर लब्बैक कहेंगी और उसके गिर्द इकट्ठी हो जायेंगी। वह रब का एक ख़ास नाम इन रूहों को अ़ता करेगा जो क़ल्ब से होता हुआ रूह तक जा पहुंचेगा और फिर रूह उस नाम की ज़ाकिर बन जायेंगी। वह नाम रूह को एक नया वल्वला, नई ताक़त और नई मुहब्बत बख़्शेगा। उसके नूर से रूह का तअ़ल्लुक़ दोबारा अल्लाह से जुड़ जायेगा।

ज़िक्रे क़ल्ब, ज़िक्रे रूह का वसीला है। जैसा कि बन्दगी यअ़नी नमाज़, रोज़ा ज़िक्रे क़ल्ब का वसीला है। अगर किसी की रूह अल्लाह के ज़िक्र में लग गई तो वह उन लोगों से है जिन्हें तराज़ू , यौमे महशर का भी ख़ौफ़ नहीं। रूह के आगे के ज़िक्र और इबादत उसके बुलन्द मरातिब के शवाहिद हैं। जिन लोगों की मंज़िल क़ल्ब से रूह की तरफ़ रवाँ दवाँ है वही दीने इलाही में पहुंच चुके या पहुंचने वाले हैं। इनको किताबों से नहीं बल्कि नूर से हिदायत है और नूर से ही बाज़ए गुनाह हो जाते हैं और जो सुनकर या मेहनत से भी इस मुक़ाम से महरूम हैं वह इस सिल्सिले में शामिल नहीं हैं अगर ज़िक्र क़ल्बो रूह के बग़ैर खुद को इस सिल्सिले में मुतसव्वुर किया या उनकी नक़ल की तो वह ज़िन्दीक़ हैं। जबकि आ़म लोगों की बख़्शिश का ज़रिअ़ह इबादात और मज़हब हैं। हिदायत का ज़रिअ़ह आसमानी कुतुब हैं। शिफ़ाअ़त का ज़रिअ़ह नबूवत और विलायत है। बहुत से मुस्लिम वलियों की शिफ़ाअ़त को नहीं मानते। लेकिन हज़ूर सल० ने अस्हाबह को ताकीद करी थी कि अवैस क़रनी रज़ि. से उम्मत के लिये बख़्शिश की दुआ कराना।

रूहों का दीन

इश्के इलाही व दीने इलाही वालों की पहचान

जिसमें सब दरिया ज़म हो जायें वह समुन्दर कहलाता है! और जिसमें सब दीन ज़म होकर एक हो जायें वही इश्क़े इलाही और दीने इलाही है।

जित्थे चार मज़हब आ मिलदे हू। (सुल्तान साहेब)

इब्तिदाई पहचान :

जब क़ल्ब व रूह का ज़िक्र जारी हो जाये, चाहे इबादत से हो या किसी कामिल की नज़र से हो दोनों हालतों में वह अज़ली है। गुनाहों से नफ़रत होना शुरू हो जाये अगर गुनाह सर्ज़द हो भी जाये तो उसपर मलामत हो और उससे बचने की तर्कीबें सोचे।

''मुझे वह लोग भी पसन्द हैं जो गुनाहों
से बचने की तर्कीबें सोचते हैं।'' (फ़र्माने इलाही)

दुनिया की मुहब्बत दिल से निकलना और अल्लाह की मुहब्बत का ग़ल्बह शुरू हो जाये। हिर्स, हसद, बुख़्ल और तकब्बुर से छुटकारा महसूस हो। ज़बान किसी की ग़ीबत से बाज़ आ जाये। आ़जिज़ी महसूस हो। कन्जूसी की जगह सख़ावत और झूठ जाता नज़र आये। हराम ख़्वाहिशाते नफ़्सानी हलाल में तब्दील हो जायें। हराम माल, हराम खाने और हराम कामों से नफ़रत पैदा हो।

इन्तिहाई पहचान :

चरस, अफ़ीम, हिरोइन, तम्बाकू और शराब वग़ैरह से मुकम्मल छुटकारा हो जाये। मुक़द्दस हस्तियों से ख़्वाब, मुराक़बे या मुकाशफ़ा के ज़रिए मुलाक़ाती हो जाये। नफ़्स अम्मारा से मुतमइन्ना बन जाये। लतीफ़ए अन्ना रब के रूबरू, अल्लाह और बन्दे के दरमियान सब हिजाबात उठ जायें। बाज़े गुनाह, इश्क़े ख़ुदा, वस्ले ख़ुदा, बन्दह से बन्दह नवाज़, और ग़रीब से ग़रीब नवाज़ बन जाये।

क्योंकि इस सिल्सिले में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब से आकर ख़ास रूहें शामिल होंगी जिन्होंने रोज़े अज़ल में रब की गवाही में कलमा पढ़ लिया था। इसलिये किसी भी मज़हब की क़ैद नहीं होगी। हर शख़्स अपने मज़हब की इबादत कर सकेगा लेकिन क़ल्बी ज़िक्र सब का एक होगा यअ़्नी मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के बावजूद दिलों से सब एक हो जायेंगे। फिर जब दिलों में अल्लाह आया तो सब अल्लाह वाले हो जायेंगे। इसके बाद रब की मर्ज़ी है इन्हें अपने तईं रखे या किसी भी मज़हब में हिदायत के लिये भेज दे यअ़्नी कोई मुफ़ीद होगा, कोई मुन्फ़रिद कोई सिपाही होगा और कोई सालार होगा। इनकी इम्दाद और साथ देने वाले गुनाहगार भी किसी न किसी मरतबे में पहुंच जायेंगे। जो लोग इस टोले में शामिल न हो सके उनमें से अक्सर शैतान (दज्जाल) के साथ मिल जायेंगे। ख़्वाह वह मुस्लिम हों या ग़ैर मुस्लिम हों। आख़िर में इन दोनों टोलों की ज़बर्दस्त जंग होगी। ईसा, मेहदी, कालकी अवतार वाले मिलकर इन्हें शिकस्त देंगे। बहुत से दज्जालिये क़त्ल कर दिये जायेंगे। जो बचेंगे वह ख़ौफ़ और मजबूरी की वजह से ख़ामूश रहेंगे। मेहदी और ईसा का लोगों के कुलूब पर तसल्लुत हो जायेगा। पूरी दुनिया में अमन क़ायेम हो जायेगा। जुदा जुदा मज़हब ख़त्म होकर एक ही मज़हब में तब्दील हो जायेंगे। वह मज़हब रब का पसन्दीदह, तमाम नबियों के मज़ाहिब और किताबों का निचोड़, तमाम इंसानियत के लिये क़ाबिले कुबूल, तमाम इबादात से अफ़ज़ल हत्ताकि अललाह की मुहब्बत से भी अफ़ज़ल, इश्क़े इलाही होगा।

जित्थे इश्क़ पहुंचावे ईमान नूँ वी ख़बर नहीं........(बाहू)

अल्लामा इक़बाल ने इसी वक़्त के लिये नक़्शा खींचा था :

दुनिया को है उस मेहदीए बरहक़ की ज़रूरत
हो जिसकी नज़र ज़ल्ज़लाए आलमए अफ़कार

खुले जाते हैं इसरारे निहानी, गया दौरे हदीसे लन्तरानी
हुई जिसकी खुदी पहले नमूदार, वही मेहदी वही आख़िर ज़मानी

खोलकर आँख मेरी आईनए इदराक में,
आने वाले दौर की धुंदली सी एक तस्वीर देख
लौलाक लमा देख ज़मीं देख फ़िज़ा देख,
मशरिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख

गुज़र गया अब वह दौर साक़ी कि छुपके पीते थे पीने वाले
बनेगा सारा जहाँ मयख़ाना हर एक ही बादह ख़्वार होगा
ज़माना आया है बे हिजाबी का आ़म दीदारे यार होगा
सकूत था पर्दहदार जिसका वह राज़ अब आशकार होगा

निकल के सहरा से जिसने रोमा की सल्तनत को पलट दिया था
सुना है कुदसियों से मैंने वह शेर फिर होशियार होगा

तमाम आसमानी किताबें और सहीफ़े अल्लाह का दीन नहीं हैं। इन किताबों में नमाज़ रोज़ा और दाढ़ियाँ हैं जबकि अल्लाह इसका पाबन्द नहीं है। यह दीन नबियों की उम्मतों को मुनव्वर और पाक साफ़ करने के लिये बनाये गये। जबकि अल्लाह खुद पाकीज़ह नूर है और जब कोई इन्सान वस्ल के बाद नूर बन जाता है तो फिर वह भी अल्लाह के दीन में चला जाता है। अल्लाह का दीन प्यार व मोहब्बत है। निन्नियानवे (99) नामों का तर्जुमा है। अपने दोस्तों का ज़िक्र करने वाला है खुद इश्क़, खुद आशिक़, खुदं माशूक़ है। अगर किसी बन्दए खुदा को भी उसकी तरफ़ से इनमें से कुछ हिस्सा अ़ता हो जाये तो वह दीने इलाही में पहुंच जाता है। फिर उसकी नमाज़ दीदारे इलाही और उसका शौक़ ज़िक्रे खुदा है हत्ताकि उसकी ज़िन्दगी की तमाम सुन्नतों, फ़रज़ों का कफ़्फ़ारा भी दीदारे इलाही है। जिन्न, फ़रिश्ते और इंसानों की मुश्तर्कह इबादत भी उसके दर्जे तक नहीं पहुंच सकती।

ऐसे ही शख़्स के लिये शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ने फ़र्माया है कि : ''जिसने विसाल पर पहुंच कर भी इबादत की या इरादह किया तो उसने कुफ़राने निअ़मत किया''।

बुल्हे शाह ने फ़र्माया : ''असाँ इश्क़ नमाज़ जदों नियती ए...भुल गए मंदिर मसीती ए''।

अल्लामा इक़बाल ने कहा : ''इसको क्या जाने बेचारे दो रकअ़त के इमाम!''

इस इ़ल्म के मुतअ़ल्लिक़ अबू हुरैरह ने फ़र्माया था : ''कि मुझे हज़ूर सल. से दो इ़ल्म अ़ता हुए, एक तुम्हें बता दिया, अगर दूसरा बताऊँ तो तुम मुझे क़त्ल कर दो''। तारीख़ गवाह है कि जिन्होंने भी इस इ़ल्म को खोला, शाह मन्सूर और सरमद की तरह क़त्ल कर दिये गये और आज **गौहर शाही** भी इस इ़ल्म की वजह से क़त्ल के दहाने पर खड़ा है।

नबियों की शरीअ़त की पाबंदी उम्मत के लिये होती है वरना उन्हें किसी इबादत की ज़रूरत नहीं होती, वह शरीअ़त से पहले ही बल्कि रोज़े अज़ल से ही नबी होते हैं, चूंकि इन्होंने दीन को नमूने के तौर पर मुकम्मल करना होता है इनके किसी एक रूकुन के छोड़ने या फ़ेअ़ल को भी उम्मत सुन्नत बना लेती है इस वजह से इन्हें मुहतात और सहू में रहना पड़ता है। क्या कोई शख़्स यह कह सकता है कि कोई भी नबी अगर किसी भी इबादत में नहीं है तो क्या वह

दोज़ख में जा सकता है? हरगिज़ नहीं! क्या कोई शख़्स कह सकता है कि इबादत के बग़ैर नबी नहीं बन सकता? क्या कोई यह भी कह सकता है कि इल्म सीखे बग़ैर नबूवत नहीं मिलती? फिर वलियों पर एअ़्तराज़ात क्यों होते हैं? जबकि विलायत नबूवत का नेअ़्मुल्बदल है। याद रखें जिन्होंने दीदारे रब के बग़ैर विसाल का दावा किया या खुद को इस मुक़ाम पर तसव्वुर करके नक़ल की, वह ज़िन्दीक़ और काज़िब हैं। और कुरान ने ऐसे ही झूठों पर लअ़्नत भेजी है जिनकी वजह से हज़ारों का वक़्त और ईमान बर्बाद होता है।

यह किताब हर मज़हब हर फ़िर्क़े और हर आदमी के लिये क़ाबिले ग़ौर और क़ाबिले तहक़ीक़ है और मुन्किराने रूहानियत के लिये चैलेन्ज है।

****

फर्मूदाते गौहर शाही

''तीन हिस्से इल्म ज़ाहिर के हैं, और एक हिस्सा इल्म बातिन का है। ज़ाहिरी इल्म हासिल करने के लिए किसी मूसा और बातिनी इल्म के लिए किसी ख़िज़्र को तलाश करना पड़ता है।''

....

''जिब्राईल के बग़ैर जो आवाज़ आई, उसे इल्हाम और जो इल्म आया उसे सहीफ़े और हदीस कुदसी कहते हैं। और जिब्राईल के साथ जो इल्म आया उसे कुरान कहते हैं ख़्वाह वह ज़ाहिरी इल्म हो या बातिनी इल्म हो! उसे तौरेत कहें, ज़बूर कहें या इंजील कहें।''

....

''उ़लमा से अगर कोई ग़लती हो जाये तो उसे सियासत कहकर छुटकारा हासिल कर लेते हैं, औलिया से कोई ग़लती हो जाये, उसे हिकमत समझ कर नज़र अंदाज़ कर देते हैं। जबकि नबियों पर ग़लती का दफ़ा नहीं लगता।''

....

''जो जिस शुग्ल में हैं, अंदर से उनकी मुतअ़ल्लुक़ा रूहें ताक़तवर हैं और जो किसी भी शुग्ल में नहीं हैं, उनकी रूहें ख़िफ़्तह और बेहिस हैं, और जिन्होंने किसी भी तरीक़े से अल्लाह का नाम इन रूहों में बसा लिया फिर उनका शुग्ल हमह वक़्त ज़िक्र सुल्तानी और इश्क़े खुदावन्दी है।''

....

तबही *अ़ल्लामा इक़बाल* ने कहा : ''अगर हो इश्क़ तो कुफ़्र भी है मुसल्मानी''
सच्चल सांईं ने कहा : ''बिन इश्क़ दिलबर के सच्चल, क्या कुफ़्र है क्या इस्लाम है''
सुल्तान बाहू ने कहा : ''जित्थे इश्क़ पहुंचावे, ईमान नूं वी ख़बर न काई''

ऐसे लोग जब किसी मज़हब में होते हैं या जाते हैं तो उनकी बरकत से उस ख़ित्ते पर अल्लाह की باराने रहमत बरसना शुरू हो जाती है। फिर वह बाबा फ़रीद हों तो हिंदू , सिख भी उनकी चौखट पर! अगर बाबा गुरू नानक हों तो मुस्लिम, ईसाई भी उनके दर पर चले आते हैं।''

इमाम मेहदी तमाम मज़ाहिब की तजदीद करेंगे

जिस तरह हज़ूर पाक सल. की ख़तमे नबूवत के बाद मुस्लिम में मुजद्दिद आते रहे और माहौल के मुताबिक़ दीन में कुछ तजदीद करते रहे इसी तरह इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम के आने के बाद उन (मुजद्दिदुओं) की तजदीद ख़तम हो जायेगी और सब मज़ाहिब के मुताबिक़ इमाम मेहदी की अपनी तजदीद होगी। कुछ किताबों में है वह एक नया दीन बनायेंगे।

****

फर्मूदाते गौहर शाही

''अगर कोई सारी उम्र इबादत करता रहे, लेकिन आख़िर में इमाम मेहदी और हज़रत ईसा की मुख़ालिफ़त कर बैठा जिनको दुनिया में दोबारा आना है (ईसा का जिस्म समेत और मेहदी का अरज़ी अरवाह के ज़रिये आना है) तो वह बिलिअ़म बाऊ़र की तरह दोज़ख़ी और इब्लीस की तरह मर्दूद है। अगर कोई सारी उम्र कुत्तों जैसी ज़िन्दगी बसर करता रहा लेकिन आख़िर में उनका साथ और उनसे मुहब्बत कर बैठा तो वह कुत्ते से हज़रत क़तमीर बनकर जन्नत में जायेगा।''

''कुछ फ़िर्क़े और मज़ाहिब कहते हैं कि ईसा फ़ौत हो गये। अफ़ग़ानिस्तान में उनका मज़ार है। यह ग़लत प्रोपेगंडा है। अफ़ग़ानिस्तान में किसी और ईसा नामी बुज़ुर्ग का दरबार है। उस पयादह ज़माने में महीनों की मुसाफ़त पर जाकर दफ़नाना क्या मक़सद रखता था?'' फिर वह कहते हैं : ''आसमान पर कैसे उठाये गये?'' हम कहते हैं आदम अलैह. आसमान से कैसे लाये गये? जबकि इदरीस अलैह. भी ज़ाहिरी जिस्म से बहिश्त में अबतक मौजूद हैं। ख़िज़र अलैह. और इलियास जो दुनिया में हैं उनको भी अभी तक मौत नहीं आई। ग़ौस पाक के पोते हयातुल अमीर छः सौ (600) साल से ज़िन्दा हैं। ग़ौस पाक ने कहा था : ''उस वक़्त तक नहीं मरना जबतक मेरा सलाम मेहदी अलैहिस्सलाम को न पहुंचा दो।'' शाह लतीफ़ को बरी इमाम का लक़ब उन्होंने ही दिया था। मरी की तरफ़ बारह कोह में उनकी बैठक के निशान अभी तक महफ़ूज़ हैं।''

''ज़हिरी गुनाह की सज़ा जेल, जुर्माना या एक दिन की फ़ांसी है। अगर कोई राहे फ़क्र में है तो उसकी सज़ा मलामत है। जबकि बातिनी गुनाहों की सज़ा बहुत ज़्यादह है। ग़ीबत करने वाले की नेकियों से जुर्माना फ़रीक़े दोयेम की नेकियों में शामिल किया जाता है। हिर्स, हसद, बुख़्ल और तकब्बुर उसकी लिखी हुई नेकियों को मिटा देते हैं। अगर उसमें कुछ नूर है तो अंबिया व औलिया की गुस्ताख़ी और बुग्ज़ से छिन जाता है। जैसा कि शेख़ सनआ़न का शेख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी की गुस्ताख़ी से कशफ़ो करामात का सलब हो जाना।''

....

वाक़िअ़ह है कि जब बायज़ीद बस्तामी को पता चला कि एक शख़्स उनकी बुराई करता

है तो आपने उसका वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया। वह वज़ीफ़ा भी लेता रहा और बुराई भी करता रहा। एक दिन उसकी बीवी ने कहा : ''नमक हरामी छोड़ या वज़ीफ़ा छोड़ या बुराई छोड़।'' फिर उसने तअ़रीफ़ करना शुरू कर दी। आपको जब तअ़रीफ़ का पता चला तो उसका वज़ीफ़ा बन्द कर दिया। फिर वह आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ कि जब बुराई करता था, वज़ीफ़ा मिलता था, अब तअ़रीफ़ की वजह से वज़ीफ़ा क्यों बन्द हुआ? आपने फ़रमाया : ''तू उस वक़्त मेरा मज़दूर था, तेरी बुराई से मेरे गुनाह जलते, मैं उसका तुझे मुआ़विज़ा देता था। अब किस चीज़ का मुआ़विज़ा दूं?'' मुन्दर्जा बुराईयों का तअ़ल्लुक़ नफ़्स अम्मारह से है, जिसका इम्दादी इब्लीस है। जबकि तक़वा, सख़ावत, दरगुज़र, सब्रो शुक्र, आ़जिज़ी और अनवारे इलाही का तअ़ल्लुक़ क़ल्बे शहीद से है, जिसका इम्दादी वली मुर्शिद है।

....

जबतक नफ़्स अम्मारह है किसी भी पाक कलाम के अनवार दिल में ठहर नहीं सकते बेशक इल्फ़ाज़ो आयात का हाफ़िज़ क्यों न बन जाये, तोता ही है। जब तेरा नफ़्स मुत्मइन्ना हो जायेगा फिर नापाक चीज़ तेरे अंदर ठहर नहीं सकती, फिर तू मुर्ग़े बिस्मिल है। नफ़्स पाक करने के लिए किसी नफ़्स शिकन को तलाश कर। जो हर वक़्त मिनजानिबे अल्लाह डियुव्टी पर मामूर होते हैं। जिस्म के बाहर की तहारत पानी से होती है जबकि जिस्म के अंदर की तहारत नूर से होती है। तहारत के बग़ैर गन्दा और नापाक है। साफ़ जिस्म इबादते इलाही के क़ाबिल होता है, जबकि साफ़ दिल तजल्लियाते इलाही के क़ाबिल होता है। फिर ही आसमानी किताबें हिदायत करती हैं पाकों को (हुदल्लिल मुत्तक़ीन)। वरना किताबों वाले ही किताबों वालों के दुशमन बन जाते हैं। *मुजद्दिद अल्फ़ सानी* मकतूबात में लिखते हैं : ''कुरान उन लोगों के पढ़ने के लाइक़ नहीं जिनके नफ़्स अम्मारह हैं। मुब्तदी को चाहिए कि पहले ज़िक्रे अल्लाह करे यअ़नी अंदर को पाक करे, मुन्तही को चाहिए कि फिर कुरान पढ़े।''

हदीस : कुछ लोग कुरान पढ़ते हैं और कुरान उनपर लअ़नत करता है।
बुल्हे शाह : खाके सारा मुकर गये जिन्हाँ दे बग़ल विच कुरान।

आ़बिद को गुमान है कि वह अल्लाह के लिए इबादत और शब बेदारी कर रहा है। इस लिए वह अल्लाह के नज़दीक है। इबादत के बाद तेरी दुआ़, सेहत, उम्र दराज़ी, मालोदौलत और हूरोक़सूर है। सोच! क्या तूने कभी भी यह दुआ़ मांगी थी, ऐ अल्लाह मुझे कुछ नहीं चाहिए सिर्फ़ तू चाहिए?

....

आ़लिम को गुमान है कि मैं कुर्बे खुदावन्दी में बख़्शा बख़्शाया हुआ हूँ। क्योंकि मेरे अंदर इल्म और कुरान है फिर तू दूसरों को जहन्नमी क्यों कहता है जबकि हर मुस्लिम को भी कुछ न कुछ इल्म और कुरान की बहुत सी सूरतें याद हैं। सोच! इल्म कौन बेचता है? खुद कौन बिकता है? वलियों की ग़ीबत कौन करता है? हासिद, मुतकब्बिर और बख़ील कौन होता है? दिल में और ज़ुबान में और, सुबह और, शाम को और, यह किसका वतीरा है? सच को झूट और झूट को सच बनाकर कौन पेश करता है? अगर तू इन से दूर है तो ख़लीफ़ए रसूल है! तेरी तरफ पुश्त करना भी बेअदबी है।

यअ़नी...... क़ारी नज़र आता है, हक़ीक़त में है कुरान

अगर तू इन ख़स्लतों में गुम है तो फिर तू वही है जिसके लिए भेड़िये ने कहा था कि अगर मैंने यूसुफ़ को खाया हो तो अल्लाह मुझे चौदहवीं सदी के आ़लिमों से उठाये।

****

सिराते मुस्तक़ीम

1– जिनके ज़ाहिर दुरूस्त, बातिन स्याह हैं, मज़हब में फ़ितना हैं, इब्लीस के ख़लीफा हैं।

हदीस : जाहिल आ़लिम से डरो और बचो,
जिसकी ज़ुबान आ़लिम और दिल जाहिल यअ़नी स्याह हो।

2– बातिन दुरूस्त लेकिन ज़ाहिर ख़राब। इनको मजज़ूब, मअ़ज़ूर, सुकर और मुन्फ़रिद कहते हैं।

इश्क़ में अ़क्ल ही न रही तो हिसाबे हश्र क्या? (तर्याके क़ल्ब)

मज़हब के लिए परेशानी, लेकिन अल्लाह के क़ुर्ब में होते हैं। मगर मज़ीद मर्तबा हासिल नहीं कर सकते बामर्तबा तस्दीक़ नक़्क़ालिये ज़िन्दीक़। इन्होंने सदर ऐयूब, बेनज़ीर और नवाज़ शरीफ़ जैसों को उनके दौरे हुकूमत में डन्डे मारे और गालियाँ दीं। तुम किसी साहिबे इक़्तिदार को डन्डे मार कर दिखाओ, यअ़नी यह सिर्फ़ उनकी ज़ात तक महदूद है दूसरों के लिए नहीं है।

3– ज़ाहिर दुरूस्त बातिन भी दुरूस्त। ज़ाहिरी इबादत के इलावह क़ल्बी इबादत में भी होते हैं। इनको आ़लिम रब्बानी कहते हैं। यही मिम्बरे रसूल और दीन के वारिस होते हैं और जब किसी का ज़ाहिरो बातिन एक हो जाता है तो उसे नाइबे अल्लाह कहते हैं। अगर ख़्वाब में या रूहानी तौर पर हज करता है तो ज़ाहिर में भी उसका दर्जा मिलता है। बल्कि ज़ाहिरी हज से बहुत ही ज़्यादह। रूहों की नमाज़ ज़ाहिरी नमाज़ की हैसियत रखती है, बल्कि कहीं ज़्यादह। अगर ज़ाहिर में नमाज़ पढ़ता है तो बातिन में भी उसकी नमाज़ मेअ़राज बन जाती है, यही लोग हैं, जिस्म इधर, रूह उधर, फ़क्र के मुहकमे में इनको मुआ़रिफ़ भी कहते हैं। जबकि आ़शिक़ के लिए रब का दीदार ही काफ़ी है।

कुछ लोग कहते हैं दीदार हो ही नहीं सकता लेकिन यह दीदार वाला इल्म हुज़ूर सल. से शुरू हो चुका है। बक़ौल इमाम अबू हनीफ़ा : ''मैंने निनानवे(99) मर्तबा रब को देखा है।'' बायज़ीद बुस्तामी कहते हैं : ''मैंने सत्तर(70) मर्तबा रब का दीदार किया है।'' दीदार लतीफ़ए अन्ना से होता है, और तुम अन्ना की तअ़लीम और ज़िक्र से अनजान हो।

अल्लाह का दोस्त

अगर किसी को ख़ल्के़ खुदा कशफ़ो करामात और फ़ैज़ की वजह से वली मानती है लेकिन उसके किसी फ़ेल या मज़हब की वजह से तू दिल बर्दाश्तह है। उसकी बुराई करने से बेहतर है तू उधर जाना छोड़ दे। क्या ख़बर! वह कोई मन्ज़ूरे खुदा हो! शेख़ बक़ा हो! या कोई लाल शहबाज़ हो! कोई ख़िज़र हो! या साहे बाबा हो! या गुरू नानक हो! कोई बुल्हे शाह हो, और कोई सदा सुहागन भी हो सकता है!

गौहर शाही का आलमे इंसानियत के लिए इन्कलाबी पैग़ाम

मुस्लिम कहता है कि : ''मैं सबसे अअ़ला हूँ'', जबकि यहूदी कहता है : ''मेरा मुक़ाम मुस्लिम से भी ऊंचा है'', और ईसाई कहता है : ''मैं इन दोनों से बल्कि सब मज़ाहिब वालों से बुलन्द हूं क्योंकि मैं अल्लाह के बेटे की उम्मत हूं।'' लेकिन गौहर शाही कहता है : ''सबसे बेहतर और बुलन्द वही है जिसके दिल में अल्लाह की मुहब्बत है ख़्वाह वह किसी भी मज़हब से न हो! ज़ुबान से ज़िक्रो सलात उसकी इताअ़त और फ़र्मांबर्दारी का सबूत है जबकि क़ल्बी ज़िक्र, अल्लाह की मुहब्बत और राबते का वसीला है।''

बामर्तबा तस्दीक़ नक़्क़ालिया ज़िन्दीक़, झूटी नबूवत का दावेदार काफ़िर है। जबकि झूटी विलायत का दावेदार कुफ़्र के क़रीब है। वली दोस्त को कहते हैं और दोस्त का एक दूसरे को देखना और हमकलाम होना ज़रूरी है। हुज़ूर ने भी एक मर्तबा अस्हाबा को कहा था कि कुछ काम सिर्फ़ मेरे करने के हैं, तुम्हारे लिए नहीं हैं। हर नमाज़ी की यही दुआ़ होती है कि : ''ऐ अल्लाह मुझे उन लोगों का सीधा रास्ता दिखा जिनपर तेरा इनाम हुआ।'' जबतक उसकी रूह बैतुल मअ़मूर में जाकर नमाज़ न पढ़े जिसे हक़ीक़ी नमाज़ कहते हैं क्योंकि वह नमाज़ मरने के बाद भी जारी रहती है। जैसा कि शबे मेअ़राज में बैतुल मुक़द्दस में भी सब नबियों की अरवाह ने नमाज़ पढ़ी थी, और जब तक रब का दीदार न हो जाये उस वक़्त तक शरीअ़त की इत्तेबाअ़ ज़रूरी है। अल्बत्ता सुस्त और गुनाहगार लोगों के लिए भी अल्लाह ने कुछ नेअ़मुल बदल बनाया हुआ है। अल्लाह के नाम का क़ल्बी ज़िक्र भी ज़ाहिरी इबादत और गुनाहों का कफ़्फ़ारा करता रहता है और कभी न कभी उसे अल्लाह का मुहिब्ब और रोशन ज़मीर बना देता है।

''जब तुम्हारी नमाज़ें क़ज़ा हो जायें तो अल्लाह का ज़िक्र कर लेना
उठते, बैठते हत्ता कि कर्वटों के बल भी'' (अल्क़ुरान)

वलियों का क़ुर्ब, निस्बत, नज़र और दुआ़ भी गुनाहगारों का नसीबा चमका और दोज़ख़ से बचा लेती है। जैसा कि हुज़ूर सल. ने उम्मत के गुनाहगारों की बख़शिश के लिए हज़रत अवैस क़रनी से भी दुआ़ के लिए अस्हाबा को भेजा था। सख़ावत, रियाज़त और शहादत से भी गुनाहों का कफ़्फ़ारा और बख़शिश भी हो सकती है। आजिज़ी, तौबा ताइब और गिर्याज़ारी भी रब को पसन्द है। जिसकी वजह से नसूह जैसा कफ़नचोर और मुर्दा औरतों की बेहुर्मती करने वाला बख़शा गया। (अल्क़ुराऩ)

एक दिन ईसा ने शैतान से पूछा कि तेरा बेहतरीन दोस्त कौन है? उसने कहा : कन्जूस आ़बिद। कि वह कैसे? उसकी कन्जूसी उसकी इबादत को राइगाँ कर देती है। फिर पूछा तेरा बड़ा दुशमन कौन है? उसने कहा : गुनाहगार सख़ी। कि वह कैसे? उसकी सख़ावत उसके गुनाहों को जला देती है। ख़ुदा के बन्दों और ख़ुदा की मख़लूक़ से प्यार करने और ख़याल रखने वाले, हक़ का साथ और इंसाफ़ वाले लोग भी रब की नज़रे करम के क़ाबिल हो जाते हैं।

अ़ल्लामा इक़बाल तीसरी चौथी के तालिब इल्म स्कूल से वापिस आये तो एक कुतिया उनके पीछे चल पड़ी, आप सीढ़ियों पर चढ़ गये और वह बेहिसी से देखती रही। आपने सोचा शायद भूकी है। उनके वालिद ने उनके लिए एक पराठा रखा हुआ था। उन्होंने आधा कुतिया को डाल दिया, वह फ़ौरन खा गई फिर बेहिसी से देखने लगी। आपने बाक़ी आधा भी उसे डाल दिया, और ख़ुद सारा दिन भूके रहे। रात को उनके वालिद को बशारत हुई कि तुम्हारे बेटे का

अ़मल मुझे पसंद आया है और वह मन्ज़ूरे नज़र हो गया है।

जब सुबुक्तगीन हिरनी का बच्चा जंगल से उठा कर चल पड़ा तो देखा कि घोड़े के पीछे पीछे हिरनी भी दौड़ रही है। सुबुक्तगीन रूक गया, देखा हिरनी भी खड़ी हो गई और अपने मुंह को उसने आसमान की तरफ उठा लिया। सुबुक्तगीन ने देखा कि उस वक़्त उसके आंसू बह रहे थे और सुबुक्तगीन ने बच्चे को आज़ाद कर दिया। इस वाक़िअ़ह के बाद सुबुक्तगीन पर इतना अल्लाह का करम हुआ कि रब के नाम पर अकसर रोया करता था।

मैलाना रोम कहते हैं कि :

यक ज़माना सोहबते बा औलिया..... बेहतर अस्त सद सालह ताअ़त बे रिया।

(वली की एक लमहा की सोहबत सौ सालह बेरिया इबादत से बेहतर है।)

हदीस क़ुदसी : ''मैं उसकी ज़ुबान बन जाता हूं जिस्से वह बोलता है, उसके हाथ बन जाता हूं जिससे पकड़ता है।''

अबूज़र ग़फ़्फ़ारी : यौमे महशर में लोग वली को पहचान कर कहेंगे, ''ऐ अल्लाह! मैंने उसको वज़ू कराया था'' जवाब आयेगा, उसको बख़्श दो! दूसरा कहेगा : या अल्लाह मैंने इसे कपड़े पहनाये या खाना खिलाया था। जवाब आयेगा, इसे भी बख़्श दो। इस तरह बेशुमार लोग इनके ज़रिए बख़्शे जायेंगे।

हदीस क़ुदसी : जिस किसी ने मेरे वली के साथ दुशमनी करी, मैं उसके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग करता हूं। अल्लाह की जंग एक दिन का सिर काटना नहीं होता बल्कि उनका ईमान काट दिया जाता है। जो अगली सारी ज़िन्दगी में दोज़ख़ में रोज़आना अज़ीयत से सिर कटता रहेगा। जैसा कि बिलिअ़म बाऊ़र जो बहुत बड़ा आ़लिम और आ़बिद था लेकिन मूसा की दुशमनी की वजह से दोज़ख़ में डाल दिया गया। लोग कहते हैं : ''रब इबादत से मिलता है।'' हम कहते हैं : ''रब दिल से मिलता है।'' इबादत दिल को साफ़ करने का ज़रिअ़ह है, अगर इबादत से दिल साफ़ नहीं हुआ तो रब से बहुत दूर है।

हदीस : 'न अ़मलों को देखता हूं, न शकलों को बल्कि नीयतों और कुलूब को देखता हूं।' अल्बत्ता इबादत से जन्नत मिल सकती है लेकिन जन्नत भी रब से बहुत दूर है।

''यह इल्म बातिन सिर्फ़ उन लोगों के लिए है जो हूरोबहिश्त की
परवाह किए बग़ैर रब से मुहब्बत, क़ुर्ब और विसाल चाहते हैं।''

फिर बक़ौल सूरह कहफ़ : अल्लाह उन्हें किसी वली मुर्शिद से मिला देता है।

जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे की किसी भी अदा से मेहरबान हो जाता है तो उसे बड़े प्यार से देखता है। उसका प्यार से देखना ही बन्दे के गुनाहों को जला देता है। उसके पास बैठने वाले भी नज़रे रहमत की लपेट में आ जाते हैं। रब के दोस्त अस्हाबे कहफ़ सोते रहे या मुराक़बा में रहे, अल्लाह उनको प्यार से देखता रहा जिसकी वजह से उनका साथी कुत्ता भी हज़रत क़तमीर बनकर जन्नत में जायेगा। **जब शेख फरीद रहमतुल्लाह अलैह** अल्लाह की नज़रे रहमत में आये तो साथ बैठा हुआ चरवाहा रंगा गया। **जब अल्लाह अबुल हसन** की किसी अदा पर मेहरबान हुआ तो हमकलामी का सिलसिला शुरू हो गया। एक दिन उसे कहा : ऐ अबुल हसन अगर तेरे मुतअ़ल्लुक़ मैं लोगों को बता दूं तो लोग तुझे पत्थर मार मार कर हलाक कर दें। उन्होंने जवाब दिया : अगर मैं तेरे मुतअ़ल्लुक़ लोगों को बता दूं कि तू कितना मेहरबान है तो तुझे कोई भी सिजदा न करे। रब ने कहा : ऐसा कर न तू बता न हम बताते हैं।

जब तीसरी बार ज़ैद को शराब के जुर्म में लाया गया तो अस्हाबा ने कहा : इस पर लअ़नत, बार बार इसी जुर्म में आता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया : लअ़नत मत करो यह अल्लाह और उसके हबीब से मुहब्बत भी करता है, जो अल्लाह रसूल से मुहब्बत करते हैं दोज़ख़ में नहीं जा सकते।

बेशक अल्लाह कुल मख़लूक़ से मुहब्बत करता है और सब मख़लूक़ का ख़याल रखता है मअ़ज़ूर कीड़े को पत्थर में भी रिज़्क़ पहुंचाता है लेकिन जिस तरह नाफ़रमान औलाद को सज़ा और आ़क़ किया जाता है, इसी तरह नाफ़रमानों और गुस्ताख़ों के लिए वह क़ह्हार बन जाता है।

यक़ीन करो तुम्हें भी रब देखना चाहता है लेकिन तुम अन्जान, लापरवाह या बदबख़्त हो। जिसे लोग देखते हैं उसे रोज़ साबुन से धोते हो, रोज़ क्रीम लगाते और ख़त बनाते हो और जिसे रब ने देखना है क्या तूने कभी उसे भी धोया है?

हदीस : हर चीज़ को धोने के लिए कोई न कोई आलह है
जबकि दिलों को धोने के लिए अल्लाह का ज़िक्र है।

पकीज़ह मुहब्बत का तअ़ल्लुक़ भी दिल से होता है। जुबान से I Love You कहने वाले मक्कार होते हैं। मुहब्बत की नहीं जाती..... हो जाती है, जो भी दिल में उतर जाये। रब को दिल में उतारने के लिए तसौवुर, क़ल्बी ज़िक्र और वलीअल्लाह होते हैं।

सिर्फ गाड़ी का इंजन मन्ज़िले मक़सूद तक नहीं पहुंचा सकता जबतक दूसरी चीज़ें भी यअ़नी स्टेरिंग, टायेर वग़ैरह न हों। इसी तरह नमाज़ भी तज़कियए नफ़्स और तसफ़ियए क़ल्ब के बग़ैर अधूरी है। अगर इन लवाज़मात के बग़ैर नमाज़ ही सब कुछ..... और जन्नत है फिर तुम दूसरों को काफ़िर, मुर्तिद और दोज़ख़ी क्यों कहते हो जबकि वह भी नमाज़ पढ़ते हैं। फ़र्क़ यह ही है कोई ईसा के गधे पर सवार है और कोई दज्जाल के गधे पर सवार है यअ़नी अंदर से दोनों काले। सिर्फ़ अ़क़ीदों का फ़र्क़ हुआ जबकि अ़क़ीदे इधर रह जायेंगे, अंदर की रूहें आगे जायेंगी।

ज़ुबान में नमाज़ लेकिन दिल में ख़ुराफ़ात, हिर्सोहसद, यह नमाज़ सूरत कहलाती है। आ़म लोग इसी से ख़ुश फ़हमी में मुब्तिला रहते हैं और फ़िर्क़ाबंदी का शिकार होते रहते हैं। इनकी दीन में तबलीग़ फ़ितना बन जाती है। फ़र्ज़ किया तुम दस पन्द्रह साल से किसी फ़िर्क़े में रहकर इबादत करते रहे फ़िर तुम दूसरे फ़िर्क़े को सही समझ कर उसमें शामिल हो गए। इसका मक़सद तुम्हारा पहला फ़िर्क़ा बातिल था, बातिल की इबादत क़ुबूल ही नहीं होती, यअ़नी तुमने दस पंद्रह सालह नमाज़ों को झुटला दिया। हो सकता है नया फ़िर्क़ा भी बातिल हो! फिर पिछली भी गई और अगली भी गई। पट्टी उतरी तो कोल्हू के बैल की तरह वहीं मौजूद पाया। उमर बर्बाद होने से बेहतर था कि किसी कामिल को ढूंड लेते।

****

गौहर शाही का अक़ीदह

सब मज़ाहिब के नेकूकारों और आ़बिदों को एक लाइन में खड़ा कर दिया जाये, रब को कहो : किसको देखेगा?

जिस तरह तेरी नज़र चमकते हुए सितारों पर पड़ती है। वह मरीख़ हो या अ़तारद या बेनाम सितारह, इसी तरह रब भी चमकते हुए दिलों को देखता है वह मज़हब वाले हों या बेमज़हब!

बिन इश्क़ दिलबर के सच्चल, क्या कुफ़्र है क्या इसलाम है!

तुम रब की तलाश में मन्दिरों चर्चों और मस्जिदों वग़ैरह की दौड़ लगाते हो! क्या तारीख़ में कोई सबूत है, कि रब को किसी ने भी किसी भी इबादतगाह में बैठा हुआ देखा हो? अरे नादान! रब का मुस्किन तेरा दिल है, उसको दिल में बसा, फिर देख यह इबादतगाहें और इनमें इबादत करने वाले तेरी तरफ़ दौड़ लगायेंगे। बायज़ीद बुस्तामी रह. फ़रमाते हैं : ''एक अ़र्सा कअ़बा का तवाफ़ करता रहा, जब रब मेरे अंदर आया, तो एक अ़र्से से कअ़बा मेरा तवाफ़ कर रहा है''। यह इबादतगाहें सवाबगाहें हैं जबकि यह दिल आमाजगाह है। इबादतगाहों में तू पुकारेगा और रब दिलों में पुकारेगा।

अक़्ल वालों के नसीबे में कहाँ ज़ौक़-ए-जुनूँ
इश्क़ वाले हैं जो हर चीज़ लुटा देते हैं
अल्लाह अल्लाह किये जाने से अल्लाह न मिले
अल्लाह वाले हैं जो अल्लाह मिला देते हैं

हर मज़हब का अ़क़ीदह है कि उसके नबी की शान सबसे बुलन्द है और यही अ़क़ीदह अहले किताब में जंगों का सबब बना, बेहतर है तुम रूहानियत के ज़रिए नबियों की महफ़िल में पहुंच जाओ फिर ही पता चलेगा कि कौन किस मुक़ाम पर है और कौन किस दर्जह पर है।

ज़रूरी नोट

हर नबी को अल्लाह ने ख़ास नामों से पुकारा जो उनकी उम्मत के लिये पहचान और कलमे बन गये। यह नाम अल्लाह की अपनी ज़ुबान सुर्यानी में थे। इनके इक़रार से उस नबी की उम्मत में दाख़िल होता है। तीन दफ़ा इक़रार शर्त है, उम्मत में दाख़िल होने के बाद इन इल्फ़ाज़ों को जितना भी दोहराएगा उतना ही पाकीज़ह होता जायेगा। मुसीबत के वक़्त इन इल्फ़ाज़ों की अदाएगी मुसीबत से छुटकारा बन जाती है। क़ब्र में भी यह इल्फ़ाज़ हिसाब किताब में कमी का बाअ़स बन जाते हैं हत्ताकि बहिश्त में दाख़िले के लिये भी इन इल्फ़ाज़ की अदाएगी शर्त है। हर उम्मत को चाहिए कि अपने नबी के कलमे को याद करें और सुबह व शाम जितना भी हो सके उनको पढ़ें। हिदायत के लिये आसमानी किताबें आप अपनी ज़ुबान में पढ़ सकते हैं लेकिन इबादत के लिये असली किताब की असली इबारतें ज़्यादह फ़ैज़ पहुंचाती हैं।

रसूलों के कलमे यह हैं

ईसाईयों का कलमा

ला इलाह इल्लल्लाह ईसा रूहुल्लाह

तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं ईसा अल्लाह की रूह हैं

यहूदियों का कलमा

ला इलाह इल्लल्लाह मूसा कलीमुल्लाह

तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं मूसा अल्लाह से बातचीत करते हैं

इब्राहिमों का कलमा

ला इलाह इल्लल्लाह इब्राहीम ख़लीलुल्लाह

तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं इब्राहीम अल्लाह के दोस्त हैं

मुसलमानों का कलमा

ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

तर्जुमा : अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं मुहम्म्द अल्लाह के रसूल हैं

जबकि हिन्दू और सिख दीने आदम और दीने नूह की एक कड़ी हैं। आदम की हज्र अस्वद (पत्थर) की तअ़ज़ीम से इनमें भी पत्थर पूजने की रीत चल पड़ी। कश्तिए नूह से बचे हुए लोगों ने भी हिंदुस्तान में जाकर तबलीग़ करी थी और ख़िज़र से भी इनके गुरूओं को फ़ैज़ मिला था, और इनकी दुआ़ओं में आदम (शंकरजी) और ख़िज़र (विष्णु महाराज) के नाम शामिल हैं।

हर मज़हब वाला ख़्वाह कोई भी ज़ुबान रखता हो लेकिन यह कलमे अल्लाह की सुर्यानी ज़ुबान में उसकी पहचान और निजात हैं। आ़म इंसान के लिये रोज़ानह कम अज़कम (33) मर्तबह अल्लाह और रसूल को सुबह और शाम याद करना ज़रूरी है। दुनियावी मुसीबतों से महफ़ूज़ के लिये रोज़ाना (99) मर्तबह सुबह और शाम या जितना भी हो सके, मुसीबत को टालने के लिये पांच हज़ार (5,000), पचीस हज़ार (25,000) या बहत्तर हज़ार (72,000) कई आदमी एक ही नशिस्त में बैठ कर पढ़ सकते हैं। आख़िरी हद सवा लाख (125,000) है।

दिल को साफ़ करने और गुनाहों के धब्बे मिटाने के लिये सांस की मश्क़, सांस लेते वक़्त 'ला इलाह इल्लल्लाह' और सांस निकालते वक़्त बाक़ी अगला हिस्सा पढ़ें, सांस निकालते वक़्त ध्यान दिल की तरफ़ हो। अल्लाह से मुहब्बत और क़ुर्ब हासिल करने के लिये दूसरा तरीक़ा है जो बग़ैर रब की रज़ा के मुश्किल है। किताब में दर्जशुदह तरीक़े के मुताबिक़ दिल की धड़कन को तस्बीह बनाना पड़ता है और धड़कनों के साथ सिर्फ़ अल्लाह के ख़ालिस इल्फ़ाज़ को मिलाना पड़ता है। जितना हो सके रोज़ानह इसकी भी मश्क़ करें। किसी का ध्यान के ज़रिए, किसी का बग़ैर ध्यान के भी और किसी का क़ल्बो रूह की बेदारी के बाद हर वक़्त भी ख़ुदबख़ुद ज़िक्र जारी हो सकता है।

अल्लाह के दोस्तों का ज़िक्र बहत्तार हज़ार (72,000) रोज़ाना होता है
जबकि आशिक़ों का ज़िक्र सवा लाख (125,000) तक पहुंच जाता है।
अगर लताइफ़ भी ज़िक्र में लग जायें तो उसके ज़कूरियत
का शुमार करामन कातिबीन के भी बस में नहीं रहता।

कोई फ़र्श पर कोई अर्श पर
कोई काबे में कोई रूए ख़ुदा

(तर्याक़ क़ल्ब)

मज़हब वाले इस्म अल्लाह के अलावह नबी के नाम को भी दिल में जमाने की कोशिश किया करें ताकि इस्म अल्लाह कंट्रोल में रहे। वज्द, जज़्ब या जलाल की सूरत में नबी का कलमा उस वक़्त तक पढ़ें जब तक वह हालत ख़तम न हो और देखे हुए मुर्शिद को भी ख़याल में लायें ताकि उसकी रूहानी ताक़त दिल पर अल्लाह नक़्श करे। जिनका कोई मज़हब नहीं, ख़ुदा ख़बर उनका नसीबह किसके पास है या कहीं भी नहीं है। वह बारी बारी मश्क़ के दौरान पाँचों मुर्सलीन के नाम का तसौवुर करें और जिस भी देखे हुए वली पर यक़ीन रखते हैं उसका भी ख़याल लायें। फिर जिसके आप हैं वह अंदर से बोलना शुरू कर देगा यअ़नी आपका रूख़, मुहब्बत और दिल उसी की तरफ़ माएल हो जायेगा।

किसी ज़माने में अहले किताब एक प्लेटफार्म पर जमा हो गये थे, आपस में इकट्ठा खाना पीना और एकदूसरे से शादियों की इजाज़त हो गई थी। इसी तरह इस ज़माने में अहले ज़िक्र भी एक हो जायेंगे। अहले किताब वाले आ़रज़ी थे क्योंकि किताब जुबान पर थी.... निकल गयी और यह मुस्तक़िल होंगे क्योंकि अल्लाह का नाम और उसका नूर खून और दिल में होगा। जो बीमारी खून में चली जाये या जिसकी मुहब्बत दिल में उतर जाये उसका निकलना मुशकिल है।

....

पानी पानी ही है लेकिन जब रगड़ा लगता है तो बिजली बन जाता है। दूध को रगड़ते हैं तो मक्खन बन जाता है। इसी तरह आसमानी किताबों की असली आयतों का जब तकरार करते हैं तो नूर बन जाता है। आयतों और सिफ़ाती असमाअ के तकरार से सिफ़ाती नूर बनता है जिसकी पहुंच मलाइका तक है जो बिलवास्ता है। यह वह्दतुल वजूद का मक़ाम है लेकिन अल्लाह के ज़ाती नाम के तकरार के नूर की पहुंच ज़ात तक है जो बिलावास्ता है। यह वह्दतुश्शहूद से तअ़ल्लुक़ रखता है।

....

बहुत से लोग अपने मज़हब के नबी और वलियों का बहुत ही एहतराम और अ़क़ीदत, मुहब्बत रखते हैं लेकिन दूसरे मज़ाहिब के नबियों, वलियों से बुग़ज़ोइनाद और दुशमनी रखते हैं। ऐसे लोग भी अल्लाह की तरफ़ से कोई मक़ाम हासिल नहीं कर सकते हैं क्योंकि जिनकी बुराई करते हैं वह भी अल्लाह के दोसतों में से हैं और अल्लाह की मरज़ी से ही मुख़तलिफ़ मज़हबों और क़ौमों में तईनात किये गये।

****

चन्द मुहिब्ब अरवाह के चश्मदीद वाक़िए

एक अज़ली रूह का वाक़िआ :

मैं अमेरिका में निस्फ़ शब के क़रीब एक जंगल से गुज़रा, देखा एक शख़्स एक दरख़्त के आगे सिजदारेज़ होकर गिड़गिड़ा रहा है। तक़रीबन एक घंटा बाद मेरी वापसी हुई, अभी भी वह इसी हालत में था, मैं क़रीब जाकर रूक गया, उसने मुझे महसूस करके सिजदे से सिर उठाया और कहा : मुझे डिस्टर्ब क्यों किया? मैंने कहा : मैं भी रब की तलाश में हूँ, लेकिन दरख़्त से कैसे रब मिलेगा? बेहतर था किसी मज़हब के ज़रिए रब को हासिल करता! कहने लगा : बाइबल, क़ुरान या जो भी आसमानी किताबें हैं, मैं उनकी ओरिजिनल (Original) ज़ुबान नहीं जानता और इन किताबों के जो तर्जुमे हुए हैं, मैं उनसे मुत्मइन नहीं, क्योंकि इनमें ज़बरदस्त तुज़ाद है जिसकी वजह से यह यक़ीन नहीं हो सकता कि यह किसी एक ही ख़ुदा की तरफ़ से भेजी हुई किताबें हों। एक किताब में लिखा है कि ईसा मेरा बेटा है जबकि दूसरी किताब में है कि मेरा कोई बेटा वग़ैरह नहीं है। ''एक अ़र्सा उनके मुतालिअ़ह में मेरा वक़्त और उम्र बर्बाद हुई। मैंने अब दूसरा रास्ता अख़्तियार किया है कि यह दरख़्त इतना ख़ूबसूरत है, इसका मक़सद रब इससे मुहब्बत करता है, हो सकता है इसी के ज़रिए मेरी रब तक रसाई हो जाये''। यह कोई अज़ली मुहिब्ब रूह थी जो अपनी अ़क़्ल के मुताबिक़ रब की तलाश में थी। क्या ऐसे लोग दोज़ख में जा सकते हैं? जो कि मअ़ज़ूर कहलाते हैं और यही कुत्ते से भी क़तमीर बन जाते हैं, जबकि हज़रत क़तमीर का भी कोई मज़हब नहीं था।

(Arizona) एरीज़ोना की मिस कैथरीन ने वाक़िआ सुनाया कि :

''मैंने एन्जीला से ज़िक्र क़ल्बी की इजाज़त ली, एन्जीला ने कहा : ''सात दिन के अन्दर अन्दर अगर दिल में अल्लाह अल्लाह शुरू हो गयी तो समझना कि रब ने तुम्हें क़ुबूल कर लिया है, वरना तेरी ज़िन्दगी फ़ुज़ूल है। जब सात दिन की मेहनत से भी मेरा ज़िक्र जारी न हुआ तो एक रात मुझे सख़्त रोना आया। मैं ख़ूब गिड़गिड़ाई उसी रात मेरे अंदर अल्लाह अल्लाह शुरू हो गयी जो तीन साल से जारी है। कैथरीन उम्र की क़ायेल नहीं बल्कि तन्दुरूस्ती की क़ायेल है, इसी तरह वह मज़हब की भी क़ायेल नहीं बल्कि उसकी मुहब्बत की क़ायेल है। उसका कहना है कि इस ज़िक्र की वजह से मेरे दिल में रब की मुहब्बत में इज़ाफ़ा होता जा रहा है, मेरे लिये यही काफ़ी है।''

एक हिन्दू गुरू से मुलाक़ात :

मैं उस वक़्त सिहवन की पहाड़ियों में था, कभी कभी लाल शहबाज़ के दरबार चला जाता। एक शख़्स दरबार के बाहर बरामदे में बैठा हुआ था, बहुत से हिंदू मज़हब के लोग उसके गिर्द बड़ी अ़क़ीदत से जमा थे पूछा : यह कौन बुज़ुर्ग है? कहने लगे यह हिंदुओं का गुरू है, रोशनज़मीर भी है इसी के ज़रिए हमारी दरख़्वास्तें लाल साईं तक पहुंचती हैं और हमारे काम हो जाते हैं। बहुत से मुसलमान भी उसकी इज़्ज़त करते थे। एक दिन मेरा एक टीले से गुज़र हुआ देखा वही शख़्स सामने एक बुत रखकर सिजदे की हालत में कुछ पढ़ रहा है। दूसरे दिन दरबार में मुलाक़ात हुई, मैंने कहा : तुझ जैसे रोशन ज़मीर का मिट्टी के बुत को पूजना मेरी समझ से बाहर है। उसने जवाब दिया : मैं भी इसे कोई रब नहीं समझता अल्बत्तह मेरा अ़क़ीदा है और तुम्हारी किताबों में भी लिखा है कि अल्लाह ने इंसान को अपनी सूरत पर बनाया इस

वजह से तरह तरह की सूरतें बनाकर पूजता हूं, पता नहीं कौन सी सूरत रब से मिल जाये। उसने कहा : तू भी रोशन ज़मीर है बता कि अल्लाह की सूरत कैसी है और किस बुत से मिलती है? ताकि मैं उसे मन में बसा सकूँ।

मेरी उम्र कोई सोलह–सत्तरह के लगभग थी। अपने ख़ानदानी बुज़ुर्ग बाबा गौहर अली शाह के दरबार पर एक दिन सूरह मुज़म्मिल की तिलावत कर रहा था इतने में एक लंबे क़द का आदमी फ़क़ीरी हुलिये में मेरे सामने आया और कहने लगा : ख़्वामख़्वाह चने चबा रहा है, बुज़ुर्ग सूरत था मैं ख़ामूश रहा लेकिन दिल में यही था कि यह ज़रूर कोई शैतान है जो मुझे तिलावत से रोक रहा है। अ़र्सा गुज़र गया जब ज़िक्र क़ल्ब जारी हुआ तो मेरी उम्र पैंतीस (35) साल के लगभग थी। बताये हुए तरीक़े से ज़ुबान से सूरह मुज़म्मिल की आयत पढ़ता फिर ख़ामोश हो जाता कि दिल पढ़े फिर दिल से इसी आयत की आवाज़ आती। एक दिन इसी मश्क़ में मगन और मसरूर था कि फिर वही शख़्स उसी हुलिये में ज़ाहिर हुआ और कहने लगा : अब तू कुरान पढ़ रहा है। जबतक तर्याक़ मेदे में न जाये शिफ़ा नहीं होती, जबतक कलामे इलाही दिल में न उतरे कोई बात नहीं बनती उसने शेअ्र सुनाया–

ज़ुबानी कलिमा हर कोई पढ़दा .... दिल दा पढ़दा कोई हू
दिल दा कलिमा आशिक़ पढ़दे .... की जानन यार गलोई हू

दाता दरबार की मस्जिद में जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ देखा एक उम्र रसीदह शख़्स नमाज़ियों की जूतियाँ सीधी कर रहा है। मैंने भी यह महसूस की कि सिवाए जूतियाँ सीधी करने के उसने कोई नमाज़ नहीं पढ़ी क्योंकि मैं पिछली सफ़ में था, जाते वक़्त मैने कहा : आपने नमाज़ तो नहीं पढ़ी, इन जूतियों से आपको क्या मिलेगा? कहने लगा : नमाज़ तो उम्रभर नहीं पढ़ी अब बुढ़ापे में नमाज़ से बख़शिश की क्या उम्मीद रखूँ। बस एक उम्मीद पर क़ायेम हूँ कि इतने लोगों में से कोई एक तो रब का दोस्त होगा, शायद इस अदा से ही वह या उसका यार ख़ुश हो जाये। मैंने कहा : नमाज़ से बढ़कर कोई अदा नहीं। कहने लगा : यार से बढ़कर कोई चीज़ नहीं अगर वह राज़ी हो जाये! तीन साल की चिल्लाकशी के बाद एक दिन महफ़िले हज़ूरी नसीब हुई, देखा वही शख़्स यार के क़दमों में था। फिर यह शेअ्र आया कि–

गुनाहगार पहुंचे दरेपाक पर.... ज़ाहिदो पारसा देखते रह गये

* * * * * *

हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही का शख़्सी तआ़रुफ़

25 नवम्बर 1941 को बर्रे सग़ीर के एक छोटे से गाँव ढोक गौहर शाह, ज़िला रावल पिंडी में पैदा हुए। आपकी वालिदा माजिदा फ़ातिमी हैं। यअ़नी सादात ख़ानदान सैयद गौहर अ़ली शाह के पोतों में से हैं जबकि वालिद गिरामी सैयद गौहर अली शाह के नवासों में से हैं और दादा मुग़लिया ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रखते हैं। बचपन से ही आपका रूख़ अवलिया इकराम के दरबारों की तरफ़ था। आपके वालिद गिरामी फ़रमाते हैं कि गौहर शाही पांच या छः साल की उम्र से ही ग़ायेब हो जाते और हम जब उनको ढूंढने निकलते तो इनको निज़ामुद्दीन अवलिया रह.(नई दिल्ली) के मज़ार पर बैठा हुआ पाते। मुझे कई दफ़अ़ ऐसा महसूस हुआ कि जैसे यह निज़ामुद्दीन अवलिया से बातें कर रहे हैं। यह उस वक़्त का वाक़िआ़ है जब हज़रत गौहर शाही के वालिद गिरामी मुलाज़िमत के सिलसिले में देहली में मुक़ीम थे। मार्च 1997 ई० में जब गौहर शाही इण्डिया तशरीफ़ ले गये तो निज़ामुद्दीन अवलिया दरबार के सज्जादह नशीन इस्लामुद्दीन निज़ामी ने निज़ामुद्दीन अवलिया के इशारे पर इन को दरबार के सिरहाने दस्तार पहनाई थी।

बचपन से ही जो बात कहते वह पूरी हो जाती, इस वजह से मैं इनकी हर जायेज़ ज़िद को पूरा करता। आपके वालिद गिरामी मज़ीद फ़र्माते हैं कि : ''गौहर शाही हस्बे मअ़मूल रोज़ाना सुबह लान {Lawn} में आते हैं तो मैं इनकी आमद पर एहतराम में खड़ा हो जाता हूँ''। इस बात पर गौहर शाही मुझसे नाराज़ हो जाते हैं और कहते हैं कि मैं आपका बेटा हूँ, मुझे शर्म आती है आप इस तरह न खड़े हुआ करें। लेकिन मेरा बार बार यही जवाब होता है कि मैं आपके लिये नहीं बल्कि जो अल्लाह आप में बस रहा है उसके एहतराम में खड़ा होता हूँ। मौढ़ा नूरी प्राइमरी स्कूल के मास्टर अमीर हुसेन कहते हैं : ''मैं इलाक़े में बहुत सख़्त उस्ताद मशहूर था, शरारती बच्चों को मारता और इनकी शरारत यह थी कि यह स्कूल देर से आते थे और जब मैं गुस्से में इन्हें मारने लगता तो मुझे ऐसा महसूस होता जैसे किसी ने मेरा डन्डा पकड़ लिया हो और इस तरह मुझे हँसी आ जाती थी।

हज़रत गौहर शाही की बिरादरी और दोस्तों के तअस्सुरात :

हमने कभी इनको किसी से लड़ते झगड़ते या किसी को मारते पीटते नहीं देखा बल्कि कोई दोस्त अगर गुस्सा करता या इनको मारने के लिये आता तो यह हँस पड़ते।

हज़रत गौहर शाही की ज़ौजह मोहतरमा कहती हैं :

अव्वल तो इनको गुस्सा आता ही नहीं और अगर कभी गुस्सा आता है तो इन्तिहाई शदीद होता है और वह भी किसी बेहूदा बात पर। हज़रत गौहर शाही की सख़ावत के बारे में कहती हैं : ''सुबह जब अपने कमरे से लान तक जाते हैं तो जेब भरी होती है और मुड़कर वापस आते हैं तो जेब ख़ाली हो जाती है। सारा पैसा ज़रूरत मन्दों को दे आते हैं और फिर जब मुझे पैसों की ज़रूरत पड़ती है तो मुंह बना लेते हैं और इस तरह मुझे गुस्सा आता है। फिर मासूमानह चेहरा देख कर शेअ़र पढ़ती हैं –

दिल के बड़े सख़ी हैं...बैठे हैं धन लुटा के

हज़रत गौहर शाही के साहेबज़ादों के इनके बारे में तअस्सुरात :

अब्बू हमसे प्यार भी बहुत करते हैं और ख़याल भी बहुत रखते हैं लेकिन जब हम इनसे पैसे मांगते हैं तो वह बहुत कम देते हैं और कहते हैं कि : ''तुम फ़ज़ूल ख़र्ची करोगे'', तब हम

कहते हैं कि : ''या तो हमें भी फ़क़ीर बना दो या हमें पैसे दो''।

हज़रत गौहर शाही की वालिदह माजिदह के इनके बारे में तअस्सुरात :

बचपन में कभी स्कूल न जाता या जवानी में दौराने कारोबार कभी नुक़्सान हो जाता तो मैं इस की सरज़निश करती लेकिन उन्होंने कभी भी मुझे सिर उठाकर जवाब नहीं दिया जबकि मेरे बुज़ुर्ग कक्का मियाँ ढोक शम्स वाले कहा करते थे कि : ''रियाज़ को गाली मत दिया कर जो कुछ मैं इसमें देखता हूँ तुम्हें ख़बर नहीं''। इंसानी हमदर्दी इतनी कि अगर 'रियाज़' को पता चल जाता कि आठ दस मील के फ़ासिले पर कोई बस ख़राब हो गई है तो उन लोगों के लिये खाना बनवाकर साइकल पर उन्हें देने जाता।

हज़रत गौहर शाही के एक क़रीबी दोस्त मुहम्मद इक़बाल मुक़ीम फ़ज़ूलियाँ :

मु० इक़बाल कहते हैं कि बर्सात के मौसम में कभी कभी जब खेतों की पगडंडी से गुज़र होता तो बेशुमार चिंव्टे क़तार दर क़तार उस पगडण्डी पर चल रहे होते। हम लोग पगडंडी पर चल पड़ते और चिंव्टों का ख़याल नहीं करते लेकिन यह पगडंडी से परे हटकर कीचड़ में चलते ताकि चिंव्टियों को तकलीफ़ न हो। जब इनपर क़त्ल का झूटा केस बनाया गया तो क्राइम ब्रांच के क़ुद्दूस शेख़ इंक्वाइरी के लिये आये, मुहल्ले वालों ने उन्हें बताया कि हमारी नज़र में तो गौहर शाही ने कभी मच्छर भी नहीं मारा होगा, कहाँ एक इंसान का क़त्ल!

हज़रत गौहर शाही और उनकी मुमानी :

यह उन दिनों की बात है जब मैं आठवीं जमाअत का तालिब इल्म था। एक दफ़ा मुमानी (जो कि ज़ाहिदो पारसा और इबादत गुज़ार थीं लेकिन हिर्स और हसद में भी मुब्तिला थीं जोकि अकसर इबादत गुज़ारों में होता है) ने कहा कि तुझमें और सब तो ठीक है लेकिन तू नमाज़ नहीं पढ़ता। मैंने जवाब दिया : कि नमाज़ रब का तोहफ़ा है मैं नहीं चाहता कि नमाज़ के साथ साथ बुख़्ल, तकब्बुर, हसद, कीना की मिलावट रब के पास भेजूं जब कभी भी नमाज़ पढूंगा तो सही नमाज़ पढूंगा, तुम लोगों की तरह नहीं कि नमाज़ भी पढ़ते हो और ग़ीबत, चुग़ली, बुहतान जैसे कबीरह गुनाह भी करते हो।

हज़रत गौहर शाही अपने बचपन के हालात बयान फ़रमाते हैं :

दस बारह साल की उम्र से ही ख़्वाब में रब से बातें होती थीं और बैतुलमामूर नज़र आता था लेकिन मुझे इसकी हक़ीक़त का इल्म नहीं था। चिल्लाकशी के बाद जब वही बातें और वही मनाज़र सामने आये तो हक़ीक़त आशकार हुई। एक दफ़ा का ज़िक्र है कि मेरा एक मामूँ जो कि फ़ौज में मुलाज़िम था वह तवाइफ़ों के कोठों पर जाया करता था, घर वालों के मना करने की वजह से वह मुझे अपने साथ ले जाता ताकि घर वालों को शक न गुज़रे। मुझे चाय और बिस्कुट खाने को देता और ख़ुद अंदर चला जाता, जबकि मुझे तवाइफ़ों और कोठों की समझ बूझ नहीं थी। मामूं मुझसे यही कहता कि यह औरतों का आफ़िस है। कुछ दिनों बाद मेरा दिल इस जगह से उचाट हो गया। तब मामूं ने कहा कि यह औरतें हैं और अल्लाह ने इनको इसी मक़सद के लिए बनाया है। यअ़नी उसने मुझे भी मुलौविस करने की कोशिश की। मामूं की बातों का इतना असर हुआ कि नफ़्स की कश्मकश में रात भर न सो सका और फिर अचानक आंख लग गई। देखता हूं कि एक बड़ा गोल चबूतरा है और मैं उसके नीचे खड़ा हूं, ऊपर से कर्ख़्त क़िस्म की आवाज़ आती है : ''उसको लाओ'', देखता हूं कि मामू को दो आदमी पकड़कर ला रहे हैं और इशारा करते हैं कि यह है। फिर आवाज़ आती है कि : ''इसको गुर्ज़ों से मारो'', तब उसको

मारते हैं। तो वह चीख़ें मारता और दहाड़ता है और चीख़ते चीख़ते उसकी शक्ल सूवर की तरह बन जाती है। फिर आवाज़ आती है कि : ''तू भी इसके साथ अगर शामिल हुआ तो तेरा भी यही हाल होगा''। फिर मैं तौबा तौबा करता हूं और आँख खुलती है तो ज़ुबान पर यही होता है कि : ''या रब्ब मेरी तौबा, या रब्ब मेरी तौबा'' और कई साल तक इस ख़्वाब का असर रहा।

इसके दूसरे दिन मैं गाँव की तरफ़ जा रहा था, बस में सवार था रास्ते में देखा कुछ डाकू एक टैक्सी से टेप रिकार्डर निकालने की कोशिश कर रहे थे। ड्राइवर ने मुज़ाहिमत की तो उसपर छुरियों से वार करके क़त्ल कर दिया। यह मन्ज़र देख कर हमारी बस वहाँ रूक गई और वह डाकू हमें देख कर फ़रार हो गये और ड्राइवर ने तड़प कर हमारे सामने जान देदी, फिर ज़ेहन में यही आया कि ज़िन्दगी का क्या भरोसा, रात को सोने लगा तो अंदर से यह शेअ्र गूंजना शुरू हो गये,

कर सारी ख़तायें माफ़ मेरी.... तेरे दर पे मैं आन गिरा

और सारी रात गिरियह ज़ारी में गुज़री, इस वाक़िआ के कुछ अ़र्सा बाद मैं दुनिया छोड़कर जामदातार रह. के दरबार पर चला गया, लेकिन वहाँ से भी कोई मन्ज़िल न मिली और मेरा बहनोई मुझे वहाँ से वापस दुनिया में ले आया। 34 साल की उम्र में बरी इमाम रह. सामने आये और कहा कि : ''अब तेरा वक़्त है दोबारह जंगल जाने का''। तीन साल चिल्लाकशी के बाद जब कुछ हासिल हुआ तो दोबारह जामदातार के दरबार गया साहबे मज़ार सामने आ गये, मैंने कहा : ''उस वक़्त अगर मुझे कुबूल कर लिया जाता तो बीच में नफ़सानी ज़िन्दगी से महफ़ूज़ रहता''। उन्होंने जवाब दिया : ''उस वक़्त तुम्हारा वक़्त नहीं था''।

****

19 साल की उम्र में जुस्साए तौफ़ीक़े इलाही साथ लगा दिया गया था जो एक साल रहा और उसके असर से कपड़े फाड़ कर सिर्फ़ एक धोती में जामदातार रह. के जंगल में चले गये थे। जुस्साए तौफ़ीक़े इलाही आ़र्ज़ी तौर पर मिला था, जो कि 14 साल ग़ायेब रहा और फिर 1975 में दोबारह सिहवन शरीफ़ के जंगल में लाने का सबब भी यही जुस्साए तौफ़ीक़े इलाही ही था।

25 साल की उम्र में जुस्सा-ए-गौहर शाही को बातिनी लशकर के सालार की हैसियत से नवाज़ा गया, जिसकी वजह से इब्लीसी लशकर और दुनियावी शैतानों के शर से महफ़ूज़ रहे। जुस्साए तौफ़ीक़े इलाही और तिफ़्लेनूरी, अरवाह, मलाइका और लताइफ़ से भी अअ़ला (Special) मख़लूक़े हैं, इनका तअ़ल्लुक़ मलाइका की तरह बराहेरास्त रब से है और इनका मक़ाम, मक़ामे अहदियत है।

35 साल की उम्र में 15 रमज़ान 1976 को एक नुतफ़ा-ए-नूर क़ल्ब में दाख़िल किया गया, कुछ अ़र्सा बाद तअ़लीमो तर्बियत के लिये कई मुख़तलिफ़ मुक़ामात पर बुलाया गया। 15 रमज़ान 1985 में जबकि आप दुनियावी ड्युटी पर हैदराबाद मामूर हो चुके थे, वही नुतफ़ा-ए-नूर तिफ़्लेनूरी की हैसियत पाकर मुकम्मल तौर पर हवाले कर दिया गया, जिसके ज़रिए दरबारे रिसालत सल. में ताजेसुल्तानी पहनाया गया। तिफ़्लेनूरी को बारह साल के बाद मर्तबा अ़ता होता है लेकिन दुनियावी ड्युटी की वजह से यह मर्तबा 9 साल में ही अ़ता हो गया।

"जशनेशाही मनाने की वजूहात"

15 रमज़ान 1977 को अल्लाह की तरफ़ से ख़ास इल्हामात का सिलसिला भी शुरू हुआ था। राज़ियह मर्ज़ियह का वअ़दा हुआ, मर्तबा भी इर्शाद हुआ था।

चूंकि हर मर्तबे और मेअ़राज का तअ़ल्लुक़ 15 रमज़ान से है इस लिये इसी रोज़ इसी ख़ुशी में जशने शाही मनाया जाता है।

1978 में हैदराबाद आकर रूश्दो हिदायत का सिलसिला जारी कर दिया और देखते ही देखते यह सिलसिला पूरी दुनिया में फैल गया। लाखों अफ़राद के क़ुलूब अल्लाह अल्लाह में लग गये। लाखों अफ़राद के क़ुलूब पर इस्म अल्लाह नक़्श हुआ और इनको नज़र आया। लाखों अफ़राद कशफ़ुल क़ुबूर और कशफ़ुल हज़ूर तक पहुंचे। लाखों लाइलाज मरीज़ शिफ़ायाब हुए। हर मज़हब, हर क़ौम, हर नस्ल के अफ़राद हज़रत गौहर शाही से रूश्दोहिदायत हासिल करके अल्लाह की मुहब्बत और ज़ात तक पहुंचना शुरू हो गये।

ख़ुदा की क़सम! मैं भी इन ही लोगों में से हूँ जिनके दिलों पर ख़ुशख़त लिखा हुआ इस्म अल्लाह चमक रहा है।

(अज़ शेख़ निज़ामुद्दीन.... मेरीलैण्ड, अमेरिका)

चांद और सूरज पर तसावीर के बारे में मुकम्मल वज़ाहत

गौहर शाही रूहानी तअ़लीम और जगह जगह ख़िताबात के ज़रिए पूरी दुनिया में मशहूर और दिल अ़ज़ीज़ हो गये।

1994 में मानचेस्टर (इंग्लैण्ड) में कुछ लोगों ने चांद पर गौहर शाही की तस्वीर की निशानदेही की। फिर पाकिस्तान और दूसरे मुमालिक से भी शहादतें वसूल हुईं, वीडियो के ज़रिए चांद की तसावीरें उतारी गईं। फिर बैरूने मुमालिक और नासा से चांद की तस्वीरें मंगवाई गईं, शुरू शुरू में तस्वीरें मद्धिम थीं, लेकिन गुज़िश्तह दो साल से इतनी वाज़ेह हो गईं कि दूरबीन या कम्प्यूटर के बग़ैर भी देखी जा सकती हैं।

1996 में हमारे नुमाइन्दह ज़फ़र हुसेन ने नासा वालों को निशानदेही कराई। उन्होंने कहा हमें पता है कि चांद पर चेहरा है, यह चेहरा ईसा का है, जो दो सौ मील लंबी रोशनी से मअ़लूम होता है। अमरीकी शहरियों ने भी नासा पर ज़ोर दिया कि इस तस्वीर के बारे में कुछ वज़ाहत की जाये लेकिन (गौहर शाही का) एशियाई होने की वजह से नासा ख़ामोश रहा। बल्कि नासा के ही प्रोफेसर माहिरे फ़ल्कियात डिंसमोर आल्टर Dinsmore Alter ने अपनी तस्नीफ़ शुदह किताब (Pictorial Astronomy) में तस्वीर को कुछ रद्दोबदल करके औ़रत के रूप में पेश किया, और पूरी ईसाई मिशनरी में यह अफवाह फैला दी कि चांद पर हज़रत मरियम की तस्वीर है।

जब पाकिस्तान के अख़बारों में यह ख़बर नशर हुई तो बहुत से लोगों ने इसकी तहक़ीक़ के बाद तस्दीक़ करी, बहुत से लोगों ने बग़ैर तहक़ीक़ के तमस्ख़र उड़ाया और बहुत से लोगों ने इसे जादू समझा। कुछ अ़र्से बाद ख़िला में भी तस्वीर का शोर हुआ। लेकिन उसका असर ज़ाकिरीन (मुअ़तक़दीने गौहर शाही) के अ़लावह कहीं भी न दिखा।

1998 में परचम अख़बार में यह ख़बर छपी कि हज्रअस्वद में किसी की शबीह नज़र आ रही है। हम इस शबीह के मुतअ़ल्लिक़ पहले ही से मअ़लूमात रखते थे। बल्कि हज्रअस्वद के कई तोग़रे निशान ज़दह भी हमारे पास मौजूद थे और तक़रीबन हर सरफ़रोश तहक़ीक़ कर चुका था। ख़ामोशी की वजह मुसलमानों में फ़ितने का अन्देशह था। लेकिन अख़बारी ख़बर के बाद हमें भी हौसला हुआ और भरपूर अंदाज़ में प्रेस रिलीज़ शायेअ़ की गईं। तक़रीबन हर मुसलमान ने इसकी तहक़ीक़ करी, क्योंकि मुसलमानों के ईमान की बात थी। कसीर तबक़ह मुत्तफ़िक़ हुआ, क्योंकि तस्वीर इतनी वाज़ेह थी कि इसको झुटलाना मुशकिल था। इस लिये कई लोगों ने मशहूर कर दिया कि यह भी जादू है।

तक़रीबन हर मुल्क में चांद और हज्रअस्वद की तसावीर रोशनास कराई गईं। सऊ़दी अ़रब और उसके हमनवा सीख़पा हो गये, जैसे कि हज्रअस्वद में तस्वीर गौहर शाही ने लगाई हो, वह कहते हैं कि तस्वीर हराम होती है, हज्रअस्वद पर कैसे आ गई? यह न सोचा कि रब की तरफ़ से कोई भी निशानी हराम नहीं हो सकती। सऊ़दी हुकूमत ने अपनी शरई अ़दालतों से यह फ़ैसला ले लिया है कि गौहर शाही वाजिबुल क़त्ल है।

अगर गौहर शाही सरज़मीने मक्का में क़दम रखे तो उसे क़त्ल कर दिया जाये।

पाकिस्तान में भी सऊ़दी नवाज़ फ़िर्क़े गौहर शाही और उसकी तअ़लीमात को मिटाने की सिर तोड़ कोशिश कर रहे हैं। झूटे मुक़दमात, जिनमें दफ़अ़ **295** का भी मुक़दमा बना दिया गया है। और कई दफ़ा गौहर शाही पर क़ातिलानह हमला भी किया गया है।

****

अब सूरज पर भी गौहर शाही की तस्वीर नुमायाँ हो गई है

हमने हुकूमते पाकिस्तान को मुक़दमात की वजह और तसावीर की तहक़ीक़ के लिये कई बार आगाह किया। लेकिन अल्लाह की इन निशानियों को हुकूमती सतह पर भी फ़िर्क़ावारियत के दबाव की वजह से झुटलाया गया, बल्कि नवाज़ हुकूमत ने सिन्ध हुकूमत पर भी ज़ोर दिया कि गौहर शाही को किसी तरीक़े से फँसाया, दबाया या मिटाया जाये, और अब हम फ़ौजी हुकूमत से राबता कर रहे हैं कि वह इन निशानियों की इंसाफ़ से तहक़ीक़ करे और किसी भी डर, ख़ौफ़, दबाव या फ़िर्क़ावारियत की वजह से अल्लाह की निशानियों को न झुटलाया जाये। अल्लाह की यह निशानियाँ फ़ितना डालने के लिये नहीं, बल्कि फ़ितना मिटाने के लिये हैं। और इसका सबूत है कि गौहर शाही का दर्स जो अमन और अल्लाह की मुहब्बत का दर्स है, जिसके ज़रिए हर मज़हब वाले अपनी इसलाह करने में लग गये। और आज हिंदू , मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई गौहर शाही की अ़क़ीदत की वजह से एक प्लेटफार्म पर जमा हो रहे हैं, और तारीख़ में यह पहला रिकार्ड है कि किसी भी मुस्लिम को गिरजों, मंदिरों और गुरूद्वारों में वअ़्ज़ और तक़रीर के लिये मसनदों पर बैठाया गया हो। ऐसे शख़्स की दिलजूई की जानी चाहिये जो मुल्क के लिये बाइसे **फ़ख्र** हो और अल्लाह की तरफ़ मामूर हो। और उसकी सदाक़त के लिये अल्लाह निशानियाँ दिखा रहा हो, और जिसकी नज़र से लोगों के दिल अल्लाह अल्लाह में लगकर अल्लाह के मुहिब्ब बन गये हों। लेकिन दुशमने अवलिया और दुशमने अहले बैत के मोलवी और जमाअ़तें इनके ख़िलाफ़ सर्बस्तह हो गयीं हैं। बेबुनियाद मुक़दमों, बेबुनियाद हरबों और बेबुनियाद प्रोपेगंडों के ज़रिए अ़वाम का रूख़ हज्रअस्वद से हटाने की कोशिश की जा रही है। जबकि यह बहुत नाज़ुक और अहम मसला है, मुसलमानों के ईमान का ख़तरा है। तो इसकी तहक़ीक़ात के लिये ख़ामोशी क्यों है? इसके मुतअ़ल्लिक़ पूरी दुनिया में इतना मनफ़ी और मुस्बत प्रोपेगंडा हो चुका है कि अब इसको दबाना मुश्किल है। इधर वलियों को मानने वाले उलमाएसू गौहर शाही से बुग्ज़ो हसद की वजह से गूंगे बन गये हैं। तस्वीर को वाज़ेह होने की सूरत में झुटलाना मुश्किल हो गया, तो कहते हैं कि चांद पर जादू चल गया, जबकि हुज़ूर सल. ने कहा था कि चांद पर जादू नहीं हो सकता, फिर कहते हैं हज्र अस्वद भी जादू की लपेट में आ गया है। अगर काबा भी जादू की ज़द में आ गया है, तो फिर मुस्लिम के पास तहफ्फ़ुज़ की कौन सी जगह है? मिसाल देते हैं कि हुज़ूर सल. पर भी जादू हो गया था, काबा हुज़ूर सल. से अफ़ज़ल नहीं है।

बेशक हुज़ूर सल. पर जादू हो गया था। लेकिन उसके तोड़ के लिये सूरह वन्नास आ गई थी। तुम भी वन्नास के ज़रिए चांद और हज्र अस्वद पर फूंके मारो, अगर यह तस्वीर न मिटें बल्कि पहले से भी ज़्यादह रोशन हो जायें तो फिर तुम्हें हक़ को तस्लीम करना पड़ेगा। वरना फिर तुम्हारे अंदर अबूजहल ही है।

****

इस अमरीकी मैग्ज़ीन के सरे वरक़ पर मौजूद (AZ) एरीज़ोना स्टेट के मर्कज़ी शहर Phoenks का यह ताइराना मनज़र है जिसमें मौजूद चांद पर हज़रत गौहर शाही की शबीह वाज़ेह नज़र आती है।

Official Visitors Guide, Summer * Fall 1996

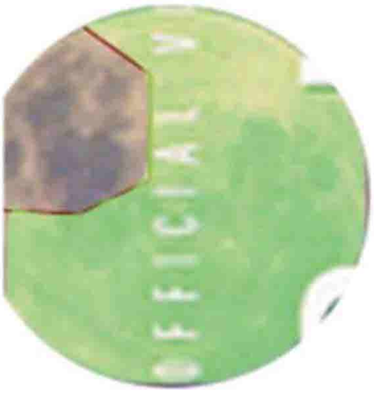

रिपोर्ट का तर्जुमा :
मैंने फीनिक्स शहर के वस्ती हिस्से की तस्वीर ली और इसमें नमूदार होने वाली चांद की तस्वीर में एक इंसानी चेहरा की शबाहत नज़र आती है, जब इसको 90 डिग्री के ज़ाविये पर देखा जाये।

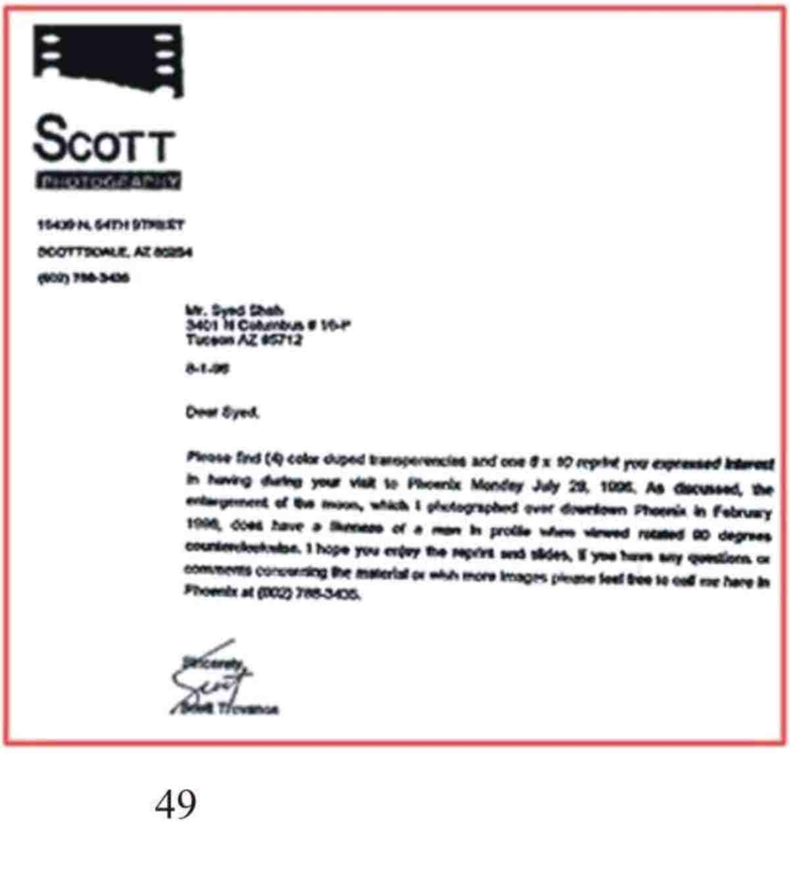

SCOTT
PHOTOGRAPHY

15430 N. 64TH STREET
SCOTTSDALE, AZ 85254
(602) 788-3436

Mr. Syed Shah
3401 N Columbus # 16-P
Tucson AZ 85712

8-1-96

Dear Syed,

Please find (4) color duped transparencies and one 8 x 10 reprint you expressed interest in having during your visit to Phoenix Monday July 29, 1996. As discussed, the enlargement of the moon, which I photographed over downtown Phoenix in February 1996, does have a likeness of a man in profile when viewed rotated 90 degrees counterclockwise. I hope you enjoy the reprint and slides. If you have any questions or comments concerning the material or wish more images please feel free to call me here in Phoenix at (602) 788-3436.

Sincerely,
Scott Trevanos

चांद

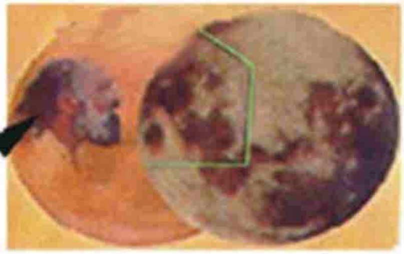

गौहर शाही

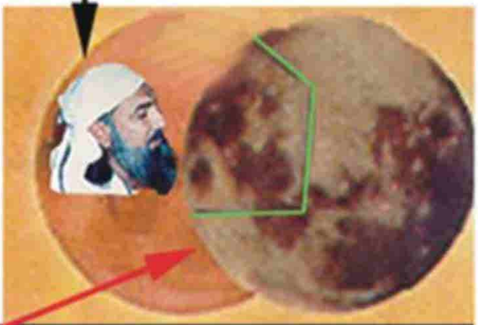

239

असली तसावीर के मुख़तलिफ़ अन्दाज़

चांद की यह तस्वीर नासा NASA की तरफ़ से रिलीज़ हुई है

Http://oposite.stsci.edu/pubinfo/pr1999/14

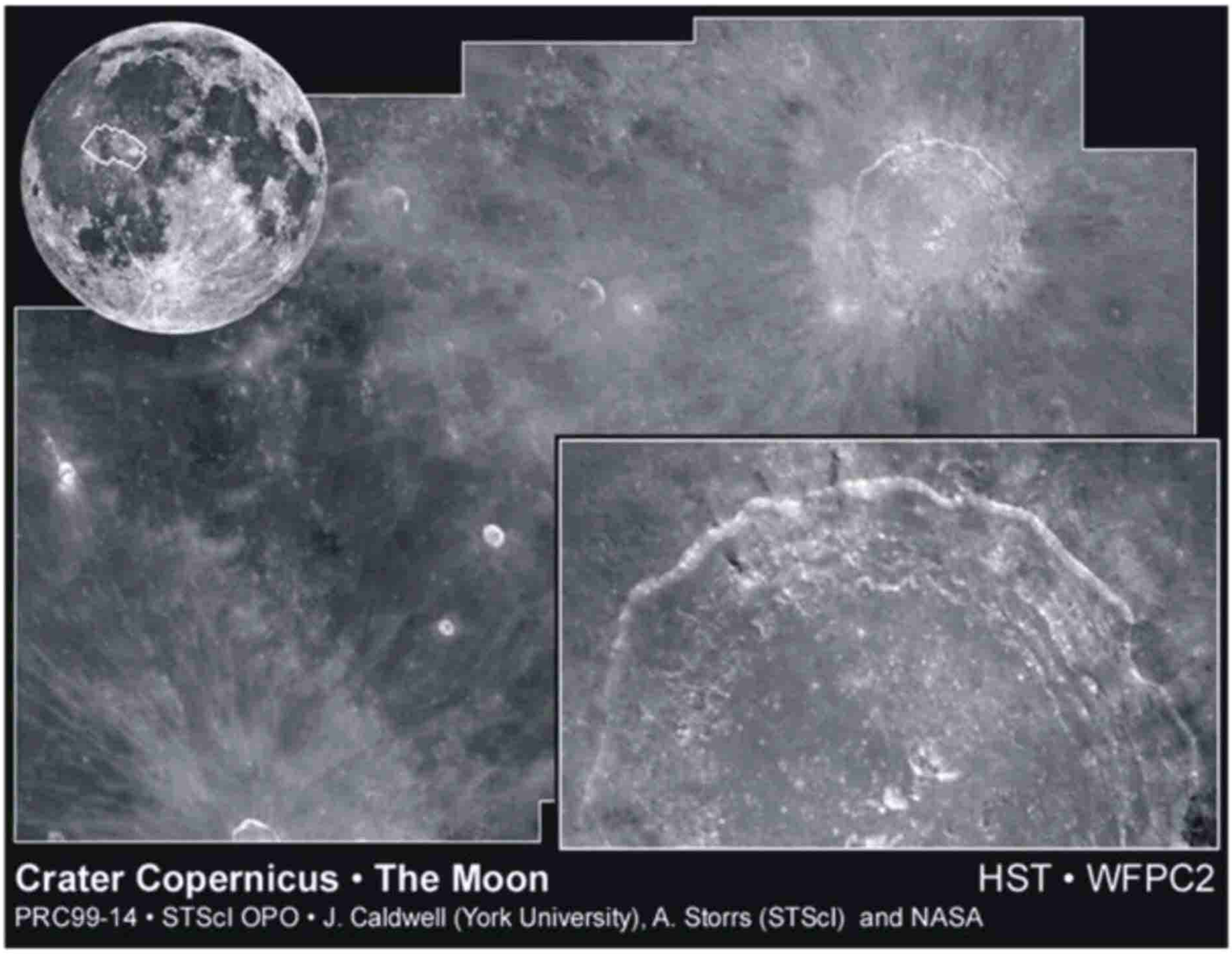

चांद की इस तस्वीर के बारे में मज़ीद तफ़सीलात अगले सफ़हे पर हैं

हम तुम्हें अ़न्क़रीब दिखायेंगे अपनी निशानियाँ काइनात़ में और तुम्हारी जानों में, हत्ता कि तुम मान जाओगे कि यह हक़ है

(कलामे इलाही)

गौहर शाही

लौलाक लमा देख, ज़मीं देख, फ़िज़ा देख
मशरिक़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख

(इक़बाल)

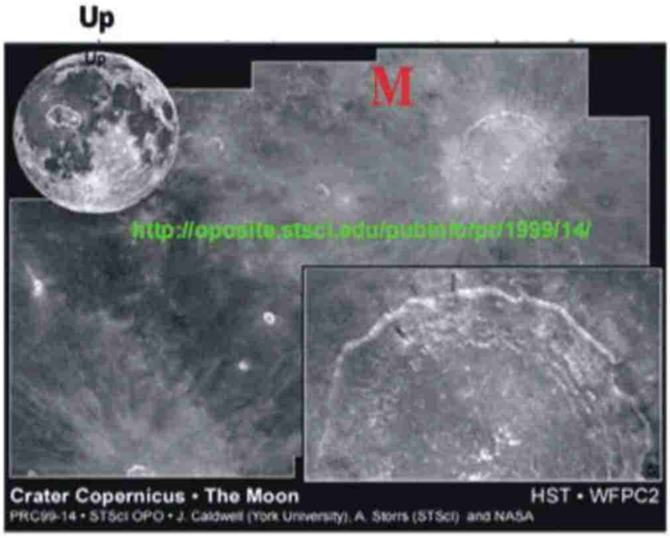

ऊपर वाली चांद की तस्वीर को बाईं तरफ़ up के मुताबिक़ घुमायें

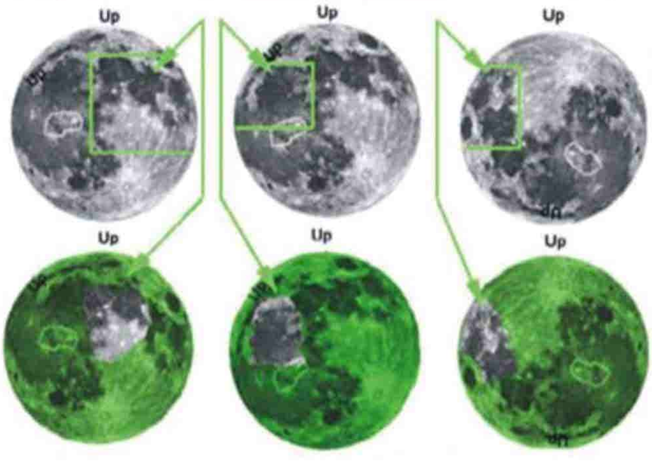

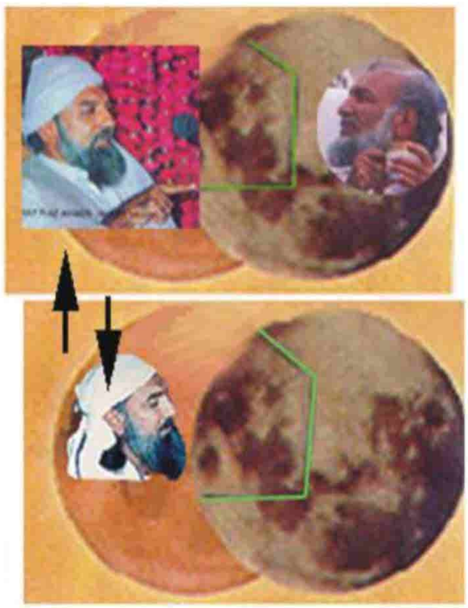

चांद

यह तसावीर किताब (PICTORIAL ASTRONOMY) से हासिल की गईं हैं

Plate 15-3. Phase of the moon (page 60)

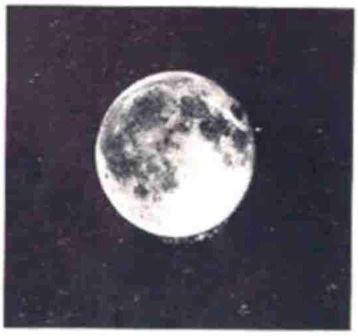

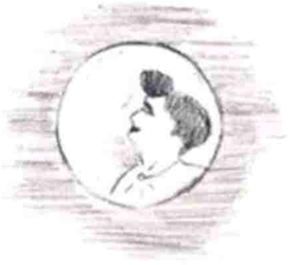

PLATE 15-4. The Lady in the Moon. If the page is held at arm's length, the drawing on the right will help you find the lady in the photograph of the moon on the left. To find her in the sky, look at the moon when it is full or during a few days before full moon. (Page 64)

PICTORIAL ASTRONOMY

by

DINSMORE ALTER and CLARENCE H. CLEMINSHAW

by

DINSMORE ALTER, Ph.D., Sc.D

CLARENCE H. CLEMINSHAW, Ph.D.

GRIFFITH OBSERVATORY
CITY OF LOS ANGELES

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form, except by a reviewer, without the permission of the publisher.

Library of Congress Catalog Card Number 56-7639

Manufactured in the United States of America

6 7 8 9 10

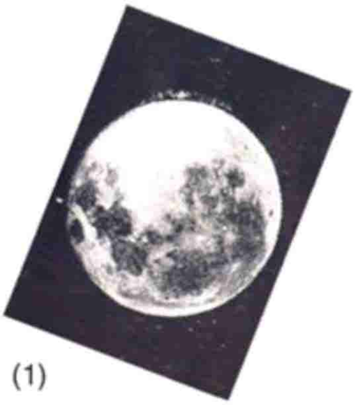

(1)

(2)

(3)

जब अमरीका में यह इंकशाफ़ हुआ कि चांद पर किसी एशियाई की तस्वीर है। जो हुलिया से मुसलमान नज़र आता है। तो उन्होंने तस्वीर का रूख़ तबदील कर दिया, नं० 1, चांद की ओरिजिनल तस्वीर है। नं० 2, तस्वीर भी चांद से ही तअ़ल्लुक़ रखती है। जिसमें उन्होंने कुछ रद्दोबदल की, सिर के ऊपर जो चेहरा और दाढ़ी थी उसे बराबर कर दिया गया। ताकि चेहरे की जगह बाल नज़र आयें, यह हुलिया क्लीनशेव आदमी का है, मुलाहिज़ह हो तस्वीर नं० (3)। जिसे Dinsmore ने औ़रत के रूप में रोशनास कराने की कोशिश की ताकि लोगों का रूख़ हज़रत मरियम की तरफ़ किया जाये।

मुख़्तलिफ़ रसाएल और कम्पनियों के चांद के इशाअ़त शुदह फोटो

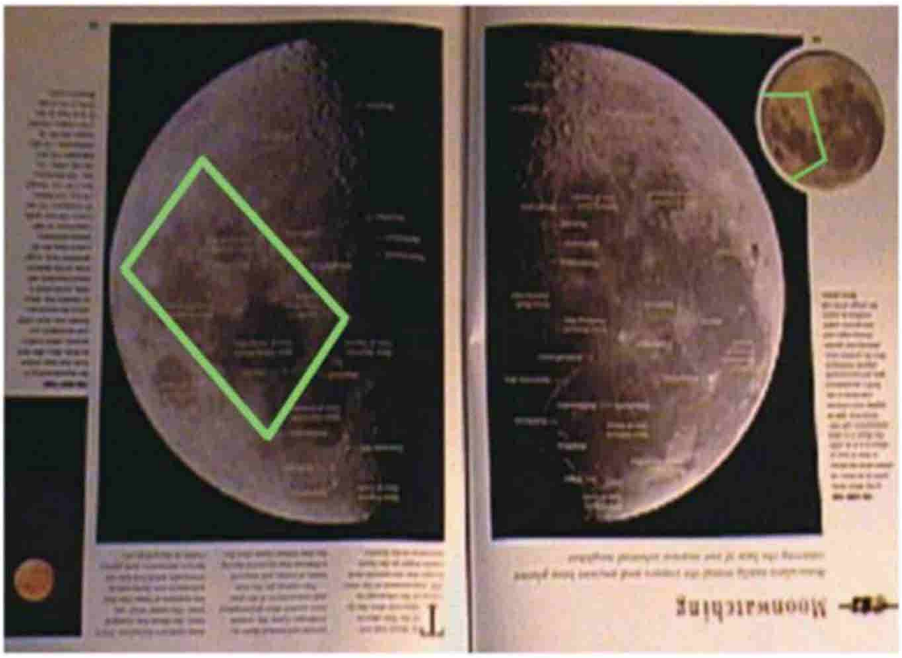

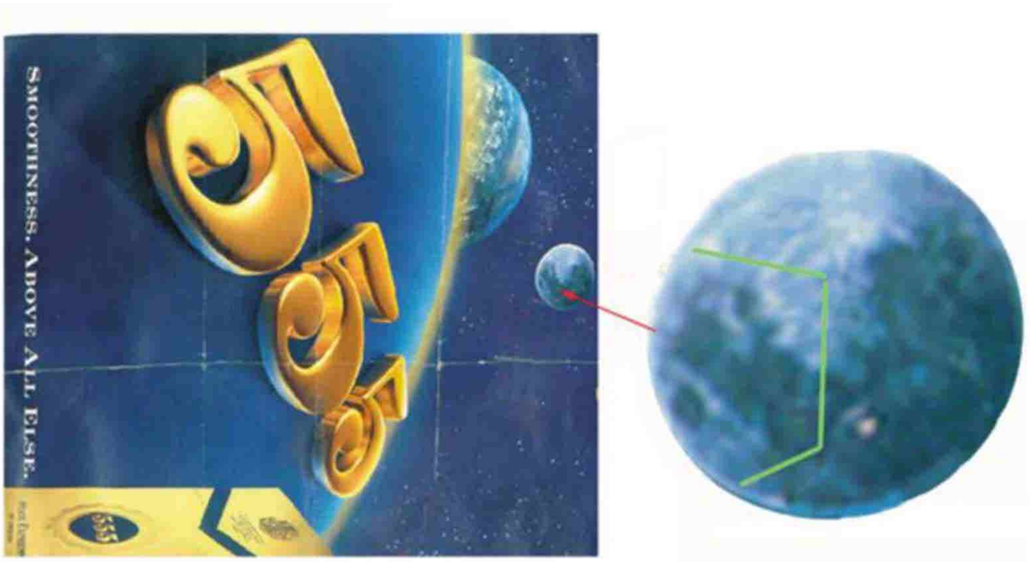

आप कहीं भी हों, मशरिक़ में या मग़रिब में अपने ज़ाती कैमरे से चांद की तसावीर उतारें, किसी भी डिगरी में ऐसी ही तस्वीरें नज़र आयेंगी, फिर उनके मुताबिक़ चांद को देखें

चांद की यह तस्वीर लंदन से शायेअ़ शुदह किताब (SKY WATCHING) से हासिल की गई है

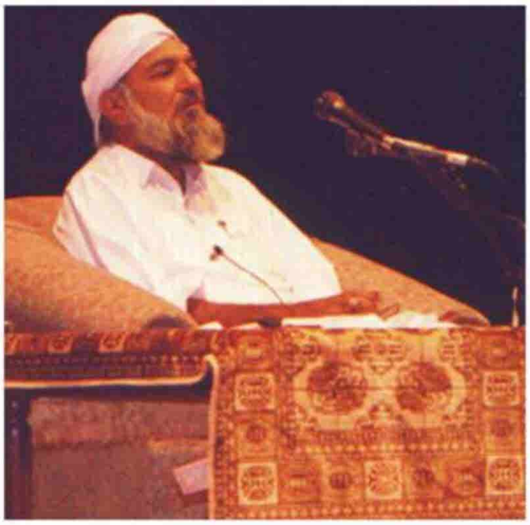

हज़रत गौहर शाही

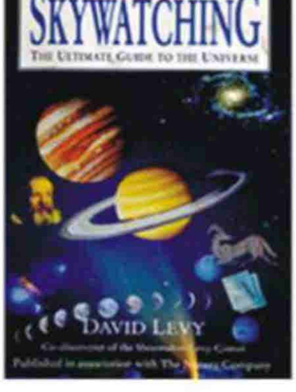

सूरज की यह तस्वीर नासा **NASA** की तरफ़ से रिलीज़ हुई है

मज़ीद मअ़लूमात के लिये मुन्दर्जह ज़ेल वेबसाइट पर राबता करें
http://thalia.gsfc.nasa.gov/~gibson/SPARTAN/sohof.html

सूरज की इन तसावीर को NORTH के
मुताबिक़ घुमाकर देखें

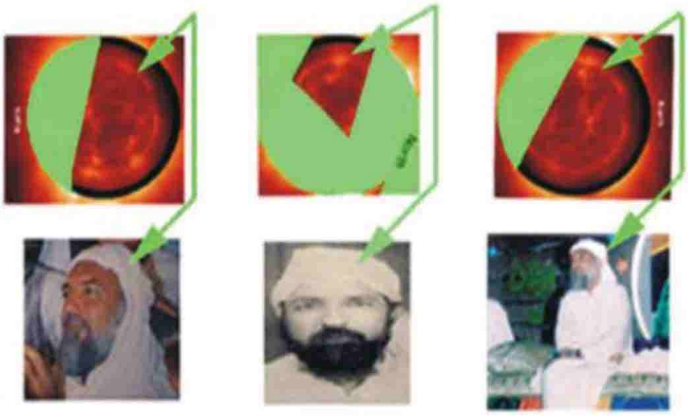

सूरज की तस्वीर

तसावीरे हज़रत गौहर शाही मुख़तलिफ़ अवक़ात में

नासा से हासिल कर्दह सूरज की इस तस्वीर में हज़रत गौहर शाही
का यह चेहरा भी बहुत वाज़ेह नज़र आता है

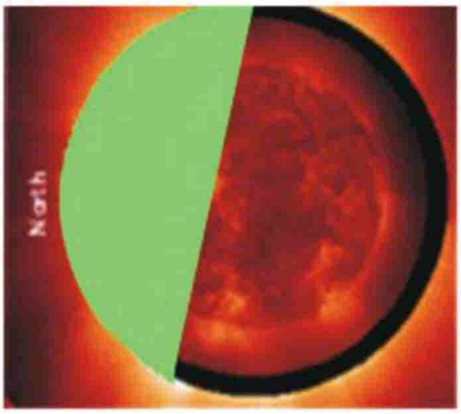

चांद, सूरज क्या गवाही देंगे तेरी ऐ गौहर
है सबूते हक़ तेरा इस दिल में आ जाने का नाम

यूनुस

NASA FINDS MASSIVE FACE IN SPACE!

NASA has released a shocking photograph that clearly shows a gigantic face floating in distant space!

The breathtaking photo was taken during the shuttle mission in late February — but experts admit they are baffled as to where the face originated.

"This is plainly the image of a man's face far, far off in the universe," said astronomer Isaac Hawkins of Atlanta, Ga.

"Whatever this is, it clearly is enormous. We estimate it is as large as 150 of our suns," Hawkins said. "For something this size to go undetected during our previous years of space exploration is virtually impossible.

"The only explanation is that it somehow has an ability to appear and disappear at will, which would make it unique."

The face was visible to shuttle astronauts during only a 12-minute period.

"When it came into view it startled astronauts," Hawkins said. "A couple of them at first thought they were hallucinating.

"But when they transmitted the photograph of the face, everyone at NASA realized this was a major space discovery."

Making the mystery even more mind-twisting is the way the face faded away into the darkness of ...

By WHITNEY ASQUE
Weekly World News

'It's as large as 150 suns!'
— Astronomer Isaac Hawkins

ASTOUNDING NASA photo of

अट्लान्टा के ख़लाबाज़ आइज़ेक हाकिंग्ज़ ने कहा कि यह वाज़ेह तौर पर किसी इंसान के चेहरे का अक्स है। यह अपनी मर्ज़ी से ज़ाहिर और ग़ाइब होने की सलाहियत रखता है, नासा में मौजूद हर एक ने यह महसूस किया कि यह बहुत बड़ी ख़लाई दर्याफ़्त है। हो सकता है कि यह चेहरा कई सालों से हमें देख रहा हो। हाकिंग्ज़ ने मज़ीद कहा कि हमारे ज़ेहनों से यह ख़याल भी गुज़रा है कि शायद यह खुदा का चेहरा हो, और कहीं भी इसकी तर्दीद नहीं है।

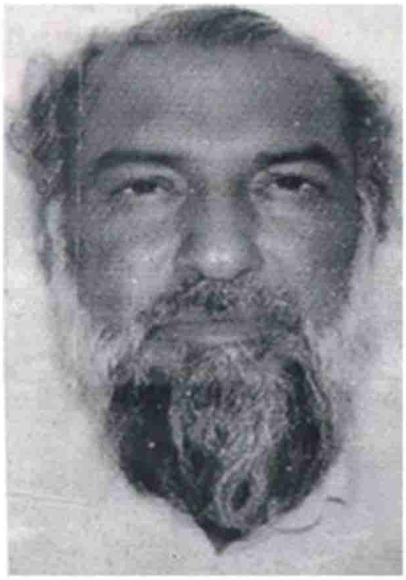

हज़रत गौहर शाही

हज़रत गौहर शाही का यह अक्से मुबारक दर्असल वह बातिनी मख़लूक़ ''तिफ्लेनूरी'' है, जो चन्द ख़ास औलिया के लिये मख़सूस है और जिसका तज़किरा अवलियाए उज़्ज़ाम की मुख़तलिफ़ किताबों में दर्ज है

A human face is discovered on the black stone (Hijr - e - Aswad) in Makkah, Saudi Arabia.
Daily Parcham
Karachi,
Pakistan
26th May 1998
PARCHAM
پرچم
Sheikh Hamad bin Abdallah
Spiritualists in Makkah say that this is the face of Imam Mehdi (Al-Muntazar)
حجر اسود پر انسانی شبیہ

Computer Report from Pakistan
APTECH CENTRE
It is said amongst spiritual circles around the world that in addition to his facial images appearing on the sun and the moon, the face on the black stone (Hijr - e - Aswad) in Makkah, Saudi Arabia, is that of Riaz Ahmed Gohar Shahi of Pakistan.
ماہنامہ
دی گریٹ گاڈ
حجر اسود میں سیدنا گوہر شاہی کی شبیہ کا انکشاف

हज्र अस्वद पर इंसानी शबीह उ़लमा में खलबली

बावसूक़ ज़रायेअ़ के मुताबिक़ कराची के जैयद उ़लमा एक मअ़रूफ़ दारूल उ़लूम में सिर जोड़ कर बैठे रहे। शबीह का नज़र आना एक हक़ीक़त है लेकिन शरीअ़त की रू से किस तरह तस्दीक़ की जा सकती है? उ़लमा हतमी फ़ैसले पर मत्तफ़िक़ न हो सके और नज़रियाती तौर पर दो गिरोहों में तक़सीम हो गये सऊ़दी उ़लमा का फ़तवा या आराअ का इंतेज़ार। दीगर मुमालिक के जैयद उ़लमा से आराअ हासिल करने पर इत्तेफ़ाक़।

حجر اسود پر انسانی شبیہ علماء میں کھلبلی

باوثوق ذرائع کے مطابق کراچی کے جید علماء ایک معروف دار العلوم میں سر جوڑ کر بیٹھے رہے

شبیہ کا نظر آنا ایک حقیقت ہے لیکن شریعت کی رو سے کس طرح تصدیق کی جا سکتی ہے

علماء حتمی فیصلے پر متفق نہ ہو سکے اور نظریاتی طور پر دو گروہوں میں تقسیم ہو گئے

سعودی علماء کا فتویٰ یا آراء کا انتظار دیگر ممالک کے جید علماء سے آراء حاصل کرنے پر اتفاق

7

جا سکتی ہے آخر میں چند اعتدال پسند علماء نے معاملے کی نزاکت کو سمجھتے ہوئے فیصلہ کیا کہ سعودی علماء کے فتویٰ یا آراء کا انتظار کیا جائے اور اس سلسلے میں دیگر ممالک کے جید علماء کی آراء بھی حاصل کی جائے تاکہ اس کی روشنی میں آئندہ کا لائحہ عمل متفقہ طور پر طے کیا جا سکے اس وقت اس بات کی تصدیق یا تردید نہ کی جائے یاد رہے کہ حجر اسود پر انسانی شبیہ کی خبر چند اخبارات نے شائع کی جبکہ ملک کے بڑے بڑے اخبارات نے علماء کی مخالفت کے ڈر سے یہ خبر اپنے اخبارات میں شائع نہیں کی لیکن یہ خبر تاحال عوام الناس میں توجہ کا مرکز ہے۔

SADA-E-SARFAROOSH Hyderabad

صدائے سرفروش حیدرآباد

Tel: 783660-869990

ایڈیٹر سید ظفر علی کاظمی

جلد نمبر 7 | 16 تا 30 جون 98ء بمطابق 20 صفر تا 4 ربیع الاول 1419ھ | شمارہ نمبر 12

حجر اسود پر انسانی شبیہ نمودار | عالم اسلام میں سنسنی

یہ شبیہ اتنی واضح ہے کہ اسے کوئی بھی نہیں جھٹلا سکتا' بعض لوگوں کا کہنا ہے کہ یہ امام مہدی علیہ السلام کا چہرہ اور حلیہ مبارک ہے

حجر اسود پر انسانی شبیہ کے نمایاں اثرات پائے گئے ہیں جو دیکھنے میں بالکل الٹی سمت پر ہیں' شیخ حماد بن عبداللہ

نئے دور کا نیا اخبار ☆ قیمت میں سب سے کم ☆ خبروں میں سب سے آگے

Daily MAHASIB Karachi

روزنامہ محاسب کراچی

قیمت 2 روپے

کراچی (محاسب نیوز) سعودی عرب سے موصولہ ایک فیکس کے مطابق شیخ حماد بن عبداللہ نے مکہ المکرمہ سے ایک اعلامیہ جاری کیا ہے کہ اس مرتبہ حج سے قبل حجر اسود پر انسانی شبیہ کے نمایاں آثار موجود پائے گئے جو دیکھنے میں بالکل الٹی سمت پر ہے جس کی وجہ سے کسی کو محسوس نہیں ہوتی نشاندہی ہونے کے بعد دیکھی جا سکتی ہے شیخ حماد بن عبداللہ نے کہا کہ دو باتیں ہو سکتی ہیں یہ شبیہ قدرتی طور پر نمودار ہوئی ہو یا کسی نے خود بنائی ہو مگر حرم کی حدود میں سخت نگرانی اور ہر وقت خادمین حرمین اور حکومت کے پہرہ کے سبب کوئی شخص اپنے ہاتھ سے تصویر بنانے کی ہمت نہیں کر سکتا اگر یہ شبیہ شروع سے تھی تو لوگوں کو کیوں نظر نہیں آئی تصویر اتنی واضح ہے کہ اسے جھٹلایا بھی نہیں جا سکتا انہوں نے کہا کہ مکہ المکرمہ کے فقیروں میں چند نے کہا ہے کہ یہ امام مہدی علیہ السلام کا چہرہ اور حلیہ مبارک ہے جو دنیا میں کہیں موجود ہیں تاکہ لوگ انہیں پہچان سکیں انہوں نے کہا کہ حکومتی اہلکار پریشان ہیں کہ اسے کس طرح ختم کیا جائے کیونکہ تصویر شریعت میں حرام ہے حاجی اور عمرہ کرنے والے لازماً اس پتھر کو جھک کر چومتے ہیں اگر یہ کسی کی شرارت ہے تو شرک کا خدشہ بھی بڑھ رہا ہے شیخ حماد بن عبداللہ نے بتایا کہ حج کا سیزن آ گیا تھا اس لئے لوگوں کے رش کو ملحوظ خاطر رکھتے ہوئے فی الحال کوئی خاص پیش رفت اس سلسلے میں نہیں کی گئی تھی اب اس مسئلہ پر سنجیدگی سے غور و فکر کی جا رہی ہے یہ مسئلہ پورے عالم اسلام کے لئے اہم اور سنگین نوعیت کا ہے اس لئے تمام ممالک کے اخبارات کو فیکس اور حکومتوں کو مطلع کیا جا رہا ہے۔

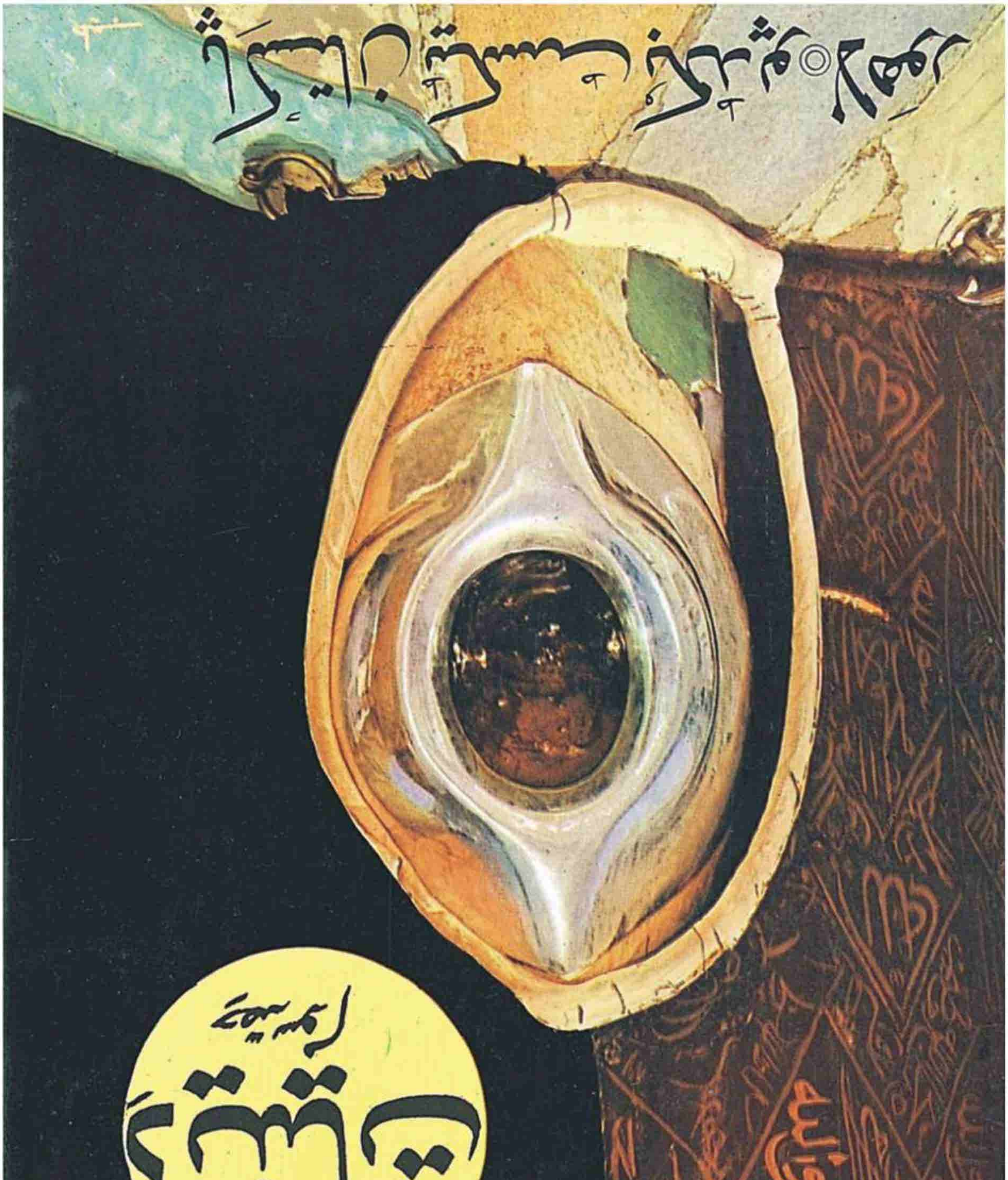

मुहकमाए तअ़लीम हुकूमते पंजाब की पब्लिश की हुई इस
दीनियात की किताब में हज्र अस्वद की तस्वीर में
हज़रत गौहर शाही की शबीह वाज़ेह तौर पर नज़र आती है।

तीस साल क़ब्ल मिर्ज़ा लाइब्रेरी अलहमरा गेट मक्का से शायेअ़ शुदह हज्र अस्वद का तोग़रह जिसमें एक छतरी बर्दार शख़्स को दिखाया गया है। इस तोग़रह को जब उल्टा करें तो तस्वीर वाज़ेह नज़र आयेगी

हज्र अस्वद की तस्वीर को जब उल्टा करके देखें तो शबीह नज़र आयेगी।

हज्र अस्वद में कुदरती तौर आने वाली शबीह का कम्प्यूट्राइज़्ड तहक़ीक़ के बाद अ़क्स।

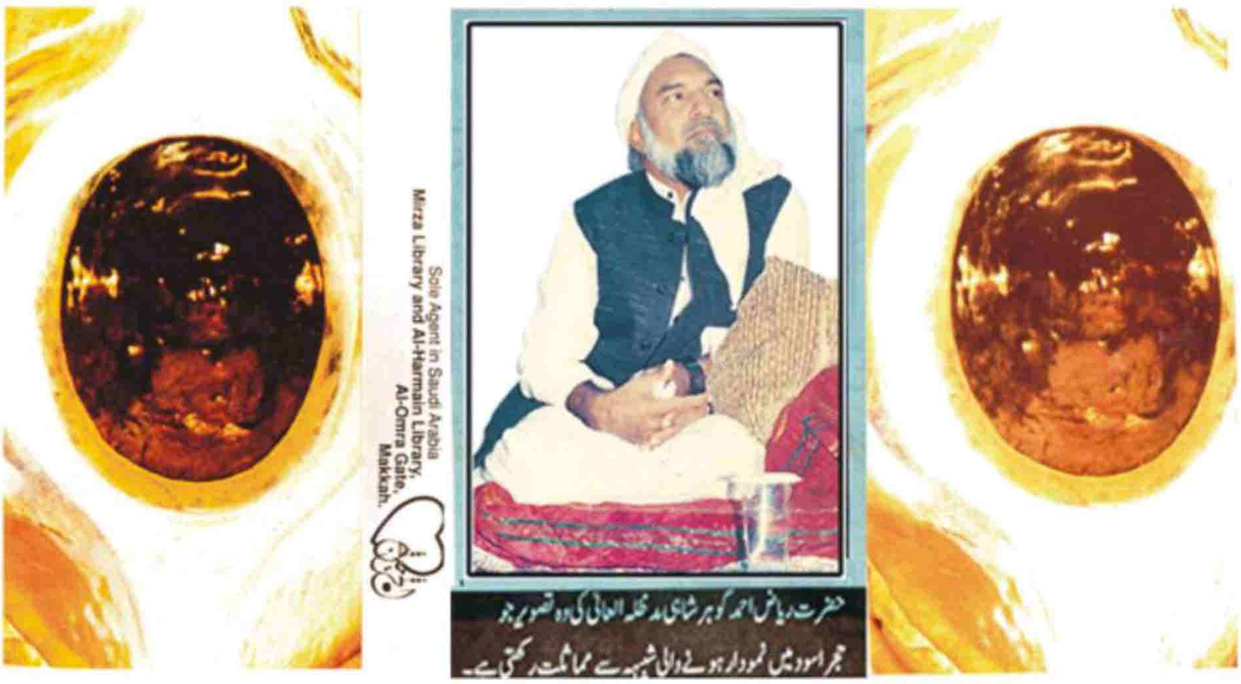

हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही मदज़िल्लहुलआ़ली की वह तस्वीर जो हज्र अस्वद में नमूदार होने वाली शबीह से मुमासिलत रखती है

मिर्ज़ा लाइब्रेरी मक्का का शायेअ़ शुदह

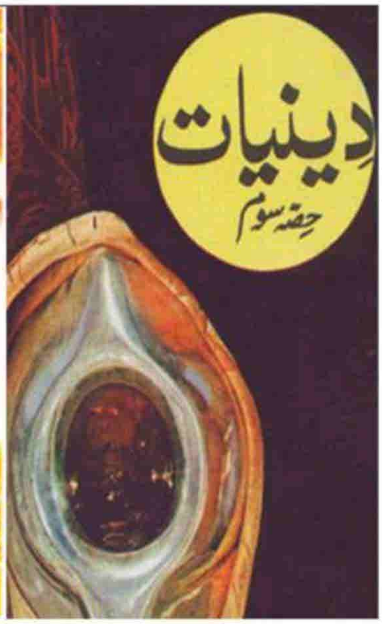

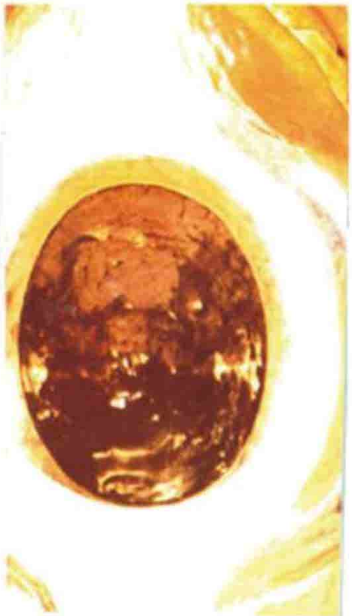

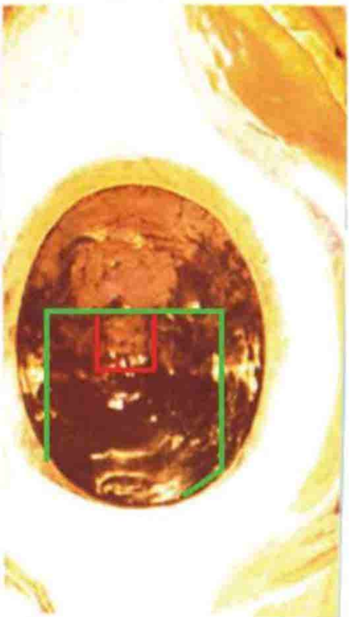

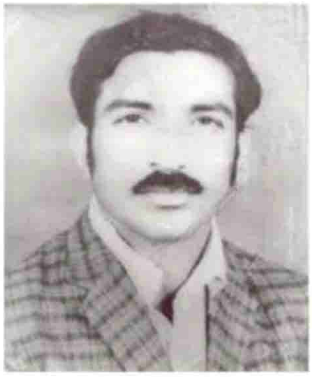

हज़रत गौहर शाही
(25 साल की उम्र में)

इस तस्वीर की
निशानदेही खुतूत
के ज़रिअह़ की गई है

25 साल की ही उ़म्र में ''जुस्साए गौहर शाही'' को बातिनी लशकर के सालार की हैसियत से नवाज़ा गया था। उस उ़म्र और उस वक़्त की निशानदेही, हज्र अस्वद और साथ दी हुई तस्वीर में मुलाहिज़ह हो।

यह तस्वीर हाल ही में नेबुला **Nebula** नामी सूरजनुमा सितारे पर ज़ाहिर हुई है, और नासा **NASA** ने ही रिलीज़ की है तफ़सीलात के लिये मुन्दर्जह ज़ेल वेबसाइट पर रूजूअ़ करें।

http://www.spacedaily.com/spacecast/news/hubble-00b1.html

SPACE SCOPES

Hubble Brings "Eskimo" Nebula Alive

<../news/hubble-00b2.html>

Greenbelt - January 11, 2000 -

The Hubble Space Telescope has captured a majestic view of a planetary nebula, the glowing remains of a dying, Sun-like star. This stellar relic, first spied by William Herschel in 1787, is nicknamed the "Eskimo" Nebula (NGC 2392) because, when viewed through ground-based telescopes, it resembles a face surrounded by a fur parka.

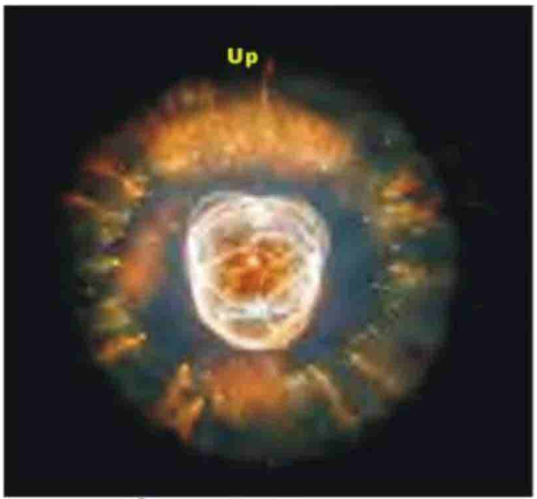

गौहर शाही

गौहर शाही

ऊपर वाली तस्वीर को **up** के मुताबिक़ घुमाकर देखें, जिसके चेहरे पर कुछ लिखा हुआ है!

गौहर शाही

बअ़ज़ लोग कहते हैं यह तसौवुर है। तसौवुर, साहिबे तसौवुर तक महदूद होता है। कैमरों में नहीं आता कुछ कहते हैं टेलीपैथी या मिस्मेरिज़्म है। इबादतगाहें और ज़मीनो आसमान टेलीपैथी या जादू की लपेट में नहीं आ सकते। अगर ऐसा ही है तो फिर हक़ किधर है? कुछ लोगों का कहना है कि अमरीका ने पैसे लेकर कम्प्यूटर के ज़रिए यह तस्वीरें लगा दी हैं, क्या गौहर शाही अमरीका से ज़्यादह माल दार है? अगर ऐसा मुम्किन होता तो वह अपने किसी पोप **Pope** की तस्वीर लगाता ताकि उसके मज़हब और मुल्क का उ़रूज और फ़ाइदह हो।

$16.95

मरशियन इंगमाज़ (मरीख़ के मुअम्मे)

दौरे क़दीम से ही मरीख़ ने हमारे तसौवुरात को झिंझोड़ रखा है। इस सदी के निस्फ़ दोयम तक यही समझा जाता था कि मरीख़ ज़मीन की मानिन्द है। अल्बत्तह 1960 के आख़िर में NASA ने मेरीनर प्रोब्ज़ Mariner Probes ने इस तसौवुरे बातिल को मुन्तशिर करके यह तअस्सुर पेश किया कि मरीख़ यअ़नी सुर्ख़ सैयारह हमारी ज़मीन के चांद की मानिन्द है। पानी निकलने के सबूत और दीगर दर्याफ़्त ने अल्बत्तह इस उम्मीद को तक़वियत पहुंचाई कि मरीख़ की सतह पर भी ज़िन्दगी के आसार की मौजूदगी मुम्किन है। *1975 ई० में 2 वाई किंग ख़ेलाई जहाज़ मरीख़ की तरफ़ भेजे गये जिनमें से हर एक, एक आरबिटर (सैयारे की गर्दिश करने वाला आलह) और एक लैंडर (मरीख़ पर उतरने वाला आलह) पर मुशतमिल था। उनका इब्तिदाई मिशन यह था कि साफ़्ट लैंड के ज़रिए दो तफ़्तीशी रोबोट को मरीख़ की सतह पर उतारा जाये कि वह हयातियाती आसार मरीख़ की सतह पर तलाश कर पायें। जुलाई 1976 के आख़िर में ख़लाई जहाज़ के एक आरबिटर ने एक दिलचस्प तस्वीर भेजी जो कि एक मील लंबी इंसानी चेहरे पर मुश्तमिल थी और यूँ महसूस होता था कि वह चेहरा शोमाली ख़ित्तह जिसे साइडोनिया (Cydonia) कहा जाता है, से ख़ला में घूर रहा है। मरीख़ पर पाये जाने वाले इंसानी चेहरे को नासा ने यह कह कर रद्द कर दिया कि यह रोशनी और साये का सुराब है। और मरीख़ पर इंसानी चेहरे वाली बात नासा ने फाइल में डाल कर भुला दी। *कई सालों के बाद दो इंजीनियर बनाम Gregory Molenaar और Vincent Di Pietro ने उसी चेहरे को दोबा रह दर्याफ़्त कर लिया, और उस तफ़्तीश का मर्कज़ो महवर बन गये जिससे अगले 10 सालों में एक आज़ाद और कसीरूल इन्तेज़ाम तफ़्तीश का सिलसिला चल निकला। इल्म तिब्बियात, इंजीनियरिंग, नक़शाबारी, रियाज़ियात, इल्मुल इंसान, इमारत साज़ी, फ़न्नी तारीख़, सिस्टम साइंस, इल्मे इलाही और दूसरे शोअ़बों के पेशह वरान ने तक़रीबन एक दर्जन मरीख़ी ख़दोख़ाल दर्याफ़्त की हैं और उनपर तहक़ीक़ की जो उन रवायती बातों को (कि मरीख़ पर ज़िन्दगी के आसार मिलने के इम्कानात नहीं) मुस्तरद और ख़तम करने के लिये एक ज़बर्दस्त चैलेन्ज और सबूत साबित हुई हैं। *मार्क जे० कार्लोटो की किताब मार्शियन इनिग्मास, जिसमें वाई किंग ख़लाई जहाज़ से ली गई मरीख़ की मुतनाज़ेअ़ तसावीर की स्टेट आफ़ आर्ट डिजिटल प्रोसीज़िंग पर मबनी रिपोर्ट है। डा० कार्लोटो इस किताब में वह तमाम तरीक़हकार की तफ़सीलात बताते हैं जिनसे उन्होंने वाईकिंग की तसावीर को और ज़्यादह वाज़ेह और साफ़ किया। उन्होंने मरीख़ पर मौजूद कई हैरत अंगेज़ चीज़ों की और चेहरे की सहजहती तसावीर और कम्प्यूटर फ़िल्म पेश की। वह इस बात पर बहस करते हैं कि शायद यह पहला वाज़ेह और ठोस सबूत है जिनका साइंसदानों को दहाइयों से इन्तेज़ार था कि, ज़मीन पर बसने वाले अफ़राद अकेले नहीं हैं। *मार्क जे. कार्लोटो बोस्टन (अमरीका) की एक साइंसी फ़र्म (TASC) में डिविज़िनल एनालीस्ट हैं। उन्होंने 1981 में Carneige-Mellon युनिवर्सिटी से Ph.D. की। 1981 से 1983 तक बोस्टन युनिवर्सिटी में असिस्टेन्ट प्रोफ़ेसर रहे हैं। डा० कार्लोटो को (Image Processing) का और उससे मुलिहक़ा शोअ़बों का दस साल से ज़्यादह तजुर्बह है। उन्होंने कम्प्यूटर विज़न, डिजिटल इमेज प्रासीसिंग और पैटर्न रिकग्नेशन के मौज़ूआत पर चालीस से ज़्यादह मसौदे लिखे और पबलिश करवाये हैं। वह इंस्टीट्यूट आफ इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रोनिक इंजीनियरिंग के सीनियर मेम्बर हैं।

The Martian Enigmas

Mars has stirred our imagination since ancient times; until the second half of this century Mars was thought to be a world much like earth. But in the late 1960s NASA's Mariner probes shattered the illusion, revealing the Red Planet to be more like our Moon. Evidence of water erosion and other discoveries, however, fueled the hope that vestiges of life might yet be found on Mars.

In 1975 two Viking spacecraft, each consisting of an orbiter and a lander, were sent to Mars. Their primary mission was to soft-land two robotic probes on the surface to search for signs of microbial life in the red Martian soil. Late in July 1976 one of the orbiters sent back a curious photograph of what appeared to be a mile-long humanoid face staring straight out into space from a northern region known as Cydonia. The "Face on Mars" was promptly dismissed by NASA as a "trick of light and shadow" and the photograph filed away.

Several years later the Face was rediscovered by two engineers, Vincent DiPietro and Gregory Molenaar, and became the focus of a decade-long series of independent multi-disciplinary investigations. Professionals in physics, engineering, cartography, mathematics and systems science, as well as anthropology, architecture, art history, theology, and other fields, have now discovered and studied nearly a dozen features on the Martian surface that may pose a serious challenge to conventional beliefs about the improbability of extraterrestrial life.

The Martian Enigmas is a report by Mark J. Carlotto on his state-of-the-art digital image processing of the controversial Viking photos. Dr. Carlotto illustrates the processes used to digitally restore and clarify the Viking photographs, and presents striking three-dimensional renditions of the Face and other intriguing objects on Mars. He argues that these objects may be precisely what many scientists have sought for decades: the first hard evidence that we are not alone.

Mark J. Carlotto is a Division Staff Analyst at The Analytic Sciences Corporation (TASC), a high-tech firm in the Boston Area. He earned a Ph.D. in Electrical Engineering from Carnegie-Mellon University in 1981. From 1981 through 1983 he was an Assistant Adjunct Professor at Boston University. Dr. Carlotto has over ten years of experience in image processing and related fields, and has published over forty papers in computer vision, digital image processing, pattern recognition and other areas. He is a senior member of the Institute of Electrical and Electronic Engineers.

ISBN 1-55643-129-5

A Closer Look

MARK J. CARLOTTO

North Atlantic Books, Berkeley, California
Cover and Book Design by Daniel Drasin

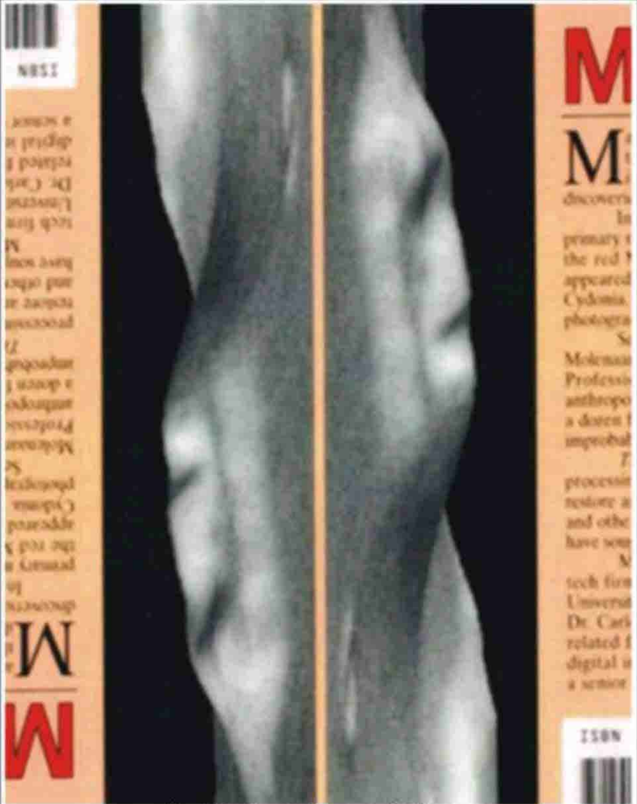

इस तस्वीर में दो चेहरे नुमायाँ हैं जब तस्वीर को 180 के दर्जे पे घुमाया जाये

ईसा और हज़रत गौहर शाही की मुलाक़ात 1997 को न्यु मेक्सिको में हुई।

1-हफ़्तरोज़ अख़बार पयाम मानचेस्टर में यह ख़बर तसावीर समेत 15 अगस्त 1997 को शायेअ़ हुई थी।

2- पंद्रह रोज़ह अख़बार सदाए सरफ़रोश ने भी यह ख़बर सितंबर 1997 को शायेअ़ की

3- 28 सितंबर 1997 को BBC ने यह ख़बर GMR रेडियो (UK) से नशर की।

ह. गौहर शाही

www.goharshahi.com

Gohar Shahi

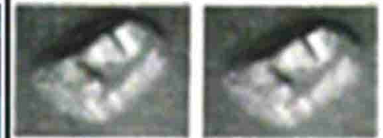

मरीख़ की यह तसावीर नासा (NASA) ने मुख़तलिफ़ अन्दाज़ और मुख़तलिफ़ अतराफ़ से उतारी हैं देखिये वेबसाइट

NASA has taken these photographs from different angles and different views. Visit the following website.
http://www.psrw.com/~markc/marshome.html

बोस्टन युनिवर्सिटी के प्रोफेसर मार्क जे० ने इन तसावीर की तहक़ीक़ और तस्दीक़ करके किताबी शकल में शायेअ़ कराया है

Professor Mark J. of Boston University having researched and verified these photographs published them in his book.

हज़रत ईसा Jesus

सीधी तस्वीर में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उलटी तस्वीर में हज़रत गौहर शाही

When picture is straight the image of Jesus is visible and when turned upside down the image of Gohar Shahi is visible.

www.tlig.org/jesus.html www.jays-homepage.co.u

Scince and Technology

In 1998, The Mars Global Surveyour took pictures of Mars. On the Surface of Mars there was a rock found which resembled the face of a human being. It was one mile long and 2000 feet high. It was made by beings who were similar to us and had lived there in the past. An astrologist Dr. Frania says "This is the proof of the one we have been waiting for, for a long time"

Published in the Sunday Magazine,The Jang,Pakstan on 18-3-01

People should research into this matter

साइंस और टेक्नोलोजी

जंग सण्डे मैग्ज़ीन 18 मार्च 2001 ख़लाई साइंस के माहिर डाक्टर बंजामन फ्रानिया के मुताबिक़ अमरीकी ख़लाई तहक़ीक़ के इदारह नासा ने 1976 में वाई किंग आर्टर नामी जहाज़ और 1998 में मार्स ग्लोबल सर्वेयर नामी जहाज़ ने मरीख़ की एक तस्वीर हासिल की है जिससे साबित होता है कि वहाँ दो लाख साल क़ब्ल पहले इंसान आबाद थे। इस तस्वीर में मरीख़ की खुर्दरी सतह पर पत्थर का बना हुआ एक इंसानी चेहरा है जो माहिरीन के मुताबिक़ किसी इंसान ही की तख़लीक़ हो सकता है। नासा की सरकारी रिपोर्ट में बताया गया है कि पत्थर का यह इंसानी चेहरा हमारी तरह के इंसानों ने तराशा है जो किसी ज़माने में मरीख़ पर मुक़ीम थे मगर वहाँ के माहौल ने उन्हें मजबूर कर दिया कि वह ज़मीन या किसी और तरफ़ हिजरत कर जायें। रिपोर्ट में मज़ीद कहा गया है कि इस इंकेशाफ़ को आ़म आदमी बमुशकिल ही क़बूल कर सकेगा। डा० फ्रानिया के मुताबिक़ "यही वह सबूत है जिसका हमें मुद्दत से इंतेज़ार था" एक मील लंबे और दो हज़ार फुट ऊंचे पत्थर के चेहरे जिसे तक़रीबन दो लाख साल क़ब्ल इंसानी हाथों ने मरीख़ की सतह पर तराशा था, इस बात की गवाही देदी है कि ज़मीन पर इंसान की मौजूदगी से क़ब्ल मरीख़ पर इंतेहाई तरक़्क़ी याफ़्तह तहज़ीब मौजूद थी। लोगों को चाहिए कि इस मुआ़मिले की तहक़ीक़ करें।

तस्वीर 73A35 की पहाड़ी। एक अ़जीब चट्टान नुमा "मीसा" जो 25 -30 मीटर तक एक रोटी नुमा गढ़े (जिसका वजूद सतह की बर्फ पिघलने और ज़मीन फटने से निकलने वाला ख़ुरूज से हुआ) से बुलंद होती है होगलैंड कहते हैं कि पहाड़ी और चेहरा न सिर्फ़ ऊंचाई में बराबर हैं बल्कि ज़ाविये और जगह के एतबार से भी उनमें तनासुब पाया जाता है। इस पहाड़ी के ख़दोख़ाल और ढांचे से यह सबूत मिलता है कि पहाड़ी और पहाड़ी की बुनियाद में मौजूद गढ़े में वाज़ेह फ़र्क है। और यह कि यह पहाड़ी "क्रैटरिंग इम्पैक्ट" के बहुत बाद बनी। इस दिलचस्प मफ़रूज़े के हामी कहते हैं कि अगर यह पहाड़ी पहले बनी होती तो निकलने वाला मवाद टीले के मशरिक़ में जमा होता और उस मवाद की हुदूद पर छींटों की तरह के निशान होते और पहाड़ी की दूसरी तरफ़ धमाका नुमा सायह बनता लेकिन गढ़े से मुल्हिक़ह ज़मीन एक मिट्टी के ढेर की सूरत में होने की बजाये यह महसूस होता है कि नीचे से खोखली और ख़ाली हो। जो कि क़ुदर्ती तौर पर बनने वाले टीले से बिलकुल मुख़्तलिफ़ है इन वजूहात ने और इस बात ने कि पहाड़ी और गढ़े के दर्मियान मौजूद ज़मीन का ऐसे नज़र आना जैसे उसपर हल चला हो या उसे खोदा गया हो, इस नज़रिये को हवा दी कि पहाड़ी की तअ़मीर के लिये मिट्टी इकट्ठी की गई थी।

The "Cliff" from 35A73. A peculiar, cliff-like mesa that rises 25-30 meters above a pancake- like "crater pedestal" (the surrounding ejecta blanket formed when the Martian permafrost was melted and ejected by the orignal cratering impact). Hoagland has demonstrated that the Cliff participates with the Face in solstice alignments and in several other angular and positional relationships. The Cliff's overall shape, surface texture and internal appears to differ markedly from that of the surrounding crater ejecta, which suggest that its formation post-dates the intense cratering impact. Supporters of the intelligence hypothesis theorize that if the object had pre-dated the impact ejecta material would have piled up on the east side of the Cliff, displaying peripheral splash patterns and formed a "blast shadow" on the opposite side.However, the adjacent terrain on the crater side, rather than being piled-up appears instead to have been hollowed-out- the opposite result to the expected from natural forces. This and the striated or "plowed- field" effect between the Cliff and the crater, have fueled speculations about the quarring of material for the Cliffs construction.

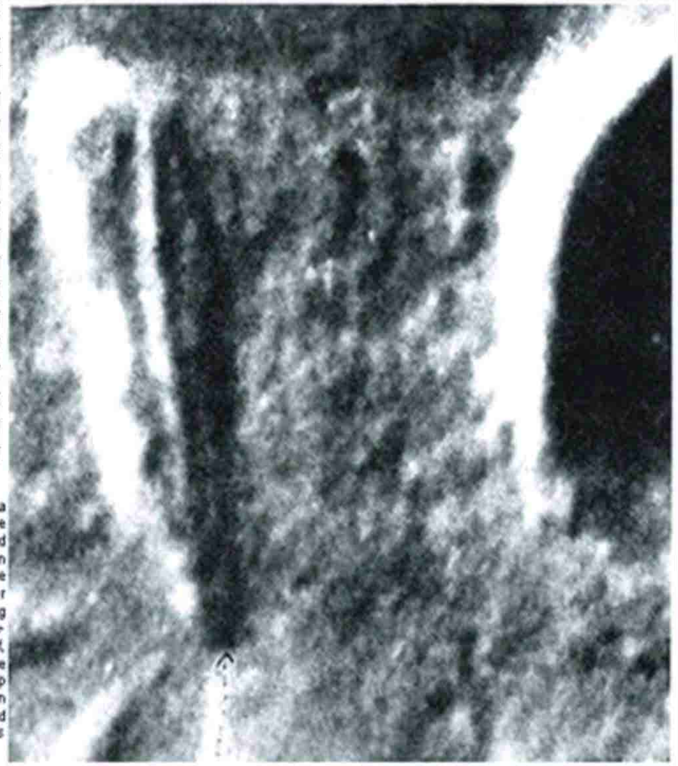

There appears to be a continious groove or path orignating in the hollowed-out area that rises ramp-like to the northeast end of the Cliff, turns and proceeds southward, then makes a final hairpin turn and terminates at the northwest end. This groove defines the elongated "nose" of what appears to be another set of facial characteristics. These are made more obvious here by artificial foreshortening that stimulates a view from the south at angle of about 70º from nadir.

27

हज़रत गौहर शाही और ईसा, दी गयी तस्वीर में आमने सामने

दिया गया मैटर अख़बार पाकिस्तान पोस्ट न्यूयार्क बतारीख़ 14.06.2001 से लिया गया तराशह है। यह मैटर 29.06.2001 को नवा-ए-वक़्त इंग्लैंड में भी छपा था।

The Moon

Nebula Star

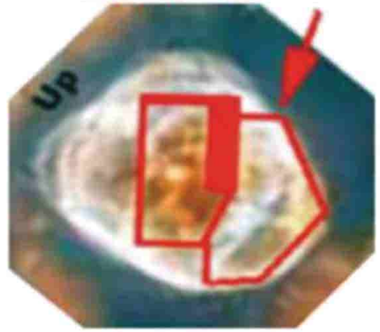

मरीख़ के अ़लावह भी नेबुला स्टार और चांद और दीगर मुक़ामात पर गौहर शाही की तस्वीरें आ चुकी हैं। देखिये :
www.goharshahi.com

अकसर लोग पूछते हैं क्या यह हक़ीक़त है? अगर हक़ीक़त नहीं है फिर हम बहुत बड़े झूटे हैं। (झूटों पर लअ़नत)

मरीख़ और दीगर सैयारों पर शबीह का राज़

हज़रत ईसा की हस्ती किसी तआरूफ़ की मुहताज नहीं क्योंकि वह अल्लाह के बहुत क़रीब हैं। उनकी तसावीर कई सैयारों और कई मक़ामात पर ज़ाहिर हो रही हैं। मौजूदह ज़माने के बहुत से लोग उनसे मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल कर चुके हैं। जबकि दूसरी तरफ़ गौहर शाही जो रूए ज़मीन पर मौजूद हैं उनका कोई एक मस्कन नहीं, पूरी दुनिया में घूमते रहते हैं। मरीख़ के अ़लावह दूसरे सैयारों में भी उनकी तस्वीरें देखी जा सकती हैं। और इंटरनेट (www.goharshahi.com) पर उनकी किताबें पढ़ी जा सकती हैं। उनका तअ़ल्लुक़ पाकिस्तान से है। वह सूफ़ी सिलसिले से तअ़ल्लुक़ रखते हैं। ह० गौहर शाही फ़रमाते हैं कि मैं नबी नहीं हूं लेकिन मुझे मुहम्मद सल० और ईसा और दूसरे नबियों की हिमायत हासिल है। वह कहते हैं "अगर किसी का मज़हब है लेकिन उसके दिल में अल्लाह की मुहब्बत नहीं है, इससे वह बेहतर हैं जिनका कोई मज़हब नहीं लेकिन अल्लाह की मुहब्बत है"। मुस्लिम उ़लमा उनको कहते हैं कि तुम कहो कि मुसल्मान सबसे अच्छे हैं। लेकिन वह कहते हैं "सबसे अच्छा वह है जिसके दिल में अल्लाह की मुहब्बत है ख़्वाह वह किसी भी मज़हब से हो"। मुस्लिम उ़लमा कहते हैं कलिमाए मुहम्मदी पढ़े बग़ैर कोई जन्नत में नहीं जा सकता। वह कहते हैं इस जिस्म को इधर ही रहना है, रूहों को जन्नत में जाना है। चमकती हुई रूहें जन्नत में जाकर ही कलिमा पढ़ लेंगी। वह कहते हैं कलिमे का मतलब किसी भी नबी के कलिमे से मुराद है। मुसलमानों का एक फ़िर्क़ा कहता है कि यह तसौवुफ़ और दिल की तअ़लीम सब बातिल है। लेकिन वह कहते हैं कि दिल की पाकीज़गी के बग़ैर सबकुछ बातिल, राएगाँ और छिलके की मानिन्द है। मुस्लिम अ़क़ीदे में एक दफ़ा जन्म होता है। लेकिन हज़रत गौहर शाही ने किताब दीने इलाही में लिखा है कि दुनियावी रूहों का जन्म कई बार होता है जबकि सिर्फ़ आसमानी रूह का जन्म एक बार होता है। उनकी इन्हीं तअ़लीमात की वजह से बहुत से मुसल्मान उनके दुशमन हो गये हैं इन ही बिना पर हुकूमते पाकिस्तान ने किताब दीने इलाही पर पाबंदी लगा दी है। उन्हें कई दफ़ा बम के हमलों से उड़ाने की कोशिश की गई। मुस्लिम की कई तन्ज़ीमों ने लाखों रूपये उनके सिर की क़ीमत रखी हुई है। जबकि हुकूमत पाकिस्तान ने उन्हें तौहीने मज़हब के केस में मुलव्विस किया हुआ है। वह किसी मज़हब का प्रचार नहीं करते बल्कि अल्लाह की मुहब्बत और इश्क़ को दिलों में उतारने का तरीक़ा सिखाते हैं। वह कहते हैं कि जब तुम्हारा तअ़ल्लुक़ अल्लाह से जुड़ जायेगा तो वह ख़ुद ही तुम्हें हिदायत का रास्ता दिखायेगा। कई लोगों को दौराने मश्क़ दिल पर अल्लाह लिखा नज़र आता है। वह कहते हैं जिस ज़बान का भी लफ़्ज़ अल्लाह की तरफ़ इशारा करता है वह क़ाबिले तअ़ज़ीम और क़ाबिले फ़ैज़ है। हर मज़हब के लोग उन्हें प्यार करते हैं बल्कि अमरीका, बर्तानिया, अफ़्रीका, यूरोप, मिडिल ईस्ट और एशिया में कई चर्चों, गुरूद्वारों, मंदिरों और मस्जिदों में वह ख़िताब कर चुके हैं। बहुत से बीमार लोग जिन्हें डाक्टरों ने लाइलाज क़रार देदिया था वह भी उनके दम के पानी से सिहतयाब हो चुके हैं। और वह इस अल्लाह की मुहब्बत की तअ़लीम को आ़म करने और बीमारियों के रूहानी इलाज के लिये लंदन में आलफेथ स्प्रिच्युअल आर्गनाइज़ेशन के नाम से एक बहुत बड़ा इदारह फ़्री खोलने का प्लान कर चुके हैं जो इसी साल आ़लमगीर काम करना शुरू कर देगा।

आपसे गुज़ारिश है कि किसी भी मज़हबी, मुलकी और नस्लीय तअ़स्सुब की वजह से रब की निशानियों को झुटलाने की जुर्रत न करें।

शायद यह बंदा रब ने तुम्हारी इस्लाह और इम्दाद के लिये भेजा हो। उसे ढूंडें और ज़ाती तौर पर इसकी रिसर्च करें। अगर कोई गिरोह या इदारह इनके मुतअ़ल्लिक़ मअ़लूमात चाहता हो तो हमसे राब्ता करें, हम मुन्सिफ़ानह पूरी पूरी मअ़लूमात मुफ़्त फ़राहम करेंगे। अगर मुम्किन हुआ तो उनसे मुलाक़ात का भी एहतेमाम करा देंगे। हमारा इदारह अ़र्सह ७ साल से बर्तानिया में इन तअ़लीमात को दुनिया के चप्पे-चप्पे में फैलाने की कोशिश कर रहे है। जबकि इदारह आलफेथ स्प्रिच्युअल आर्गनाइज़ेशन आयरलैंड, सूफ़ी मोमेन्ट अमरीका और अंजुमन सरफ़रोशाने इस्लाम पाकिस्तन रजि० भी हमसे मुन्सलिक हो चुके हैं।

रैग्ज़ इंटरनेश्नल

नासा ने बड़ी मुश्किल से, और कई सियासतदानों के इसरार पर बड़े अ़र्से के बाद मरीख़ पर तस्वीर का इक़रार किया है जबकि दूसरे सैयारों की तस्वीरों को छुपाये हुए है। अब इसी तरह मुशाबिहत की तस्दीक़ के लिये हीलोहुज्जत कर रहा है।

Click here: Disturbing Controversies like the Cydonia region of Mars.
Www.creation-science-prophecy.com/links.html

E-mail:
younus38@hotmail.com
amjadgohar75@yahoo.com

Contacts:
UAE: +971505922671, UK: +447900002676
India: 9811452387-9323692855-9004715519

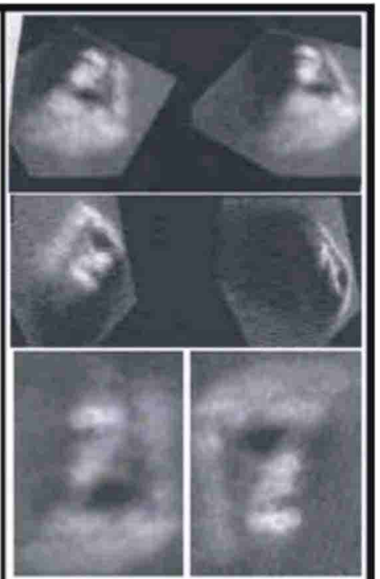

यह तसावीर मार्क जे० कार्लोटो की किताब मार्शियन इनिग्माज़ से ली गईं हैं।

यह तसावीर रोशनी और तारीकी में तनासुब के पांच मुख़्तलिफ़ दर्जे दिखाती हैं। यहाँ मौजूद सब से ज़्यादह तनासुब रखने वाली तस्वीर की मुमासिलत नासा की उस तस्वीर 72A35 से है जो वाई किंग ने भेजी थी।

These pictures were taken from the book "Martian Enigmas" by Mark J. Carlotto

These prints illustrate five grades of contrast. The highest contrast represented here approximates that of NASA's print of Viking frame 35A72 in which the face orignally appeared.

चांद और हज्र अस्वद में सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही मद0 की शबीह के इंकेशाफ़ात

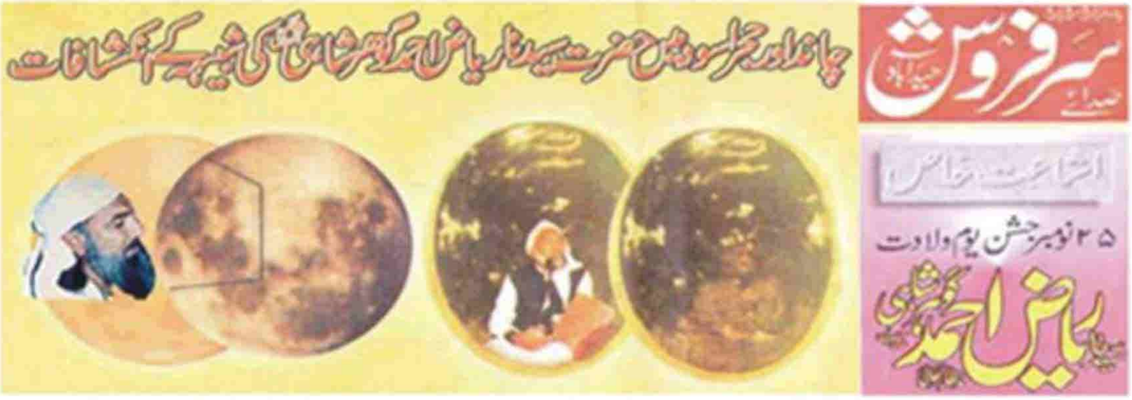

ग्वर्नमेन्ट आफ़ पाकिस्तान से
अज़ीम रूहानी शख़सियत सैयदना रियाज़ अहमद गौहर शाही
मदज़िल्लहुलआ़ली बानी व सरपरस्त आ़लमी रूहानी तहरीक
अंजुमन सरफ़रोशाने इस्लाम रजि0 की

अपील

मैं हुकूमते पाकिस्तान और उसके अ़मलदारान से अपील करता हूँ कि चाँद और हज्र अस्वद पर तसावीरो शबीह के मुतअ़ल्लिक़ मुकम्मल तहक़ीक़ात करायें अगर यह दुरूस्त साबित हों तो मेरी पुश्त पनाही करें ताकि पूरी दुनिया में अल्लाह की मुहब्बत का प्रचार और तमाम मज़ाहिब के दिलों को एक करने में आसानी हो और अ़वाम भी एक सिम्त का तऐ़युन कर सकें।

अगर मुन्दर्जह बाला वाक़िआ़त ग़लत साबित हों तो हुकूमत किसी भी सज़ा या बन्दिश की मिजाज़ है।

बक़लम खुद

रियाज़ अहमद गौहर शाही

उमरकोट के शिव मंदिर के मुक़द्दस पत्थर पर गौहर शाही की तस्वीर

लातअ़दाद लोग अ़क़ीदत से इस तस्वीर को देखने आ रहे हैं। रोज़नामह ''महरान'' हैद्राबाद

عمرکوٹ کے شومندر کے مقدس پتھر پر گوہر شاہی کی تصویر

لاتعداد لوگ عقیدت سے اس تصویر کو دیکھنے آرہے ہیں روزنامہ مہران حیدر آباد

हैद्राबाद (नुमाइंदाए ख़ुसूसी), हैद्राबाद के मअ़रूफ़ सिंधी अख़बार रोज़नामह महरान ने अपनी 6 June 1998 की इशाअ़त में एक ख़बर शायेअ़ की जिसने इंकेशाफ़ किया कि उमरकोट के क़रीब ''शिव मंदिर'' के पत्थर में हज़रत गौहर शाही की तस्वीर नज़र आ रही है। तस्वीर देखने के लिये आने वालों का जम्मेग़फ़ीर लगा हुआ है। हिंदू अ़क़ीदे के लोग बहुत अ़क़ीदत और मुहब्बत से इस तस्वीर के दर्शन को जा रहे हैं। इस हवाले से यहाँ एक पम्फलेट भी तक़सीम किया गया है। जिसके बाद ''शिव मंदिर'' लोगों की तवज्जह का मर्कज़ बन गया है, ख़ुसूसन हिंदू बिरादरी में हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही की तस्वीर नज़र आने पर बहुत ख़ुशी का इज़हार हो रहा है।

लंदन से शायेअ़ होने वाले हफ़्त रोज़ह ''देश प्रदेश'' में हिंदुओं की जानिब से हज़रत गौहर शाही का तआ़रूफ़

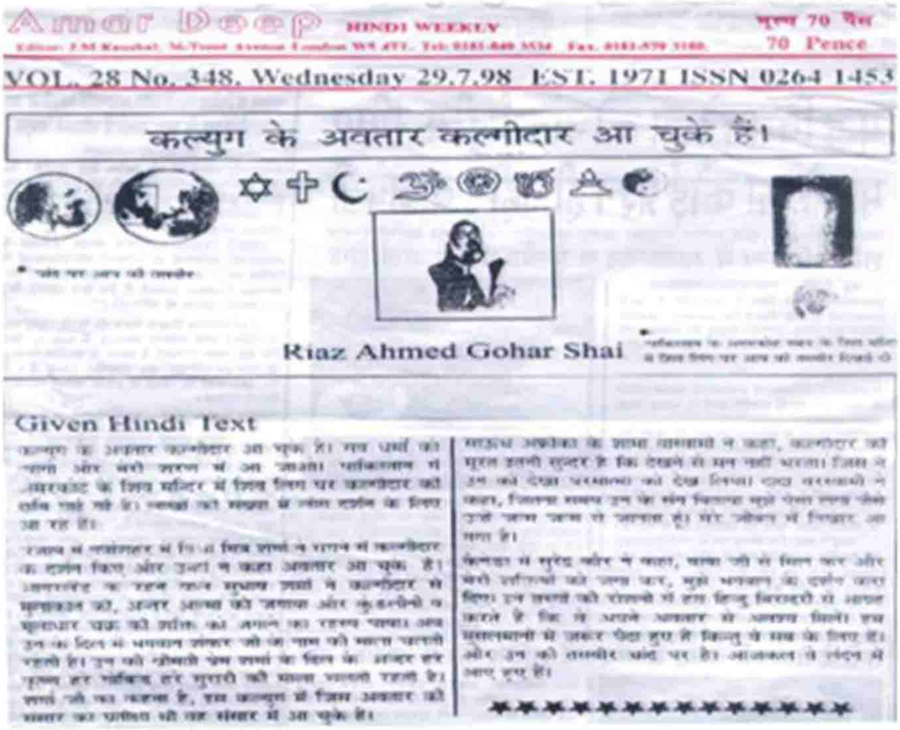
Amar Deep HINDI WEEKLY

मूल्य 70 पैस 70 Pence

VOL. 28 No. 348, Wednesday 29.7.98 EST. 1971 ISSN 0264 1453

कल्युग के अवतार कल्गीदार आ चुके हैं।

Riaz Ahmed Gohar Shai

Given Hindi Text

کئی ہندوؤں کو خواب میں دم کرنے آنکھوں کی بینائی گونگوں کو گویائی حاصل ہوگئی

بھارت میں ہزاروں افراد گوہر شاہی کے روحانی فیض سے صحتیاب ہوگئے

ZEE T.V اور جالندھر T.V جلد گوہر شاہی کا انٹرویو نشر کریں گے انگلینڈ کے گلزار قادری

कई हिंदुओं को ख़्वाब में दम करने आँखों की बीनाई गूंगों को गोयाई हासिल हो गई
भारत में हज़ारों अफ़राद गौहर शाही के रूहानी फ़ैज़ से सेहतयाब हो गये

ZEE T.V और जालंधर T.V जल्द गौहर शाही का
इंटरव्यू नशर करेंगे इंग्लैंड के गुलज़ार क़ादरी

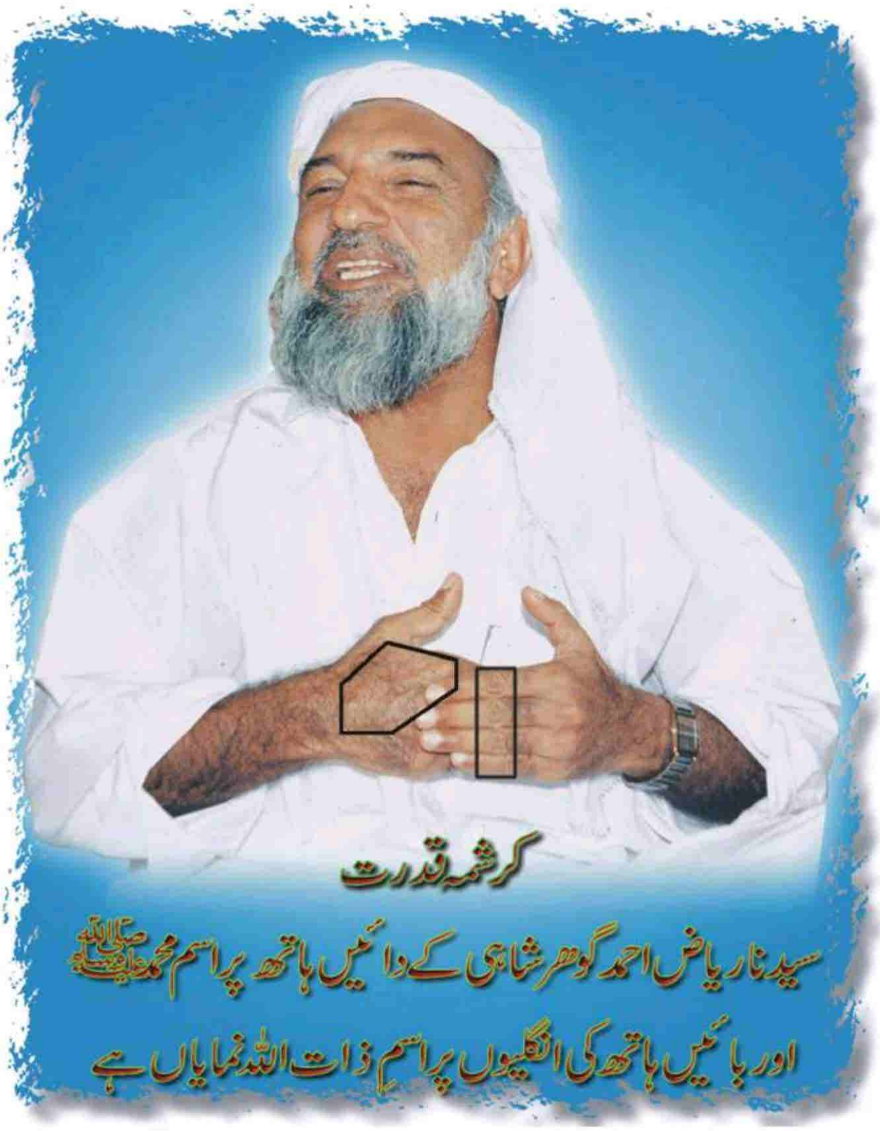

.....करिश्माए कुदरत.....

सैयदना हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही

के दायें हाथ पर इस्म ''मुहम्मद'' محمد ﷺ और बायें हाथ की उंगलियों पर इस्मज़ात ''अल्लाह'' الله नुमायाँ है।

.....नोट.....

कुछ लोगों को एअ़तेराज़ है कि उलटे हाथ की उंगलियों पर इस्म अल्लाह क्यों है? अगर यह उंगलियाँ हमने बनाई हों या किसी भी तरीक़े से हमने लिखवाया हो तो हम मुजरिम हैं, यह तो अल्लाह बेहतर जानता है कि यह इत्तेफ़ाक़ है या कोई करिश्माए कुदरत!

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की इस दुनिया में दोबारह आमद

ईसा अलैहिस्सलाम की हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही से अमरीका में मुलाक़ात 28 जुलाई 1997 लंदन में दिये गये एक इंटरव्यू में हज़रत गौहर शाही ने मुलाक़ात के जुमलह तअस्सुरात का इज़हार फ़रमाया

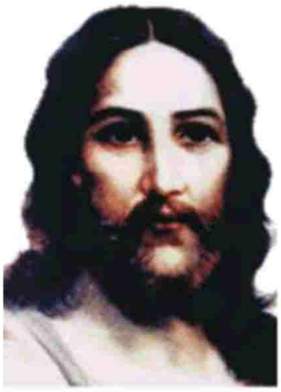

29 मई 1997 मैं एल माउंटे लाज ताऊस न्यू मेक्सिको अमरीका में ठहरा हुआ था। रात के दूसरे पहर मुझे अपने कमरे में किसी की मौजूदगी का एहसास हुआ। कमरे में नाकाफ़ी रोशनी थी। मुझे लगा कि मेरा कोई अ़क़ीदतमन्द है जो बिना इजाज़त कमरे में आ गया है। मैंने उस शख़्स से पूछा, क्यों आये हो? उस शख़्स ने जवाबन कहा कि मैं आप से मिलने आया हूँ। मैंने उसी असना में कमरे की लाइट रोशन कर दी। मैंने देखा कि एक हसीनो जमील नौजवान मेरे सामने खड़ा है, जिसे मैं नहीं जानता था। उस शख़्स को देखकर मेरे लताइफ़ ख़ुशी से झूम उठे और ऐसी कैफ़ियत पैदा हो गई जैसी आ़लमेबाला की महाफ़िल और नबियों की मौजूदगी में होती है। मुझे एहसास हुआ कि उस शख़्स को मुतअ़द्दिद ज़बानों पर अ़बूर हासिल है। उस नवजवान ने मुझे बताया कि वह ईसा इब्न मरियम है। और फ़िलहाल अमरीका में है। मैंने उससे पूछा, तुम कहाँ रहते हो? उस शख़्स ने जवाब दिया, न ही पहले मेरा कोई ठिकाना था और न ही अब है!

जब हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही से मुलाक़ात के दौरान होने वाली मज़ीद गुफ़्तगू की गुज़ारिश की गई तो आपने फ़रमाया कि ईसा इब्न मरियम और मेरे दर्मियान जो गुफ़्तगू हुई है वह फ़िलहाल एक राज़ है, लेकिन मुस्तक़बिल क़रीब में किसी मुनासिब वक़्त पर मैं उस राज़ को फ़ाश करूंगा। हज़रत गौहर शाही ने मज़ीद फ़रमाया कि मैं चन्द रोज़ बाद टूसान एरीज़ोना (अमरीकी रियासत) जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ। यहाँ किसी ने मुझे एक तस्वीर दिखाई और कहा कि यह ईसा इब्न मरियम हैं। मैंने फ़ौरी तौर पर तस्वीर वाले नवजवान को पहचान लिया। क्यों कि यह तस्वीर उसी नवजवान की थी जो मेरे कमरे में ताऊस में आया था। मैंने तस्वीर के मालिक से उस तस्वीर की तफ़सीलात दर्याफ़्त की। उसने मुझे बताया कि कुछ मुक़द्दस मुक़ामात की ज़ियारत के लिये गये जहाँ उन्होंने तसावीर उतारीं। जब कैमरे की फिल्म develop की गई तो हैरत अंगेज़ तौर पर इस नवजवान की तस्वीर आ गई हालाँकि किसी ने भी इस नवजवान को वहाँ नहीं देखा और न ही इसकी तस्वीर खींची। बहरहाल मैंने उस नवजवान यअ़नी ईसा इब्न मरियम की तस्वीर ले ली और चांद में ज़ाहिर होने वाली कई तसावीर से उसको मिलाकर देखा। चांद में ज़ाहिर होने वाली तसावीर में से एक तस्वीर उससे मुशाबिहत रखती थी। मुझे यक़ीन हो गया और इस तरह मैंने तस्दीक कर दी कि यह ईसा इब्न मरियम की हक़ीक़ी तस्वीर है।

हाल ही में अमरीका में एक रिसाले ने बाइबल के उ़लमा के हवालाजात से ईसा इब्न मरियम की दोबारह वापसी और क़ुर्ब क़यामत में होने वाले वाक़िआ़त से मुतअ़ल्लुक़ मज़मून शायेअ़ किया। इस मज़मून में मुतअ़द्दिद बातों का ज़िक्र था। ख़ुसूसी तौर पर बाइबल से मुतअ़ल्लुक़ा राज़ और पेशनगोइयाँ थीं जिसको वेटीकिन (रोम इटली) ने जारी किया था। बाइबल के उ़लमा की यह पेशन गोइयाँ हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही की ईसा इब्न मरियम की दोबारह आमद के एअ़लान से मिलती जुलती हैं।

दोस्तों ! अल्लाह ने इसी वक़्त के लिये फ़र्माया था :

> ''हम तुम्हें अ़न्क़रीब दिखायेंगे अपनी निशानियाँ
> ज़मीनो आसमान पर, हत्ता कि तुम्हारे नुफ़ूस में भी।''

फ़रमाने गौहर शाही

तमाम इंसानों की अरज़ी अरवाह इस दुनिया में कई बार दूसरे जिसमों में जन्म लेती हैं। पाकीज़ह लोगों की अरवाह पकीज़ह जिसमों में, जबकि हुज़ूर पाक सल. की अरज़ी अरवाह को मेहदी अलैहिस्सलाम के लिये रोका हुआ था, जिस तरह आप सल० के जिस्म के किसी भी अ़लाहिदह हिस्से, यअ़नी हाथ या पाओं को भी आमिना का लाल कह सकते हैं, इसी तरह हुज़ूर की समावी रूह के किसी अ़लाहिदह हिस्से को भी अ़ब्दुल्लाह का फ़रज़िन्द और आमिना का लाल कहा जा सकता है। अहले बैत की अरवाह भी अहले बैत में ही शामिल हैं।

एक अहम नुक़ता

महदी مھدی का मतलब........हिदायत वाला

मेहदी مہدی का मतलब........चांद वाला

(जैसे : मेहनाज़ और मेहताब)

मु० यूनुस अलगोहर...लंदन, इंग्लैण्ड। (younus38@hotmail.com)

गौहर शाही ने 1980 से दर्सोतदरीस का काम शुरू किया। आपका पैग़ाम "अल्लाह की मुहब्बत" को बहुत पज़ेराई हासिल हुई। हर मज़हब के अफ़राद आपसे अक़ीदत और मुहब्बत करने लगे और अपनी-अपनी इबादतगाहों में गौहर शाही को ख़िताबात की दअ़वत देकर ज़िक्र क़ल्ब हासिल करने लगे। यह एक बहुत बड़ी करामत है जिसकी तारीख़ में नज़ीर नहीं मिलती कि

गौहर शाही

हर मज़हब की इबादतगाह के स्टेज, मिंबर पर पहुंच जाते हैं, यूँ तो बेशुमार करामतें और प्रोग्राम हैं लेकिन चन्द चीदह चीदह आपकी तसल्ली के लिये पेश किये जा रहे हैं

मुलाहिज़ा हों....

न्यूयार्क में क्रिश्चन कम्युनिटी के दावत पर मोरख़ह 2 अक्तूबर 1999 को हज़रत गौहर शाही को होटल (न्युयार्कर) में रूहानी लेक्चर के लिये मदऊ़ किया गया

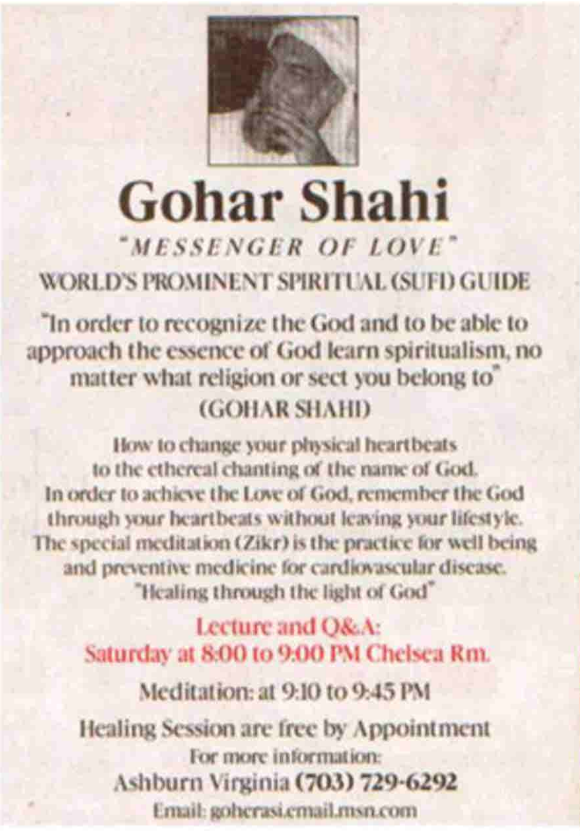

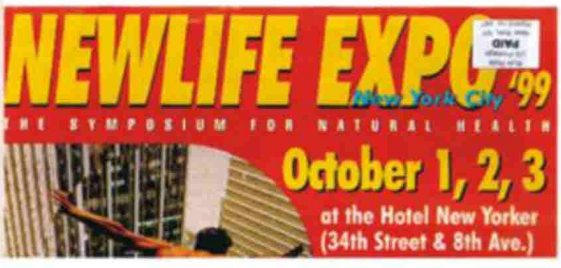

अमरीका की रियासत एरीज़ोना के शहर टूसान के मर्कज़ी चर्च
(GRACE ST. PAUL'S EPISCOPAL CHURCH)
में हज़रत गौहर शाही ईसाइयों से ख़िताब फ़रमा रहे हैं

ज़ेरे नज़र तस्वीर, 11 अप्रेल 1996 के अज़ीमुश्शान रूहानी इज्तिमा मोचीगेट लाहोर की है जिसमें बकस्रत हनफ़ी और शाफ़ई मुस्लिम अफ़राद मौजूद हैं।

अमरीका में हज़रत गौहर शाही यूनीट्रियन यूनीवर्सलिस्ट
फेलोशिप प्रिस्काट, एरीज़ोना, यू० एस० ए०
July 1997, Unitarian Universal Fellowship, Prescott, Arizona, USA

साउथ अफ़्रीका के शहर डर्बन में साईं बाबा (SAI BABA) के अ़क़ीदतमन्दों और आतिश परस्त हिंदुओं के मंदिर में हज़रत गौहर शाही का ख़िताब।

नूर-ए-ईमान, इमाम बारगाह नाज़िमाबाद क्राची में अहले तशीअ़ हज़रात से ह. गौहर शाही का ख़िताब।

हज़रत गौहर शाही सिखों के झुर्मुट में

ਬਿਨਾਂ ਲੇਜ਼ਰ
ਬਿਨਾਂ ਐਨਕ
ਬਿਨਾਂ ਅਪਰੇਸ਼ਨ

NO LASER
NO OPERATION
NO SPECTACLES

Astonishing results in Myopia and Other Eye Ailments by highly qualified, well-experienced and renowned Ayurvedic Physicians of Northern India

Daily Hams : Come & See the Cured
Visit Personally.

DOGRA AYURVEDIC EYE HOSPITAL
(NETRA RESEARCH WING)

Sr. Nai Hiran Gate, Jalandhar-8 (Pb)
(ESTB. 1936 LAHORE)

Phone : 281549

QUOMANTRY PARDESI

अमरीका की रियासत एरीज़ोना के शहर फ़ीनिक्स में गुरू नानक गुरूद्वारा आश्रम में हज़रत गौहर शाही सिखों को नामदान दे रहे हैं

सान्फ्रानसिस्को में सिक्खों की सोसाइटी ने मोरख़ह 7 अक्तूबर 1999 को हज़रत गौहर शाही को अल्लाह की मुहब्बत, के मौज़ूअ़ पर ख़िताब के लिये मदऊ़ किया और उनके इस रिसाले ने हज़रत गौहर शाही के रूहानी फ़ैज़ और तअ़लीम की बाबत सिक्खों के लिये मज़मून छापा कि अल्लाह को पाने के लिये यह सच्चा और आसान रास्ता है, और इसे अपनाने की कोशिश की जाये।

.... ज़ेरे नज़र रिसाले का अ़क्स ....

December '99

ਦਿਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਰੱਬ ਨੂੰ ਮਿਲਾਉਣ ਵਾਲਾ–ਬਾਬਾ ਗੌਹਰ ਸ਼ਾਹ ਜੀ!

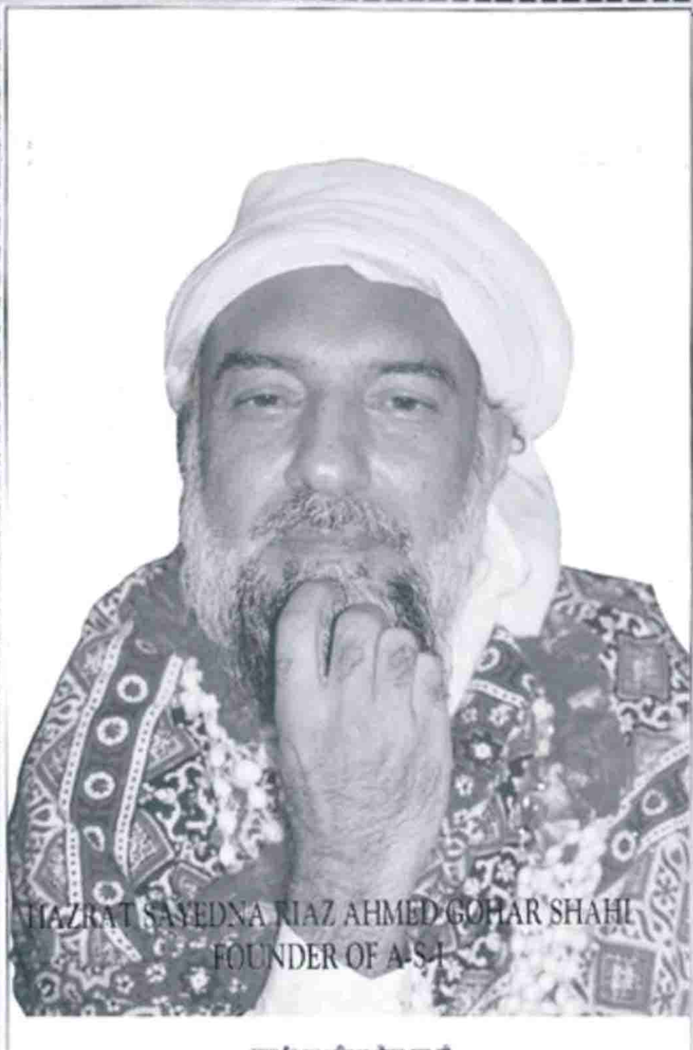

...... कोमंत्री प्रदेशी .....

पंजाबी ज़बान गुरूमुखी के अख़बार में हज़रत गौहर शाही से किये गये इंटरव्यू का एक अ़क्स

हज़रत रियाज़ अहमद गौहर शाही के इस्मज़ात कांफ्रेन्स से ख़िताब की एक झलक

7 अक्तूबर 1996 में मुन्अक़िद होने वाली इस्मज़ात कांफ्रेन्स की एक तस्वीर जिसमें मुख़तलिफ़ मकातिबे फ़िक्र के लोगों ने शिरकत की

न्यूयार्क में ब्रूक्लीन की जामा मस्जिद तुर्क में हम्बली और मालिकी मुस्लिम अफ़राद से हज़रत गौहर शाही ख़िताब फ़रमा रहे हैं

“नोट”

हज़रत गौहर शाही के शायराना कलाम पर मुब्नी मन्ज़ूम तस्नीफ़ “तर्याक़-ए-क़ल्ब” से चन्द ख़ास अशआर मुलाहिज़ा कीजिए। यह कुछ इल्हामी और कुछ इश्क़िया कलाम आपने दौराने रियाज़तो मुजाहिदा तहरीर फ़रमाये।

“तर्याक़े क़ल्ब”

कहाँ तेरी सनाअ् कहाँ यह गुनाहगार बन्दा
कहाँ लाहूत व लामकाँ, कहाँ यह ऐबदार बन्दा
नूर सरापा है तू , मगर यह नुक़्सदार बन्दा
कितनी जुर्अत बन गया तेरे इश्क़ का दावेदार बन्दा
मगर इश्क़ तेरा दिन रात सताये, फिर मैं क्या करूँ
इश्क़ तेरा दश्त व जबल में रूलाये फिर मैं क्या करूँ
पाक है ज़ात तेरी, मगर यह बे अश्नान बन्दा
बादशाह है तू ज़माने का, मगर यह बे निशान बन्दा
मालिक है तू ख़ज़ाने का, मगर यह बे सरोसामान बन्दा
जतलाये फिर भी इश्क़ तुझसे यह अंजान बन्दा

नहीं हूँ सवाली, फ़क़ीरी मेरा धंदा नहीं है
दुनिया वालों ! इश्क़ खुदा है, इश्क़ बन्दा नहीं है
अर्सह से हूँ आवारा मैं कोई अन्धा नहीं है
इश्क़ है यह अबदी, आहू या परिन्दा नहीं है
पड़े हैं टीलों पे, यह बे आब व ग्याही
तअज्जुब है क्या, यही है क़ाइदा-ए-फ़क़्राई
नींद गई लुक़मा भी गया, यही है रज़ा-ए-इलाही
पड़े हैं मस्ती में नज़रें जमाए हुए गौहर शाही

आ गये किधर हम यह तो सख़ी शहबाज़ की चिल्लागाह है
वाह रे ख़ुश नसीबी, यह हमारी भी इबादतगाह है
वह तो कर गये परवाज़, अब हमारी इन्तेज़ारगाह है
इस भटके हुए मुसाफ़िर पर उनकी भी निगाह है
शहबाज़ की महफ़िल में जाकर भी याद तेरी सताए फिर मैं क्या करूँ
इश्क़ तेरा दश्त व जबल में रूलाये फिर मैं क्या करूँ !

हो गये कैदी हम जबलों के एक दिलदार की ख़ातिर
पी रहे हैं ख़ून-ए-जिगर, अन्देखे दरबार की ख़ातिर
सूली पर लटके गये इश्क़ की तार की ख़ातिर
जान भी न निकले एक तेरे दीदार की ख़ातिर

पहन कर चोग़े व कलावे फ़क़ीर बन गये तो क्या
पढ़ कर किताबें तसव्वुफ़ की, पीर बन गये तो क्या
कर के याद हदीस फ़िक़ा मुल्ला बे तक़दीर बन गये तो क्या
अमल न किया कुछ भी फ़िरऔन बे तक़सीर बन गये तो क्या

रख के दाढ़ी ऐब छुपाया तो क्या मज़ा
रगड़ कर माथा, मुल्ला कहलाया तो क्या मज़ा
खा के ज़हर गर पछताया तो क्या मज़ा
लुटा के जवानी ख़ुदा याद आया तो क्या मज़ा

फ़ज़्कुरूनी अज़कुरकुम फिर तुझे और तमन्ना क्या
तब ही पूछेगा ख़ुदा ऐ बन्दे तेरी रज़ा क्या
ऐ बन्दे समझ, क्यों हुआ दुनिया में ज़हूर तेरा !
तू वह अज़ीमतर है, ख़ुदा भी हुआ मज़कूर तेरा
अ़श-अ़श करते करों बयाँ, देखते जब शिकस्ता सदूर तेरा
फ़ख़र होता है अल्लाह को, बनता है जब जिस्म सरापा नूर तेरा
कहते हैं फिर अल्लाह, ऐ मलाइकों मेरे बन्दे की शान देखो
हुआ था जिसपे इन्कार-ए-सिजदा, अब उसका ईमान देखो
जुंबिश पे है जिसका दिल, एक सिरा इधर एक लामकाँ देखो
नाज़ है तुमको भी इबादत का, मगर इबादत क़ल्बे इंसान देखो

बनाया फिर बसेरा पहाड़ों में और तलाशे यार हुए
बहुत ही मग़लूब थे हम, जो आज शिकने हिसार हुए
कर ले जब भी तौबा, वह मंज़ूर होती है
बंदा बशर है, जिससे ग़लती ज़रूर होती है
कहते हैं मूसा, अल्लाह को वही इबादत महबूब होती है
जिसमें गुनाहगारों की गिरयाज़ारी खूब होती है
कुफ़लों वाले करेंगे कैसे यक़ीन हम पर
कि हो चुका है इतना मेहरबान, रब्बुल आलमीन हम पर
खोल चुका है असरार हूरो नाज़नीन हम पर
कि बस रहा है जुस्सा-ए-तौफ़ीक़े इलाही ज़मीन हम पर

यह राज़ छुपाकर करेंगे क्या, अब तो दुनिया फ़ानी है
इन्तेज़ार था जिस क़यामत का, अनक़रीब आनी है
दज्जालो रज्जाल पैदा हो चुके यह भी एक निशानी है
ज़ाहिर होने वाला है मेहदी भी, यही राज़े सुलतानी है

नमाज़ भी पढ़ा दी मौलाना ने, कुरान पढ़ना भी सिखा दिया
कलिमे भी पढ़ाये, हदीसें भी, बहुत कुछ मग़ज़ में बैठा दिया
बता न सका दिल का रास्ता, बाक़ी सब कुछ पढ़ा दिया
यही एक ख़ामी थी, इब्लीस ने सब कुछ जला दिया

पूछा मूसा ने अल्लाह से तुझे कोई पाये तो पाये कहाँ
मैं आता हूँ कोह-ए-तूर पर वह जाये तो जाये कहाँ
गर हो कोई मश्रिक़ में पैदा, तो वह तूर बनाये कहाँ
आई आवाज़ हूँ ज़ाकिर के क़ल्ब में, ज़मीं पे हो या आस्माँ

मिला था क़तरा नूर का करके तरक़्क़ी लहर बन गया
आई तुग़यानी टकराया बह्र से और बह्र बन गया
न रही तमीज़ मन व तन की दिल था दहर बन गया
बस गया इल्म इसपे इतना कि एक शहर बन गया
इस नुक़्तह की तलाश में कितने सिकंदर उमरें गवाँ बैठे
खुश नसीबी में तेरी शक क्या, घर बैठे ही यह राज़ पा बैठे

सूरज चढ़ा तो निकला पेट के जंजाल में
घर आया तो फंसा बीवी के जाल में
सोया तो वह भी बच्चों के ख़्याल में
उमर यूँ ही पहुंच गई सत्तर साल में
हुआ जब काम से निकम्मा, लिया दीन का आसरा
अब कहाँ है ख़रीदार, बैठा जो हुस्न लुटा
बेशक कर नाज़ नख़रे, और ज़ुलफ़ों को सजा
वक़्त था जो तेरा, वह तू बैठा गंवा
करके ज़िक्र चार दिन बन गया ज़नजहानी है
धोका है तेरी अ़क़्ल का, जो हो गई पुरानी है
अब कुछ तवक़्क़ो अल्लाह से, यह तेरी नादानी है
क़ाबिल तू नहीं, गर बख़्श दे उसकी मेहरबानी है
डूबने लगा फ़िरऔ़न वह भी ईमान ले आया था
करके दावा ख़ुदाई वह भी पछताया था
कर ली तौबा आख़िर में, वह वक़्त हाथ न आया था
जिस वक़्त का क़ुदरत ने बन्दे से वादा फ़रमाया था

यह तो वह अ़मल है आ़सियों को भी मुजीब मिल जाते हैं
होते हैं जो बे नसीब, उन्हें भी नसीब मिल जाते हैं
नहीं है फ़र्क़ ख़्वान्दह नाख़्वांदगी का कि ख़तीब मिल जाते हैं
ढूंडती है दुनिया जिनको सितारों में क़रीब मिल जाते हैं
पारस भी इसी में कीमिया भी इसी में
वफ़ा भी, हया भी शिफ़ा भी इसी में
रज़ा भी बक़ा भी लिक़ा भी इसी में
ख़ुदा की क़सम ! ज़ाते ख़ुदा भी इसी में

पड़ा है बुत इधर, लटकी हुई है जान उधर
दे रहे हैं सिजदे इधर, वहम व गुमान उधर
लिखते हैं स्याही से पड़ता है लहू का निशान उधर
बूद बाश इस जंगल में, ज़िंदगी का सामान उधर
टपके आंखों से आंसू दो-चार, बन गये दुर्रे ताबां उधर
फड़का जब दिल कबूतर की तरह, हो गये फ़रिश्ते हैरान उधर
आ गये रश्क में, काश हम भी होते इंसान उधर
यह तो वही ख़स्तह हाल था, जो हो गया सीना तान उधर
कहा बुत को कि चल इस दुनिया से कि बन गया मकान उधर
यह तो एक धोका था, पड़ा है जो बे सरोसामान उधर

न कर शुब्हा, चोर भी अवताद व अख़ियार बन बैठे
आये पारस के हाथों, खुद ही सरकार बन बैठे
मारा नफ़्स को और हक़ के ख़रीदार बन बैठे
हक़ ने लिया गर, सूखे कांटे भी गुलज़ार बन बैठ

इस ज़िंदगी से गये पाया जब सुराग़े ज़िंदगी
पाया फिर वसीला-ए-ज़फ़र, मिटाया जब दाग़े ज़िंदगी
निकले फिर दुनिया के अंधेरे से, जलाया जब चिराग़े ज़िंदगी
धोया आंसुओं से क़ल्ब को बसाया जब बाग़े ज़िंदगी
निकला उस चमन से तायेर लाहूती, और क्या नब्बाज़े ज़िंदगी
हुए जब क़बर व घर यक्साँ और क्या फ़ैयाज़े ज़िंदगी
ज़िंदगी में ही देखा यौमे महशर और क्या बयाज़े ज़िंदगी
पी बैठे ख़ूने जिगर ख़ातिरे मौला और क्या रियाज़े ज़िंदगी

रखा तूने अर्सह तक, इस नेअ़मत से महरूम क्यों ?
नफ़्स हम से शाकी, जब यह नुक़्तह अदबिस्तान से पकड़ा
हो गये पाक सब जुस्से जलके, बुत के सिवा
रूठा बुत जो जलने से, इसको क़ब्रिस्तान से पकड़ा
अब आने लगी आवाज़ हर रग से अल्लाहू की
यह सकून हमने कुछ ज़मीन से कुछ आसमान से पकड़ा
क्या बताऊँ तुझे कि, दिल की ज़िंदगी है क्या ?
डाल कर कमन्द हमने, इसको कहकशाँ से पकड़ा
बन बैठे आज हम भी तालिब-ए-मौला लेकिन
सुलझे थे, जब यह रास्ता एक इंसान से पकड़ा
हिदायत है इंसान को इंसान से ही ऐ कोर चश्म !
वसीला इंसान ने इंसान से, शैतान ने शैतान से पकड़ा

सोचा था एक दिन हमने, यह वजहे तनज़्ज़ुल क्या है?
रहते हैं सरगरदाँ हरदम, यह ज़िंदगी बे मंज़िल क्या है?
कौन सी ख़ामी है वह, रहते हैं परेशान हरदम?
सुधर जाये जिससे दीन व दुनिया वह अ़मल क्या है?
झांका जो गिरेबान को नज़र आईं हज़ारों ख़ामियाँ
रोये बहुत आया जो समझ में मक़सद असल क्या है?
निकले फिर ढूंडने रहनुमा को इस अंधेर में
भटकते रहे बरसों, समझ न थी पीर अक्मल क्या है?

कर बैठा इश्क़ एक बे परवाह से अंजान यह
तड़पता रहेगा भट्टी में बरसों यह ख़ाक़ान-ए-दिल
आ जाये बाज़ ज़िद से, नहीं है मुम्किन ऐ रियाज़
दे चुका है तहरीर समेत गवाहों यह जलालान-ए-दिल

जिस हाल पे रखे तू , उसी पे हैं शादाँ हम
दिखता रहे फ़क़त नाम तेरा, हुए जिसपे कुर्बान हम
रुल के इस मिट्टी में होगा न जुबाँ को शिकवा तेरा
हो गये नाम लेवाओं में तेरे, इसी पे नाज़ाँ हम
न कर शुब्हा ऐ आस्मान इन गेसुओं पर हमारे
तमन्ना नहीं कुछ, उसी के दीदार को गिरयाँ हम
खा न ग़म तू , देख के ख़ूने जिगर को हमारे
यही पियाला है, बैठे हैं देने को जिसे तरसाँ हम
क़सम है तुझे शहबाज़ क़लंदर की ऐ लाल बाग़
गवाह रहना, बैठे हैं अर्से से बे गोर व कफ़ाँ हम
रिस चुका होगा पत्ते-पत्ते में तेरे सोज़े इश्क़
रखना संभाल के अमानत, बनायेंगे कभी गोरे लरज़ाँ हम
समझेगा क्या मेरी दाद व फ़रियाद को यह ज़माना
यह तो एक इज्ज़ था, कर बैठे जिसे अफ़शाँ हम
आता न था दिल को चैन कभी न कभी ऐ रियाज़
यह भी एक मर्ज़ था, बना बैठे क़लम को राज़दाँ हम

पहले तो पकड़ इस जासूस को कहते हैं जिसे नफ़्स
आ न सकेगा गिरिफ़्त में, न कर फ़क़ीरी में उमर तबाह
इधर तो चाहिये इल्म व हिल्म और दिल कुशादह जानी
फिर सब्र व रज़ा और मुर्शिद जो हो राहों से आगाह

न छेड़ क़िस्सा बादे निकहत का वीराने में, ऐ दीवाना-ए-दिल
ढूंड न शहरे ख़मूशाँ में वह शहनाइयाँ, ऐ मस्ताना-ए-दिल
रख न तमन्ना कुछ इन लाशों से सितारों के अलावा
था बेशक ख़ाकी तू , हो गया अब जो अ़र्शियाना-ए-दिल
न रख उम्मीद हमसफ़र से कुछ ऐ महबूबा
था जो कभी शैदाई तेरा, था वह पुराना दिल
न रख तू भी आस कोई ऐ मेरी जन्नत
पाला था आग़ोश में, हो गया वह बेगाना दिल
बना के लहद मेरी रो लेना दो-चार दिन
था जो सपूत तेरा, मिट गया वह फ़साना-ए-दिल
कर देना भरती यतीमख़ाने में भी इनको
मर गया बाप उनका ढूंडते-ढूंडते ख़ज़ाना-ए-दिल

दीन-ए-हुसैन के मुतअ़ल्लिक़

मिला जिससे ईमान कुछ, गिरा वह साक़िबे शहाब था
लरज़ी मिट्टी जिसके ख़ून से वह मुहाफ़िज़ नूरे किताब था
अट गया फिर धूल में उसका मुर्ग़-ए-लाहूती
कर न सका परवाज़ फिर, तिशना दुनिया व मआब था
हो गये फिर पेवस्त उसके बैज़े ख़ाक में
हुआ फिर ताएर भी ख़ाकस्तर, जो शोला आफ़ताब था
समाई उसमें वह बू , आई फिर वह ख़ू
भूला सबक़ वह लाया जो टुकड़ा निसाब था
ढूंड के आसान हीला, मज़हब में तरमीम की
निकले फिर हीले कई, मुल्ला व मुफ़ती बे हिसाब था

न तासीरे गुफ़्तार न ताक़ते रफ़्तार न उरूजे किरदार तेरा
न ख़ौफ़े क़बर, न यादे ख़ुदा, तेरी यह मुसलमानी क्या है ?
पढ़ के काफ़िर एक ही बार लाइलाह इल्लल्लाह हो गया ख़ुल्दी
नहीं असर धड़ाधड़ ला इलाओं से, यह ना तवानी क्या है ?
माल मस्त, हाल मस्त, ज़ाल मस्त बन न सका लाल मस्त
बैठे हो आड़ में दीन की यह सबके बेईमानी क्या है ?
शब बेदार तू परहेज़गार तू न हक़दार तू
समझता है ख़ुद को मोमिन और नादानी क्या है ?

रखा था जिसने भी सब्र, उसका मुक़ाम इंतेहा होता है
कि नहीं है जिनका आसरा कोई उनका ख़ुदा होता है
हुआ गर बर्बाद राहे हक़ में, वक़्ते जवानी
वही है बायज़ीद, जो पुतला-ए-वफ़ा होता है
मारा गर हवस व शहवत को रहके दुनिया में
वही ताल-ए-क़िस्मत जो एक दिन बाख़ुदा होता है
की गिर्याज़ारी गुनहगार ने किसी वक़्ते पशेमानी
कभी न कभी वह काबे में सिजदा गिराँ होता है

हम इश्क़ में बर्बाद, वह बर्बाद हमारे जाने के बाद
हुई इश्क़ को तसल्ली कितनी जानें रूलाने के बाद
आये याद बच्चे, आया सब्र फिर आंसू बहाने के बाद
न रही ताक़ते गुफ़्तार अब यह दुखड़ा सुनाने के बाद

कहा इक़बाल ने दर्द-ए-दिल के वास्ते आया आदमी
समझे थे हम शायद इक़बाल से कुछ भूल हुई
घूमते रहे हम भी कुछ अर्सा तक इन गिरदाबों में
हुआ जब दिल को दर्द फिर ज़िंदगी कुछ हुसूल हुई
यह हीला-ए-नफ़्स था, बुत में भी हमारे
समझा नफ़्स को, दिलको ताज़गी कुबूल हुई
आ गये थे अव्वल रूजअ़त में पाकर यह सबक़
समझाया जो हक़ बाहू ने, कुछ अक़्ल दख़ूल हुई
न ख़िदमत से न ही सख़ावत से हुआ कोई तग़ैयुर
हुआ जब ज़िक्रे क़ल्ब जारी कुछ रोशनी हलूल हुई

शब्दार्थ

शबीह = अक्स, तस्वीर, प्रतिबिंब, छायाकृति। **इदारों** = संगठनों, जमाअतों। **मोअ्तबर** = क़ाबिले भरोसा, विश्वस्नीय। **रिलीज शुदा** = छपा हुआ, प्रकाशित। **मुन्किरान** = इन्कार करने वाले। **मुसन्निफ़** = लेखक। **पोशीदह** = छुपा हुआ। **जाकिरीन** = अनुयाई, ज़िक्र करने वाले। **तालिब** = तलबगार, ढूंडने वाला। **मुरत्तब करदह** = समाहर्ता, तरतीब देने वाले। **नाशिर** = फेलाने वाला, बिखेरने वाला। **चिल्लाकशी** = खुदा को पाने की ख़ातिर सख़्त तरीन मुजाहिदह, मशक़्क़त, भूके प्यासे रहकर अपनी इच्छाओं को अपने बस में रखना। **रागिब** = दिल का माएल करना, झुकाना, प्रवृत्त। **ताएब** = तोबह करना। **कोर चश्म** = बातिनी इल्म, रूहानियत से ख़ाली, स्याह क़ल्ब, जाहिल। **हसद व बुग़्ज़** = ईर्ष्या, जलन, द्वेष। **फतवा** = धर्माज्ञा। **अंदरूने मुल्क** = अपने ही देश में। **कायेम** = स्थापित। **नाजायेज अस्लेहा** = अवैध शस्त्र। **हबसे बेजा** = अकारण बंधक। **जर्द सहाफत** = अनैतिक पत्रकारिता। **खुसूसी नोट** = विशेष सूचना। **मन्तकी** = तार्किक, मनगढ़न्त। **नबूवत** = नबी होना, अवतारत्व। **साबिकह** = भूतपूर्व, गुज़रे हुए। **इंस्दादे दहशत गर्दी** = दहशत गर्दी, आतंकवाद को समाप्त करने वाला। **पेश लफ्ज** = भूमिका, संदर्भ। ***Page 7:* दीबाचह** = चनु हुए वाक्य। **गिर्द** = चारों तरफ़। **बालातर** = बढ़कर, उच्चतर, श्रेष्ठ। **अर्क** = निचोड़। **मशअले राह** = मार्गज्योति, अंधेरादूर करने वाला। **जरिअह** = माध्यम, वसीलह। **आम हुआ** = सर्व साधारण, जन प्रचलित हुआ। **कुर्ब** = संनिकटता, समीपता, क़रीबी। **नजिस** = नापाक, अपवित्र। **हूरोकसूर** = हूर, स्वर्गांगनायें, अपसरायें और राजमहल। **सिराते मुस्तकीम** = सत्य मार्ग। **गामजन होकर** = चलकर, आगे बढ़कर। **विसाल** = मिलन, संयोग। ***Page 8:* अजल** = आत्मा के प्रकट/उत्पन्न का पहला दिन। **अबद** = अंतिमतम्, जहाँ आख़िरी का अंत हो जाये। **कुन** = हो जा। **सफ** = पंक्ति, लाइन, क़तार। **हद्दे निगाह** = देखने की अंतिम सीमा। **हैवानी** = जानवरों, पशुओं वाली। **नबाती** = पेड़ पौधों, वृक्षों वाली। **जमादी** = पत्थरों वाली। **नमूदार** = हाज़िर, प्रकट। **नूरी मुवक्किलात** = अल्लाह के बनाये हुए नूरी मददगार मख़लूक़। **नबाती** = पं

किताब की रोशनास के लिये चन्द इक़्तेबास

1- अगर आप किसी मज़हब में हैं लेकिन अल्लाह की मुहब्बत से महरूम हैं, इनसे वह बेहतर हैं जो किसी मज़हब में नहीं लेकिन अल्लाह की मुहब्बत रखते हैं।

2- मुहब्बत का तअ़ल्लुक़ दिल से है, जब दिल की धड़कन के साथ अल्लाह अल्लाह मिलाया जाता है, तो वह ख़ून के ज़रिये नस नस में पहुंच कर रूहों को जगाता है। फिर रूहें अल्लाह के नाम से सरशार हो कर अल्लाह की मुहब्बत में चली जाती हैं।

3- रब्ब का कोई भी नाम ख़्वाह किसी भी ज़बान में हो क़ाबिले तअ़ज़ीम है लेकिन रब का अस्ली नाम सुरयानी ज़बान में अल्लाह है जो कि अ़र्शियों की ज़बान है, इसी नाम से फ़रिश्ते उसे पुकारते हैं और हर नबी के कलिमे के साथ मुन्सलिक है।

4- जो भी शख़्स सच्चे दिल से रब की तलाश में बरूरोबर में है वह भी क़ाबिले तअ़ज़ीम है।

5- इस दुनिया में एक ही वक़्त में अ़लैहिदा अ़लैहिदा ख़ित्तों में कई आदम आये। तमाम आदम दुनिया में दुनिया की ही मिटटी से बनाये गये, जबकि आख़िरी आदम जो अरब में दफ़न हैं बहिश्त की मिट्टी से वाहिद बनाये गये, इनके सिवा किसी और आदम को फ़रिश्तों ने सिजदा नहीं किया। इब्लीस इसी आदम की औलाद का दुशमन हुआ।

6- इंसान के जिस्म में सात क़िस्म की मख़लूक़ें हैं, जिनका तअ़ल्लुक़ अ़लैहिदा अ़लैहिदा आसमानों, अ़लैहिदा अ़लैहिदा बहिश्तों और इंसान के जिस्म में अ़लैहिदा अ़लैहिदा कामों से है। अगर इनको नूर की ताक़त पहुंचाई जाये तो यह उस इंसान की सूरत में एक ही वक़्त में कई जगह हत्ताकि वलियों, नबियों की मजलिस और रब्ब से हमकलाम या दीदार तक पहुंच सकती हैं।

7- हर इंसान के दो मज़हब होते हैं, एक जिस्म का मज़हब जो मरने के बाद ख़त्म हो जाता है, दूसरा अरवाह का मज़हब जो कि रोज़े अज़ल में था यअ़नी अल्लाह से मुहब्बत, इसी के ज़रिये इंसान का मरतबा बुलन्द होता है।

8- सब मज़ाहिब से बालातर रब का इश्क़ है, और सब इबादात से बालातर रब का दीदार है।

9- इंसान, हैवानों, दरख़्तों और पत्थरों के मुतअ़ल्लिक़ मअ़लूमात, कि यह किस तरह वजूद में आये और क्यों कोई हराम और कोई हलाल हुआ।

10- अरवाह और फ़रिश्तों के अमरे कुन से भी पहले कौन से मख़लूक़ थी? वह कौन सा कुत्ता था जो हज़रत क़तमीर बनकर जन्नत में जायेगा? और वह कौन से लोग हैं जिनकी रूहों ने अज़ल में ही कलिमा पढ़ लिया था?

वह कौन से बंदे का राज़ है जो इस किताब में दर्ज नहीं है?

मअ़लूमात और तहक़ीक़ात के लिये इस किताब को ज़रूर पढ़ें।

For Internet version, please visit us on: http//www.goharshahi.com